RNI No. UPHIN/2011/40224
वर्ष : 16 अंक : 2

पंजीकृत सं.: एस.एस.पी./एल.डब्लू./एन.पी-341/2024-2026

हिन्दी मासिक पत्रिका
अगस्त - 2026
मूल्यः 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

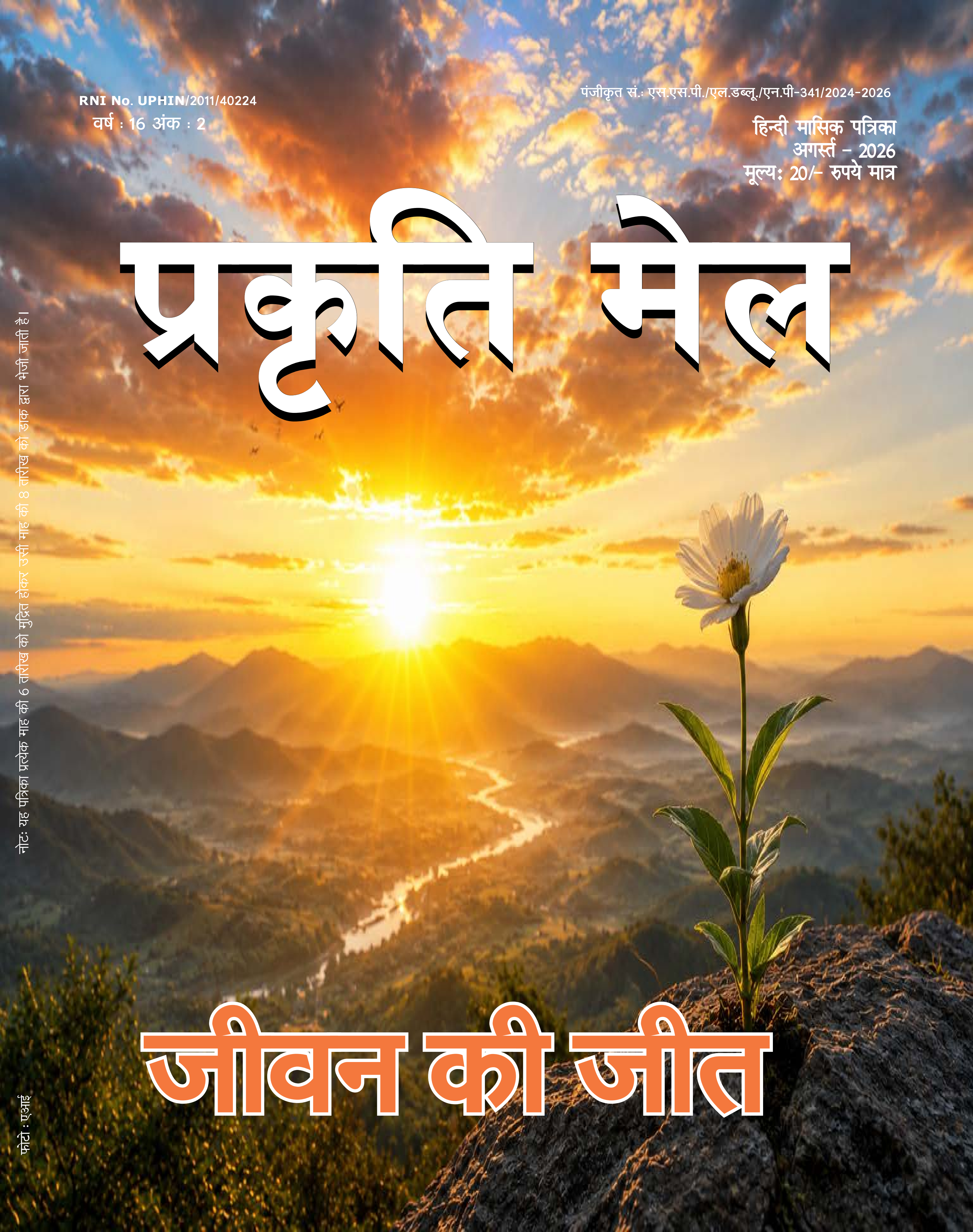

जीवन की जीत

नोटः यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजी जाती है।

फोटो : एआई

मौसम
प्रकृति में समन्वय
सत्य का स्रोत
परिवर्तन
प्रकृति आश्रम
प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य
एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली
'अशोक मानव'
9415041794, 9807636072
ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल
बिल्डिंग मैटेरियल
सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)
बिक्रेता • बालू • मौरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी
मछली शहर, जौनपुर
मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्षः16, अंक : 2 | अगस्त - 2026

संरक्षक
डॉ. उत्तम प्रकाश मानव
संपादक
अशोक मानव
कार्यकारी संपादक
उमेश
विधि सलाहकार
नवनीत कुमार वर्मा
मुख्य संवाददाता
आशीष त्रिपाठी
वरिष्ठ संवाददाता
अरविन्द त्रिपाठी
दिल्ली संवाददाता
मनोज
पुर्वांचल हेड
श्री प्रकाश मिश्रा
संवाददाता
सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील,
गौरव पंत, अभिषेक पंत,
हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी,
सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी,
अभय सिंह
ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि
संजय यादव
कैमरा मैन
धर्मेन्द्र त्रिपाठी

प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता
संपर्क 8423330911, 9598911575
पंजीकरण कार्यालय
सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022
प्रधान कार्यालय
18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग, फैजाबाद रोड,
लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।
नोटः इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।
संपादक – अशोक मानव

www.prakritimail.com
info@prakritimail.com
editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 32 प्रकृति विज्ञान
जीवन की जीत

P 8 मानव का आदर्शवादी जीवन
P 10 प्राकृतिक न्याय स्व नियंत्रित है
P 11 अशोक सिद्धांत (भाग - एक)
P 15 स्व मृदा ही स्वयं के रसायन का फल है
P 22 सारनाथ बुद्ध की प्रथम उपदेश स्थली से विश्व धरोहर तक
P 24 जब मूर्तियाँ बोलती हैं
P 35 स्वतंत्रता के मूल्य
P 40 हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कृत्रिम मेधा की उपयोगिता
P 46 बड़े वृक्ष के नीचे
P 48 मनुष्य की सबसे बड़ी लड़ाई स्वयं से

अशोक मानव

संपादक की कलम से

स्वयोग

स् -स्वतंत्र, व-वजूद, यो-योग्य, ग-गणित,

स्व वजूद की यात्रा ओज में स्वगंध का निर्माण होता है जिसे 'स्वयोग' कहते हैं।

अर्थात स्वतंत्र वजूद की योग्य गणित। ''जब जीव वाह्य जगत का कोई बंधन नहीं स्वीकारता और आंतरिक जगत में कोई चाहत नहीं होती तब स्वतंत्र वजूद का निर्माण होता है।'' जब जीव स्वतंत्र होता है तब परिस्थितियां मार्ग बन कर आती हैं जिससे जीव मात्रा और ताप का निर्धारण स्वतः कर लेता है जिसके मिलान से जीव का रसायन कर्म रूपी प्राकृतिक विज्ञान का निर्माण करना है। जब इसका निर्माण हो रहा होता है तो जीव के अंदर तापदाब की अवस्था बनती है जिसका एहसास जीव करता है जो निर्माण हो रहा होता है वही ज्ञान है। जिसे एहसास किया जा सकता है व्यक्त नहीं, इसी अवस्था से विज्ञान का निमार्ण होता है इस सूक्ष्म विज्ञान से ब्रह्माण का निर्माण होता है इसी से जीव आनन्द का एहसास करते हुए अपना कर्म पूरा कर पाता है। इसी को पूरा करने के लिए जीव गंध रसायन संग्रह ईधन के रूप में लेकर आता है जो स्वयोग विधान से गंध रसायन विज्ञान का निर्माण करता है। जो सूक्ष्म रूप से अपने विधा का वायुमण्डल में स्थापित होकर विस्तार करता है। जीव का वास्तविक जीवन इसी सूक्ष्म अवस्था में अनन्ती रहता है।

जीव इस प्रकार अपने रसायन से अनेकों सूक्ष्म विज्ञान का निर्माण करता है निर्माण के समय जो एहसास करता है वही एहसास गंध रसायन कण हर पल अनन्त तक करता है। जीव का जीव अपने द्वारा पैदा किये हुए अनेको वैज्ञानिक कण में विद्यमान होता जाता है और जिस एहसास से उसका निर्माण होता है उसी का एहसास कण विज्ञान में हर पल करता है। वह कण उस एहसास से अपना विस्तार ब्रह्माण्ड में करता है जीव का वास्तविक जीवन वहां होता है जो अनन्ती होता है जो कभी नहीं मरता है पर यह तब होता है जब जीव प्राकृतिक रूप से स्वयोग में अपना कर्म पूरा करता है तभी उसका निर्माण परिपक्व निर्माण होता है जो गंध रसायन विज्ञान बीज कण रूप में विचरण करते अपना विस्तार अनन्त के लिए करने लगता है। परिपक्व निर्माण होने के कारण अपने स्तूप की रक्षा स्वयं करता है। यही जीवन की वास्तविक परिभाषा है जिसे मानव के अतिरिक्त अन्य सभी जीव जी रहे हैं। मानव को यहां पर ठहरकर सोचने की जरूरत है हम जिसका निर्माण कर रहे है वही हमारा जीवन सदैव के लिए है उसी पर हमारा अधिकार है और इसका निर्माण आंतरिक जगत में होता है बाह्य जगत में मानव जिसे अपना तिकड़म लगाकर बना रहा है वह प्रकृति की सम्पदा है उस पर मानव का कोई अधिकार नहीं है यह बंटवारा तो मानव की मानसिक उपज है प्राकृतिक नहीं। यह तो मानव अपनी क्षमता का दुरुपयोग कर रहा है जिसमें सिर्फ प्राकृतिक शोषण हो रहा है। यह मानव की भूल है कि हम प्रकृति का दोहन कर उसका सद्उपयोग कर रहे पर वास्तव में मानव प्रकृति का शोषण क रहा और स्वयोग से अपना स्वयं का कर्म नहीं पूरा कर रहा है और अन्य जीवों को भी उसका कर्म नहीं पूरा करने दे रहा है। अच्छा यही होगा कि हम मानव जाति बाह्य जगत की बनायी गयी मानवीय व्यवस्था जब स्वतः से नहीं ठीक हो रही है तब तक उसका बाह्य रूप से सम्मान करते हुए आंतरिक जगत में स्वयोग से अपने वास्तविक जीवन का निर्माण करना शुरू कर दे।

मानव बाह्य जगत की अवस्था को अपने अनुकूल बनाने के लिए कुछ नाटक करता है जिसे देखकर कुछ लोग वास्तविक जीवन में भावुक होकर उस दर्द का एहसास करने लगते है जिससे उस गुण की गंध का रसायन बन जाता है जो सूक्ष्म विज्ञान बनकर अपने विद्या का विस्तार करने लगता है जिससे इसका निर्माण होता है वह जीव ही उस वैज्ञानिक कण में रहकर हमेशा हर पल उस दर्द का एहसास करता है। आप की हर अवस्था एक नया निर्माण कर जाती है और जिसका निर्माण हो जाता है उसमें वही जीव उसका एहसास करता है जिसमें उसका निर्माण होता है पर जिस प्रकार कमजोर बीज में कीड़ा लग जाता है और वह खराब हो जाता है उसी प्रकार जब हम स्वयोग से अपना निर्माण नहीं करते है तब वह परिपक्व नहीं हो पाता है जिसके कारण अपने स्तूप की रक्षा स्वयं नहीं कर पाता है और जल्द ही उसका अस्तित्व मिट जाता है। मानव उस विधा से प्रेम करने लगा है जो कुछ समय के लिए स्थायी निर्माण करने आता है। जिसके छूटने में वेदना से दर्द के विज्ञान का निर्माण हो जाता है इससे बचने के लिए मानव को अपने वास्तविक जीवन से प्रेम करना चाहिए जो कभी नहीं मरता है जिसका निर्माण स्वयोग से होता है। ●●●

पाठकनामा

आदरणीय
संपादक महोदय
प्रकृति मेल पत्रिका
सादर नमन

प्रकृति मेल पत्रिका का प्रत्येक अंक ज्ञान – विज्ञान से परिपूर्ण होता है। इसमें प्रकृति, पर्यावरण, धर्म, शिक्षा, तकनीकी, प्रौद्योगिकी, मनोविज्ञान, संस्कृति, राष्ट्र चिन्तन, आरोग्य, परिवार आदि जीवनोपयोगी संतुलित सामग्री समाहित होती है। पत्रिका गुरुवर संपादक अशोक मानव की सतत साधना का पुण्य प्रसाद है, जो पाठकों को नवीन ज्ञान – दिशा देता है। गुरुवर प्रबुद्ध संपादकीय, सूत्र वाक्य एवं जिज्ञासा स्तंभों के माध्यम से पाठकों को श्रम – साधना का प्रतिफल सहज रूप में प्रदान करते हैं। एतदर्थ उनके पावन चरणों में विनत प्रणाम निवेदित है। जुलाई अंक में ध्यान, मानव की खोज, अशेष विज्ञान, स्वाभाविक यात्रा, मूर्तिकला, डॉ मौमिता दत्ता, डॉ मुखर्जी, घर की रौनक, हमारी ऊर्जा, धर्म का मूल स्वरूप, आक्सीजन, योग आदि आलेख मानव – जीवन को सार्थक एवं समृद्ध बनाते हैं।कामेश, देवेन्द्र सिंह, ज्योति, अवनीश कुमार गुप्ता 'निर्द्वंद', केशव शरण सदृश प्रख्यात रचनाकारों की धीर – गंभीर कविताएँ भावपूर्ण मनोरंजन के साथ प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देती हैं। स्तरीय तथा नवोन्मेषी विषय– वस्तु चयन हेतु कर्मनिष्ठ संपादन समूह को भूरिशः साधुवाद। पत्रिका का प्रत्येक अंक अमूल्य प्रदेय रूप में पठनीय, मननीय एवं संग्रहणीय है। सादर

मिल जाता प्रति माह पत्रिका 'प्रकृति मेल' उपहार।
ज्ञान, संस्कृति, परम्परा के सतत खुलें नवद्वार।
गुरुवर प्रवर अशोक मानव ने कल्पवृक्ष रोपे हैं,
सुधी पाठकों को देते हैं शिव आशीष अपार।

–गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ

नीचे दिए हुए इमेल पर आप पाठकनामा भेज सकते हैं।

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–

A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ-226016

आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं -
email: editor.prakritimail@gmail.com, Contact: 9807636072, 7376495194

“

युवा पीढ़ी को अपने भविष्य के सारे रास्ते बंद नजर आ रहे हैं और इसीलिए छात्र सड़को पर हैं।

राहुल गाँधी

“

सच्ची बताऊं, ई बड़का मेडल है, रात भर नींद नहीं आई, करवटें बदलते रहे हैं, रूम में कोई था भी नहीं।

झंडू कुमार

“

जब आप एक कदम आगे बढ़ते हो तो सबको प्रूव करना पड़ता है। मां-बाप को भी और इंडस्ट्री को भी।

राघव जुयाल

“

किसी समाज का नैतिक पतन बड़े घोटलों से शुरू नहीं होता। वह तब शुरू होता है, जब छोटी छोटी बेईमानियां सामान्य लगने लगती हैं।

सोनम लववंशी

“

ये खुशी के आंशु थे, मैं खुद को रोक नहीं पाई। मैंने इस मेडल के लिए बहुत मेहनत की है।

मीराबाई चानू

“

आज युवाओं को आदेश की नहीं, चेतना व बातचीत की जरूरत है।

मोहन भागवत

मेरा मन
मेरी मर्जी
बढिया शॉट
क्या देश है
ऐसे जवानो
का ?

मानव का आदर्शवादी जीवन

कामेश

फोटो : एआई

ये मानव समाज की एक परम्परा है कि लोग सभ्यता की शिक्षा हमें बचपन से ही देना शुरू कर देते है, और महत्वपूर्ण बात तो ये है कि वे लोग हमें सभ्य बनाना चाहते है जो खुद सभ्यता की खोज में लगे हैं। खास कर कुछ ऐसे विचारक थे ऐसे दार्शनिक जो कि जीवन भर कुछ सिद्धान्तों पर गहन चिन्तन ओर मनन करते हैं ये सिर्फ अपना जीवन इस विषय पर ही व्यर्थ गवा चुके कि किस तरह से दूसरे विचारक और दार्शनिक के सिद्धान्त को झूठा साबित किया जाए ओर अपने सिद्धान्त को श्रेष्ठ बताया जाय।

मानव जीवन एक सहज जीवन के रूप में इस सृष्टि पर विकास करना शुरू किया परन्तु, धीरे-धीरे यह अपनी आकांक्षाओं और कल्पनाओं में इस कदर डूबता गया कि इसे अपना सहज जीवन तुक्ष लगने लगा और यह अपनी श्रेष्ठता बढ़ाने हेतु खुद से ही विभिन्न उपाय करने में लग गया। यह उसके निजी जीवन को उन चीजों को हासिल करने में कठिन से कठिन कार्य करने में लगाता चला गया। और जितना ही कठिनता की तरफ बढ़ता गया वास्तविकता से उतना ही दूर चला गया। इसे सबसे शांत जीवन मिला था परन्तु अपनी महत्वाकांक्षा के कारण ही अशांति की तरफ बढ़ता चला गया। और स्थिति यह हो गई कि आज का मानव सिर्फ शान्ती की खोज में लग गया है। यह भी भूल गया कि शान्ती कहीं बाहर नहीं बल्कि हमारे भीतर ही है। वह कभी पहाड़ों पर शान्ती खोजता है तो कभी समुद्र के किनारे और जितनी ही शान्ती की खोज में इधर-उधर भटक रहा है उतना ही और अशांत होता जा रहा है। जहां इसे एक स्थान पर स्थिर होना था वहीं यह दूसरे स्थान पर भाग कर शान्ती चाहने लगा और जहां भी जाता है बाहर की दुनियाँ में ही भटकता है और बाहर की दुनियाँ की स्थितियां देख कर और अशांत हो जा रहा है। जहां इसे अपने अन्दर की शान्ति की दुनियाँ में उतरने की जरूरत थी वहीं यह बाहर की दुनियाँ में बढ़ता जा रहा है और चाहत रखता है शान्ती की। इसकी आज जो भी स्थिती है वास्तव में सहज जीवन न जीने के कारण ही है। ये शांति की चाहत नही है। यही इसका मूल स्वभाव है। जो कि अन्दर से इसे अपनी तरफ खीच रहा है परन्तु यह अपने अन्दर डूबने की जगह दूसरी चीजों में बाहर की दुनिया में भटक रहा है। शान्त रहना तो इसकी मूल प्रवृत्ति है परन्तु यह अपनी मूल प्रवृत्ति को भुला बैठा है और यह कोई नई बात नहीं है बल्कि सदियों से चली आ रही परम्परा सोच का एक बीभत्स परिणाम है। पीढ़ी-दर पीढ़ी यह मानव के मनोमष्तिस्क पर थोपी गई रीति रिवाज और सभ्यता का परिणाम है। क्योंकि मानव खुद को और अच्छा बनाने के लिए एक सभ्य मानव बनाने के लिए ऐसे-ऐसे नियम कानून लगाने लगा कि यह इन्ही सभ्यताओं के नियमों के पालन में ही वह नियम भी भूल गया जो कि इसके जीवन का मूल था।

ये मानव समाज की एक परम्परा है कि लोग सभ्यता की शिक्षा हमें बचपन से ही देना शुरू कर देते है, और महत्वपूर्ण बात तो ये है कि वे लोग हमें सभ्य बनाना चाहते है जो खुद सभ्यता की खोज में लगे हैं। खास कर कुछ ऐसे विचारक थे ऐसे दार्शनिक जो कि जीवन

भर कुछ सिद्धान्तों पर गहन चिन्तन ओर मनन करते हैं ये सिर्फ अपना जीवन इस विषय पर ही व्यर्थ गवा चुके कि किस तरह से दूसरे विचारक और दार्शनिक के सिद्धान्त को झुठा साबित किया जाए ओर अपने सिद्धान्त को श्रेष्ठ बताया जाय। अर्थात् जिनका सिद्धांत ही है कि समाज सिर्फ मेरे अनुसार मेरे सिद्धान्तों पर चले मेरे बनाए नियम कानून का पालन करें और खुद उन्हीं सिद्धान्तों को बनाने में वह सभ्यता औह शान्ती से दूर होता चला गया और समाज को भी भटकने का एक नया मार्ग देता गया। और मानव समाज था ऐसा कि इन्हीं विचारकों के सिद्धान्तों को आदर्श मानते हुए लग लिया इनके पीछे चल पड़ता है उनके बताए मार्गों पर। और फिर सभ्य समाज की स्थापना की यात्रा, फिर जीवन की शान्ती की खोज। हम सभी इस बात से परिचित हैं कि आज तक हमारे बीच अनगिनत विचारक और दार्शनिक पैदा हुए अपने सिद्धान्त हमें बतलाए और हम उनके सिद्धान्तों का पालन भी किये। यहां तक कि हम उनके सिद्धान्तों के अनुसार ही इस समाज को चलाने और खुद चलने का निर्णय लिए और उनके सिद्धान्त आदर्शवादी थे, सभ्यता की मिशाल थे फिर भी आज समाज किस आदर्शवाद में जी रहा है हमारी आंखों के आगे हैं, समाज का आदर्शवादी स्वरूप हमारे सामने है। इतने सभ्यता वादी सिद्धान्तों का पालन करने के बाद भी आज मानव समाज राक्षसी प्रवृत्ति का जीवन जीने लगा है। हमे हमेशा अहिंसा सत्य, धर्म, ईश्वर आदि की शिक्षाए दी जाती रही हमेशा हमें जीवन को शांत खुशहाल और आदर्शवादी बनाने के नियम कायदा सिखाए जाते रहे। परन्तु फिर भी आज दुनिया के 90 प्रतिशत लोग मांस भक्षण से ही अपना पेट भरते हैं। आज समाज में जो स्थिति देखने को मिल रही है लगता है जैसे पूरा मानव समाज मानव जीवन नहीं बल्कि राक्षसी जीवन जी रहा है। हर तरफ हवस भोग विलास का बोल बाला है। हर तरफ जैसे कोहराम मचा है मारो काटो खाओं। जैसे लगता ही नहीं कि जिन सिद्धान्तों पर हम चल रहे है। वो हमें आदर्श सिखाने हेतु बनाए गए थे लगता है वो सारे सिद्धान्त शब्दों में तो आदर्श और सभ्यता की मिशाल थे परन्तु उनका मार्ग सभ्यता की तरफ नहीं बल्कि राक्षसत्व की ओर जा रहा था। लगता है जैसे हमें आदर्श और सभ्यता के नाम पर भटका दिया गया। और हमें वास्तविक मानव जीवन जीने से रोक दिया गया और हमें और अच्छा बनने का लालच दे कर राक्षसी जीवन की तरफ मोड़ दिया गया। और हम आदर्श बाद के मार्ग पर चलने के

हम ईश्वरवाद में डूबने जा रहे मन्दिरों में, हम जंगलों को काटकर घर बनाने में लगे है कि यहां शान्ती रहेगी। हम समुद्र के बीच घर बना रहे कभी साधना के लिए पहाड़ों पर जा बैठे हैं, तो कभी जंगलों में ध्यान कर रहे। सिर्फ शान्ती की खोज में हम इतने मन्दिर मस्जिद गुरूद्वारे चर्च क्या-क्या नहीं बना डाले परन्तु परिणाम वही कि शान्ती नहीं है।

लिए अपने वास्तविक जीवन को भूलकर मार्ग भटक गए इस तरफ की बजाए उस तरफ चल दिये जिधर हमारा मार्ग ही नहीं था और परिणाम स्वरूप एक बीभत्स मानव समाज की स्थापना होती चली गई। और हमारा जो मूल लक्ष्य था मूल प्रवृत्ति थी जो थी जो हमारा वास्तविक जीवन था हम उससे भटक गए।

हमारे वाह्य जीवन में भटकाव तो हो गया परन्तु हमारी जो आन्तरिक दुनियां है वो हमसे दूर नहीं हुई वो आज भी हमारे भीतर वही खूबसूरती लिए हमारे लौटने का इंतजार कर रही है और यही वजह है कि हमारे भीतर से शान्ती की गूंज चाहत अनवरत उठती रहती है। हमारे भीतर आराम की चाहत आज भी मौजूद है। हमारे भीतर कुछ तो ऐसा है जो हमें खींच रहा अपनी तरफ मगर हम अपने मार्ग वाह्य जगत में खोजने निकल पड़े हैं। हम कभी ध्यान में डूबने की बात करते है तो कभी भक्ती रस में गोते लगाने की,कभी योग में शान्ती खोजते है तो कभी ईश्वर में खोजने की सोचते हैं। हमारी खोज आज भी शान्ती की है। परन्तु बाहर की दुनियां में और सबसे मजे की बात तो ये है कि हम सांसारिक संसाधनों में जीवन का आदर्श और मनस शान्ती की खोज भी करने में लगे है। हम ईश्वरवाद में डूबने जा रहे मन्दिरों में, हम जंगलों को काटकर घर बनाने में लगे है कि यहां शान्ती रहेगी। हम समुद्र के बीच घर बना रहे कभी साधना के लिए पहाड़ों पर जा बैठे हैं, तो कभी जंगलों में ध्यान कर रहे। सिर्फ शान्ती की खोज में हम इतने मन्दिर मस्जिद गुरूद्वारे चर्च क्या-क्या नहीं बना डाले परन्तु परिणाम वही कि शान्ती नहीं है। फिर खोज जारी है। खोज में कोई परिवर्तन नहीं और सिद्धान्त वही अब भी है कि कोई परम भक्त मार्ग सिखा गया। उसके रास्ते चलना है। कोई दार्शनिक मार्ग दिया गया उसके रास्ते जाना है। कोई भोग सिखा गया कोई ध्यान सिखा गया कोई भजन कीर्तन करना शिखा दिया। बस लगे पड़े है कि इस मार्ग से ईश्वर मिलेगा कि इस मार्ग से शान्ती मिलेगी औरा इस तरह भटक रहा है मानव समाज और फिर भी खुद की आदर्शवादी और सभ्य प्राणाी के अंहकार में देख रहा है। मानव अपने आपको सबसे बुद्धिमान प्राणी मानता है। और खुद अपनी वास्तविकता खो बैठा है। अन्य जीव तो कम से कम अपनी मूल प्रवृत्ति पर जीवन जीते है और जीवन का वास्तविक आनन्द लेते है। ना खाने की चिन्ता ना जीने की फिकर ना कल की खोज न आज का दुःख कुछ भी नहीं जो अच्छा लगा खाए शांत सो गए। पर मानव कल के लिए खोज कर रहा है कि आज खा के सो जाएंगे तो कल क्या करेंगे बस खोज भी कल की जब की इसे ये भी नहीं पता कि कल रहूंगा या नहीं।

फोटो : एआई

प्राकृतिक न्याय स्व नियंत्रित है

गौरव पंत

स्व प्रवृत्ति ही प्रकृति हर जीव की स्व प्रवृत्ति ही उसकी प्रकृति होती है। उसे बदला नहीं जा सकता मानव ही प्रकृति का ऐसा जीव है जो अपनी प्रवृत्ति को बदलने में लगा हुआ। हर पल हर क्षण हर तरह के प्रयास में तरह-तरह के प्रयोग करता रहता है। मानव को ही अपनी प्रवृत्ति पर हमेशा संदेह रहता है। अपने को सदैव दूसरे से आकलन करना ही इस जीव की सबसे बड़ी अज्ञानता है। हमारी जो प्रवृत्ति है वही सर्वश्रेष्ठ है उसमें किसी भी प्रकार का कोई भी मिलान हमेशा सिर्फ अधूरा करता है। ना प्रवृत्ति को बदला जा सकता है ना किसी प्रकार का हस्तक्षेप किया जा सकता है सिर्फ स्व अवस्था को विचलित किया जा सकता है। हमारी स्वयात्रा सिर्फ स्व प्रवृत्ति से ही पूरी हो सकती है। प्रकृति के अन्य जीव स्व प्रवृत्ति का ही जीवन जी रहे हैं और प्रकृति का आनंद ले रहे हैं। अपने को सर्वश्रेष्ठ कहने वाला जीव मानव ही आज इतनी कुंठा का जीवन जी रहा है कि अपनी स्व प्रवृत्ति को त्याग चुका है। हर वक्त पर सिर्फ इस जीव ने अपने ज्ञान की ऐसी बेड़ियां बनाई जिसमें खुद ही बंधा हुआ है और इतनी लाचारी का जीवन जी रहा है। हर कोई एक दूसरे से ऐसा बंधा है की कोई चाह कर भी उससे बाहर नहीं निकल पा रहा। बनाई गई परिभाषा जब स्वयं मानव की है तो परिभाषा का परिणाम भी मानव ही होगा। इसीलिए प्रकृति का सबसे उलझा हुआ जीव आज मानव साबित हो रहा है। जिस विज्ञान का जनक मानव खुद को बताता है और वह हर पल इसे नजर आ रहा है। फिर भी खुद के बनाए गए स्व विज्ञान को बदलने का प्रयासरत जीव सिर्फ मानव ही है।

प्रकृति में बनाए गए विज्ञान को बदला नहीं जा सकता उसे सिर्फ एहसास किया जा सकता है।

हर जीव की प्रवृत्ति ही प्रकृति है।
ना उसे बदला जा सकता।
बदलने की कोशिश करना ही मानव की अज्ञानता है।
जिसे जो करना होता है वही करता है।
ज्ञान तो वह पर्दा है जो सिर्फ अधूरा करता है
हर कोई सही गलत की परिभाषा में उलझा है।
ना कुछ सही ना कुछ गलत प्रकृति में होता है।
जिस गुण का जो होता है उसी का विस्तार करता है।
किसी का आईना कभी किसी को नजर आया ही नहीं, भ्रम में पड़ा जीव मानव कभी वास्तविकता को माना ही नहीं।
रास्ते रसायन से बनते हैं,जो बनाये नहीं जाते, स्वतः बन जाते हैं और मिलाये नहीं जाते स्वतः मिल जाते है।
स्व प्रवृत्ति ही प्रकृति है।

अशोक सिद्धांत (भाग - एक)

अभिषेक पंत

प्रकृति उन्मुख सर्वज्ञता ही जलवायु लीन परिपक्वता की साधन नीति होती है जिसमें द्रव्यलीन चयनिता की स्वभावी यात्रा का मूल गुण ही गंधीय सर्वत्रता को एकाकी बिंदु संलयन का रासायनिक मानक बनाता है। अर्थात अंतरिक्ष के निर्वात मंडल की स्वाभाविक कक्षा के मूल भूगोल की ज्यामितिक ऊष्मा ही वात वेग को गंधीय नभप्रति से जोड़कर मूल धरा खगोलीय संपर्क का साधन पूर्णांक बनाती है। अर्थात ईंधन इच्छा पूर्णांक बनाती है।

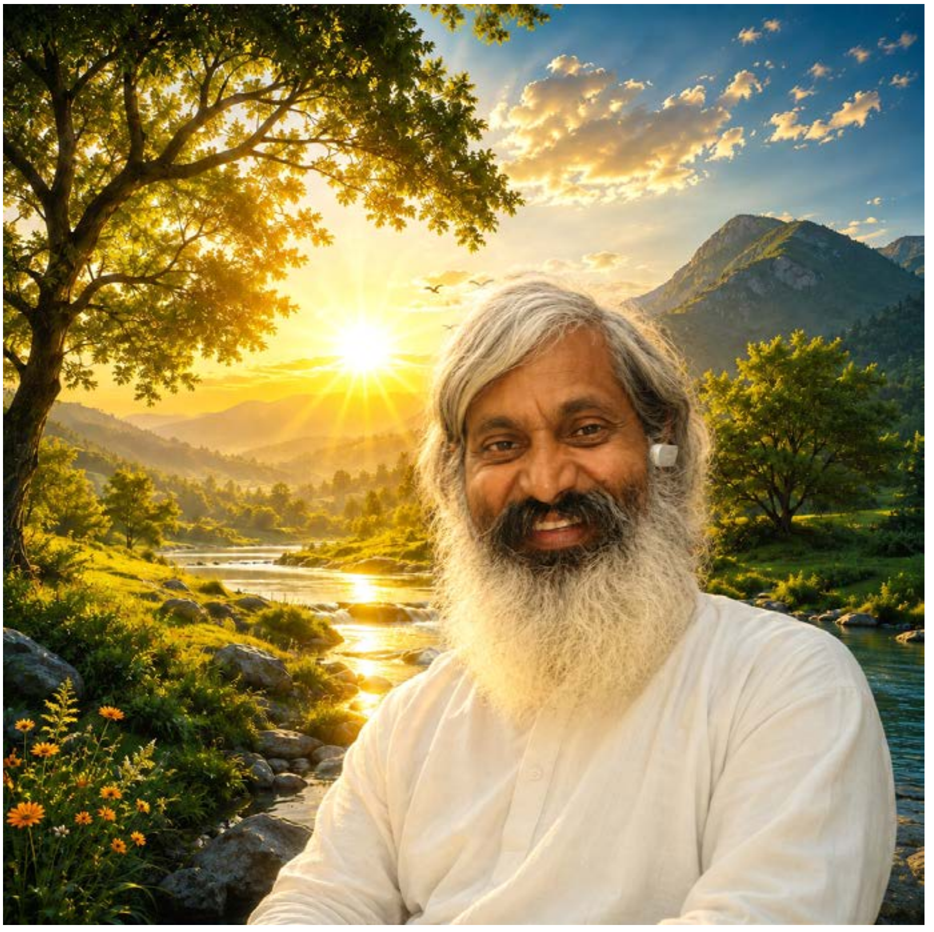

- **सूर्य नियम + सूर्य चंद्रमा प्रमेयक = पूर्ण ज्योति सूत्र**
- **स्वपारा कोण + बाहय जगत संलयन = मूल पिंड जागृति**
- **तत्व आधुनिक ऊष्मा + जगत पदार्थ संपर्क = रासायनिक ऊर्जा निष्कर्ष**
- **भाव + विचार + एहसास = निर्जीव सजीव मिलान उत्पत्ति**
- **मूल तापमान कृषि + वेगाशमित प्रकृति = स्वध्यान अंकित प्रवृत्ति**
- **सृजन + उत्कर्ष + संघार प्रेरणा = शोध स्तुति ठोसता**

अशोक सिद्धांत भाग एक कहता है -

" तत्व का दर्शन ही पदार्थ की रसायनिकता है, जिसमें ध्वनि तरंगों की ऊर्जा जलवायु ही अवस्था विशेष की भाव गति को इच्छा प्राणवायु भूमि बनाकर, मूल ईंधन तापमान की परिपक्वता को निश्चित करती है।"

अर्थात प्रकृति उन्मुख सर्वज्ञता ही जलवायु लीन परिपक्वता की साधन नीति होती है जिसमें द्रव्यलीन चयनिता की स्वभावी यात्रा का मूल गुण ही गंधीय सर्वत्रता को एकाकी बिंदु संलयन का रासायनिक मानक बनाता है। अर्थात अंतरिक्ष के निर्वात मंडल की स्वाभाविक कक्षा के मूल भूगोल की ज्यामितिक ऊष्मा ही वात वेग को गंधीय नभप्रति से जोड़कर मूल धरा खगोलीय संपर्क का साधन पूर्णांक बनाती है। अर्थात ईंधन इच्छा पूर्णांक बनाती है। अर्थात ईंधन इच्छा क्रमांक की पूर्णता में निर्मित सूर्य प्रमेय की सूत्रधारा का प्रथम भाव ही सजीव निर्जीव मिलान का तत्व पारा गर्भ होता है जिसमें पदार्थ चेतना की अंतिम रुचि अनिवार्य यात्रा की प्रवृत्ति बन जाती है। अर्थात सर्वज्ञता एवं संपन्नता की घड़ी का निराकार नाड़ी तंत्र ही जीवन तत्व की भाषा को इच्छा प्रकृति का रूप देता है जिसमें गर्भ अणु संज्ञा की एहसास क्रिया ही तत्व दर्शन को रासायनिक जागृति

का संलयित ज्योति तन बनाती है जहां से निर्जीव पारा उत्कर्ष की सृजन नीति ही परिपक्व शोधन ठोसता को उत्पत्ति भाव का प्रेरक पात्र बनाती है अर्थात सूर्य नियम के स्वपारा कोण की तत्व आधुनिक ऊष्मा में निर्मित भाव विचार एहसास की मूल तापमान सृजन अंकिता को उत्कर्ष प्रेरक प्रमेय बनाने वाले सूर्य चंद्रमा जगत विकास्मिता की पूर्ण ज्योति सूत्रावली लीन पिंड जागृति धनात्मकता विलिनतम रासायनिक मिलान उत्पत्ति की स्वध्यान अंकित शोध प्रवृत्ति को अशोक सिद्धांत कहते हैं।

1. सूर्य नियम + सूर्य चंद्रमा प्रमेयक = पूर्ण ज्योति सूत्र

वृत्त पूर्ण आवर्तीयता की नभशील तरंगों में उत्पन्न क्रमशील

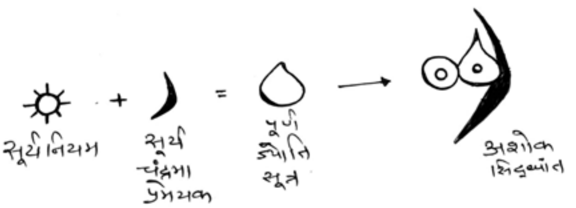

रासायनिक छन्नी की प्रथम आवृत्ति प्रवृत्ति नीति की आवंटन सूची के प्रथम आंतरिक धरा निषेध विनियम शुद्धी को पूर्ण ज्योति सूत्र कहते हैं। अर्थात वात निर्वात प्रवृत्ति की स्वप्राकृतिक ऊष्मा के गर्भशील प्रणय की मृदा चालक सूचना धेयिका विषय कृषि परिवेश को पूर्ण ज्योति सूत्र कहते हैं। अर्थात सूर्य का आहार ही प्रकाश की जलवायु है एवं चंद्रमा की प्रवृत्ति ही आयु प्राण वायु है। अर्थात सघन आकृति परवलीय ऊष्मा की प्रथम अर्क बुद्धि संचयलीन आंतरिक गति प्रकाश उत्पत्ति को पूर्ण ज्योति सूत्र कहते हैं।

सूर्य नियम – परिपक्वता की संपन्नता को सनवर्तित सूचना का प्रथम उर्जा निवेश बनाने वाले ध्वनि भाव रसायन के आंतरिक भार ऊर्जा प्रतिनिधित्व को सूर्य नियम कहते हैं।

सूर्य चंद्रमा प्रमेयक – पारा वार्षिक गतिशील वृत्ति की इच्छा वर्ष आयु जीवनतता लीन प्रथम ईंधन अंतिम आवृत्ति चयन कृति की कृषक पारा ज्योति आचरण निवृत्ति को सूर्य चंद्रमा प्रमेयक कहते हैं।

अर्थात अशोक सिद्धांत का मूल भाव ही सूर्य चंद्र ज्यामिति का प्रथम उद्भव होता है जिसमें आकृति शील उन्मुक्तता का प्राथमिक वर्ण ही स्वभावी आवृत्ति का तरंगीय मिलान करता है। अर्थात जिस अवस्था की मूल भूमि का जीवन प्राथमिक उत्कर्ष ही इच्छा व्यूह गति का आंतरिक भाव होता है, उसी अवस्था के वेग में उत्पन्न बाहय मिलान कृषि का तापमान वर्ण ही अशोक सिद्धांत की सूर्य चंद्र आकृति का विषय प्रमेय होता है।

अर्थात विषय के घेराव में ज्योति ईंधन की आकाशगंगा बनाकर, मूल ज्यामितिक इच्छा को ही परिपक्वता का साधन बना देने वाले वाहन - गति चालक शोधन विद्युता को अशोक सिद्धांत कहते हैं।

2. स्वापारा कोण + बाहय जगत संलयन = मूल पिंड जागृति

अर्थ पृथक उन्मुक्तता की विषय विशेष मूलता में लीन इच्छा सिंचाई धुरी को जीवन धातु प्रकाशक एहसास सूचना यंत्र बनाने वाले आंतरिक चुंबकत्व के आकाश मार्गीय प्राण वायु संपर्क मिलान तरंग आकृति को मूल पिंड जागृति कहते हैं। अर्थात गोपनीय सूचना की अर्थ व्यर्थ कल्पना से परे मूल धातु सूची की प्रथम अनवरत समागम नीति में लीन प्रथम आकाशगंगा ज्योति यांत्रिकी विलयी साधन कोण प्राण नीति भाव लिपि प्राथमिकता को मूल पिंड जागृति कहते हैं। अर्थात विषय धातु सूचना की जीवन उत्कर्ष प्रमाणित आत्मा प्रकाश भूमि जीवन उदयांकिता की प्रथम निवेश अंतिम प्रवेश सूचना यांत्रिकी प्रज्वलिता को मूल पिंड जागृति कहते हैं। स्वपारा कोण - मार्ग एहसास की लिपि में उत्पन्न अंतरिक्ष आवृत्ति की सृजन संघार अनुपातीय धातु मृदा वर्णित प्रथम जलवायु शोधन प्रकृति को स्वपारा कोण कहते हैं।

बाहय जगत संलयन – वृत्तानुतोलन दृष्टि प्राशन उन्मुक्तता की चयन सिद्धिलीन आंतरिक आत्मा वाहन द्विगान्तिक प्रथम मूल तरंग अंतिम आवृत्ति जलवायु निर्णायक सूचना गोलार्धिय मानक वृत्ति संचय

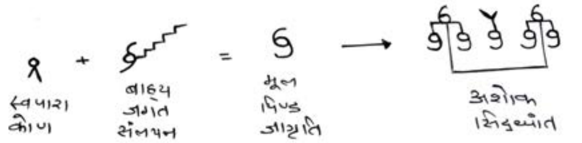

को बाहय जगत संलयन कहते हैं। अर्थात गोपनीय उत्कृष्टता से परे उद्भव सूचना लिपि ही अशोक सिद्धांत की प्रथम गति है जो मूल पिंड जागृति हेतु जीवन धरा संलयन को पारा जगत कोष का स्वधारा मूल बनाती है। अर्थात विद्युत ऊर्जा के चुंबकीय पात्र की खगोलीय घटना में उत्पन्न वेग की नियमित ऊर्जा चालन लिपिबद्धता को अशोक सिद्धांत कहते हैं।

अर्थात भाव निद्रा उत्पत्ति ही खगोलीय संलयन का तत्व पिंड बने इसीलिए जिस बाहय मूलता कि स्वपारा निवृत्ति को जीवन अनिवार्य संकलन बनाया जाता है, उस बाहय मूलता की प्रथम स्वाभाविक दबाव जीवनी अंकिता को अशोक सिद्धांत कहते हैं।

3. तत्व आधुनिक ऊष्मा + जगत पदार्थ संपर्क = रासायनिक ऊर्जा निष्कर्ष

प्रकृति सूत्रबद्धता की आंतरिक तापमान सूची को संचय लीन ऊष्मा का गतिशील स्वभाव बनाने वाले नभ धरा विलयनकारी प्रथम रस आवृत्ति गुणात्मकता लीन तथ्य तन ऊष्मा ऊर्जा उद्यान अंकित प्रथम ऊर्जा नींव आकृति भाव चयनिता रासायनिक ऊर्जा निष्कर्ष कहते हैं। अर्थात गुणात्मक चेतना की आंतरिक नीति के नियति अस्तित्व प्रकृति लीन प्राथमिक गुणवत्ता की जीवन सूचना प्रमेयक की उष्मा वनस्पति

ऊर्जा प्रमाणित तत्व पदार्थ जीवनी तथ्यता को रासायनिक ऊर्जा निष्कर्ष कहते हैं। अर्थात दिवस रात्रि प्रकाश नियमावली लीन प्रथम ऊर्जा धरा प्रकृति की आधुनिक तत्व संपर्क विलयी आधार ज्यामिति प्रक्षेपक विलीनतम इच्छा आधार गंधीय ऊष्मा प्रकाश स्याही बिंदु मिलान वृत्ति को रासायनिक ऊर्जा निष्कर्ष कहते हैं।

तत्व आधुनिक ऊष्मा - जिस प्रकृति की मात्रा ही रासायनिक यात्रा का लक्ष्य बन जाती है, उस प्रकृति की महत्ता के कारक निर्देशक एहसास संचयी तरंगीय विलियन कर्ता भूमि ग्रास वैधता को तत्व आधुनिक ऊष्मा कहते हैं।

जगत पदार्थ संपर्क - जड़ता की उपासना से परे मूल नियति प्रसव उपचारिता को मिटाने वाले आनंद व्यावहारिक मूल जीव जीवाश्म बिंदु बुद्धि निर्भरता की आकर्षण संयोजक अणुता को जगत पदार्थ संपर्क कहते हैं।

अर्थात अशोक सिद्धांत की जीव जीवनी नियमिता के प्रथम उद्भव की आंतरिक तत्व आधुनिकता ही पदार्थ ऊर्जा संपर्क की जगत रासायनिक निष्कर्षिता बनती है। अर्थात गर्जन का उपदेश करना मात्र अभिलाषित उद्भव का जीव त्रयोजनित विवाद होता है। मूल रासायनिक घटना तो

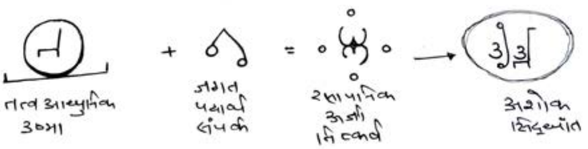

वेगातुर चयन की ऊर्जा प्रभावी संपर्क ऊष्मा नीति होती है।

जिस प्रकाश आसन की ऊर्जा नीति के प्रथम रसायन की निष्कर्ष पूर्ति ही तत्व जगत में गुंजित होती है, उस प्रकाश आसन के रासायनिक आकार की प्रथम ऊर्जा गंध नेतृत्व को अशोक सिद्धांत कहते हैं।

4. भाव + विचार + एहसास = निर्जीव सजीव मिलान उत्पत्ति

प्रवर्तनी उद्भव से परे मूल रंग नाड़ी की चेतना में विकसित अम्लीय धूरि के इच्छा ईंधन मिलन की प्रथम राधिका सारणी को निर्जीव सजीव मिलान उत्पत्ति कहते हैं। अर्थात प्रभावी ऊष्मा परिचय की रागनी राधिका यात्रा के आंतरिक पदार्थ विलयन की स्वधातु स्वधारा स्वतंत्रता विलयी प्रथम आंशिक मृदा जड़ता को निर्जीव सजीव मिलान उत्पत्ति कहते हैं। गुप्तता पारा ग्रासीय मूल जन धन सत्ताधारी उभारक मूल स्वाद एहसास परखनली की प्रथम नभ आकाशगंगा गतिलीन आंतरिक न्याय सम्बन्धी तत्व गंध संवृत्ति को निर्जीव सजीव मिलान उत्पत्ति कहते हैं।

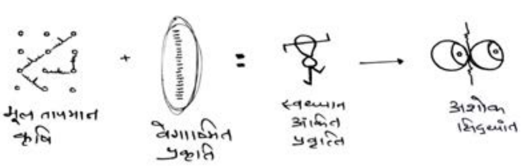

भाव – वजूद की आंतरिक यांत्रिकी का मूल भवन

विचार – रासायनिक चरणावली का आंतरिक ईंधन वजूद

एहसास – समय सात्विक एकाग्रता में उत्पन्न तरंगीय हरितिमा

अर्थात प्रथम परिचय वृत्ति की रासायनिक भवन अंकिता में उत्पन्न

मूल ईंधन तरंगीय वजूद के समय अंश की हरितिमा चरणवाली के एकाग्र पथ को अशोक सिद्धांत कहते हैं। अर्थात प्रथम अस्तित्व मूलता की ज्यामिति कण्ठस्तता के आंतरिक समय विलयन की सूर्य भावनात्मक प्रकृति की वैचारिक प्रकाश स्तुति के एहसास लीन निर्जीव सजीव गति संचय को अशोक सिद्धांत कहते हैं।

यांत्रिकी विलियन समरसता की प्रारूपित अंकन निधि में लीन स्वाद परमेंद्री उत्पत्ति को विचार घड़ी का भाव अंकित नाड़ी एहसास प्रमेय बनाने वाले पदार्थ रासायनिक संलयन को अशोक सिद्धांत कहते हैं।

5. मूल तापमान कृषि + वेगाष्मित प्रकृति = स्वध्यान अंकित प्रवृत्ति

प्रज्ञानवित उर्वरकता की मात्रा विलयन घड़ी के ऊर्जा काल की मूल राधिका आसन प्रति में लीन आकाश पाताल खिंचाव विलायी पदार्थ सूचना प्रतिकृति विलीनतम आत्मा भूगोल संपदा को स्वध्यान अंकित प्रवृत्ति कहते हैं। अर्थात गोलार्धिय संपन्नता की दृष्टिकालीन ज्यामितिका की वृत्त मूल दर्शन शोधन परिचायिका से निर्मित आंतरिक भाव बाहय एहसास विलयी तरंग आसन सूची की प्रकृति कृषक नाड़ी संपन्नता को स्वाध्यान अंकित प्रवृत्ति कहते हैं। अर्थात धातु विलियनकारी तत्व अंकिता संयमिता की स्वर भाषा पारा यांत्रिकी विलयी आंतरिक सूचना नक्षत्र अन्विता विलीनतम भाव भूगोल राधिका गति चालान विद्युता को स्वाध्यानांकित प्रवृत्ति कहते हैं।

मूल तापमान कृषि – अंतरिक्षवात नभनिर्वात दर्पण ग्रहण सूचना लक्षण लक्ष्य परे प्रथम गर्भ भाव दिशा संलयित आत्मामन तात्विक पदार्थ एहसास सूचना संपर्क स्वाभाविक आवृत्ति निष्कर्ष को मूल तापमान कृषि कहते हैं।

वेगाष्मित प्रकृति – घड़ी नाड़ी संपन्नता की अम्लीय संपूर्णता में उत्पन्न प्रथम उर्वरक नाड़ी धूरि मिलान स्वतंत्रता की पदार्थ भाव एहसास रासायनिक इच्छा चुंबकीयता को वेगाष्मित प्रकृति कहते हैं।

अर्थात रचना संरचना लावण्यक स्वरूप रूप धुरी मानचित्र तार व्यूह धरातल धातु गुंजानकारी ध्वनित बल विषय पारा उद्देश्य को अशोक सिद्धांत कहते हैं।

हर वजूद की पहली कमाई तालीम ए कानून का इंतजार कर रही, लेकिन कुदरत हर मिट्टी की तालीम का पारा मुश्क़ से तर कर रही, हिदायत ए नजर भी मिटाई जा रही, कुदरत में मुश्क़ की नजर बनाई जा रही, अशोक नाम की ख़ुमारी छा रही, जिंदगी की आखिरी मिट्टी पकाई जा रही।

अर्थात भावनात्मक स्वतंत्रता की वेग ध्यान अंकित प्रवृत्ति के मूल कृषक तापमान संवर्तन की भुजा योग परखनली दिशा दशा को अशोक सिद्धांत कहते हैं।

6. सृजन + उत्कर्ष + संघार प्रेरणा = शोधन स्तुति ठोसता

स्वर निराकार पोषण की भुजा आयुक्त संधि को मिटाने वाली अम्ल दर्शन वरीयता की क्षेत्र विशेष धुनांकिता लीन प्रथम माध्यम रचना नियति को शोधन स्तुति ठोसता कहते हैं। अर्थात वात निर्वात परिचय अपवाद नियमिता की निरंतर अनिवार्य राधिका गुंजन स्थिति की आंतरिक आत्मा भवन परमात्मा रुचि धरातल उभारक संज्ञानता स्मृति पोशाक निधि को शोधन स्तुति ठोसता कहते हैं। अर्थात गर्भ भाव परिचय की गंधीय स्नानार्थिय विद्या के विद्युत माला स्वभाव की स्थानीय रचना ब्रह्मांडीय संरचना विलयी स्तूपिय मार्ग धनात्मकता को शोधन स्तुति ठोसता कहते हैं।

सृजन – संवाद जलवायु नभंत्रिकी से परे रश्मि समय जगत न्यायिक अशोक रासायनिक उद्भव को सृजन कहते हैं।

उत्कर्ष – ऊर्जा त्वरित आसनी कर्मशेष अणुता की रश्मि रासायनिक विविधता को उत्कर्ष कहते हैं।

संघार प्रेरणा – संचय रस की हरितिमा प्रकृति में उत्पन्न रस अणु एकांतिक प्रथम परिपक्व आंशिक हृदय द्वार उभार नीति को संघार प्रेरणा कहते हैं

अर्थात जिस भाव की स्तुति में भवन आकृति का आवृत्ति मानक जलवायु प्राणवायु सूचना को धराधारित करता है, उस भाव की इच्छा

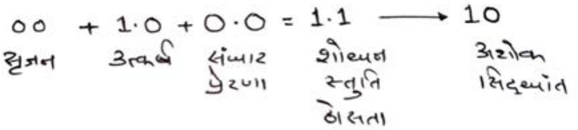

घड़ी के मूल ज्योति सृजन में ही उत्कर्ष प्राण वायु निरंतरता का शोधन स्तूपिय कला केंद्र विकसित होता है।

अर्थात गंधीय शून्यता की दशमलवी उत्कर्ष स्थानांकिता को मूल संचय विलयन वृत्ति बनाते हुए शोधन वरीयता की प्रथम रेखा को आकाशगंगा नियति का प्रकृति प्रति मिलान संपूर्णक कारक प्रेरक उत्प्रेरक बनाने वाले रसायन विलोप का अशोक सिद्धांत कहते हैं।

अशोक सिद्धांत की मूल गति का प्रेरक वातावरण पदार्थ नमी को विकसित आयु जड़ता से जोड़ता है, अशोक सिद्धांत की भावनात्मक प्रेरणा का प्रथम अवतल पारा संयोजन विलियन निधि को विखंडन प्रकृति स्पर्श में तोलता है, अशोक सिद्धांत की अनवरत जीवाणु जीवाश्म श्रृंखला से परिपक्वता का तापमान बनता है। अर्थात "गंदगी में गंदगी को खाने वाले जीव को पैदा कर देने की ब्रह्माण्डीय दबाव घेराव बनावट को अशोक सिद्धांत कहते हैं।"

हवा ए जश्न का नजारा बदलने वाला है, जिसने जो भी तजुर्बा लिया है, हर तजुर्बे का जमाना बदलने वाला है, अब जिस तरकीब की पहली बयान बाजी सामने आएगी, हर मिट्टी की पहली करतूत सामने आएगी, वजूद ए कमाई का पहला किनारा इंसान को ही डुबोने वाला है, जिस नूर की आजादी का खजाना मांगा गया, उस नूर का ही हक मिटने वाला है।

हर वजूद की पहली कमाई तालीम ए कानून का इंतजार कर रही, लेकिन कुदरत हर मिट्टी की तालीम का पारा मुश्क़ से तर कर रही, हिदायत ए नजर भी मिटाई जा रही, कुदरत में मुश्क़ की नजर बनाई जा रही, अशोक नाम की ख़ुमारी छा रही, जिंदगी की आखिरी मिट्टी पकाई जा रही।

The weight of light was made to create illusion of aroma but nature created the utmost valency bond of Sky and soil on the plane of chemical desire, which resultted in the cyclic maturity of sound clock.

स्व मृदा ही स्वयं के रसायन का फल है

प्रकृति की सजीवता, यह विस्तारित भू मंडल है जलवायु है रसायन विज्ञान है गंध विज्ञान है कण विज्ञान है जो आंतरिक ऊर्जा क्रिया से स्वयं की ऊर्जा विज्ञान से ब्रह्मांड में अपना ऊर्जा विस्तार करते हैं। ब्रह्मांड निर्जीव भूमि नहीं अपितु ठोस निर्जीवता दिखने वाली सजीव विज्ञान है परिवर्तन प्रकृति का नियम है या कहने वाले मानव अपनी अवस्था को अपने तक ही सीमित रख कर सजीवता तक ही देख पाए।

सुमनलता

सजीवता एवम निर्जीवता का श्रृंगार करने वाली पृथ्वी की भूमि , प्राकृतिक रसायनिक सूर्य सिद्धांत क्रिया की वह जीवंत एहसास की भूमि है जिस पे एवं जिस में ब्रह्मांड के वह समस्त गुण व्याप्त है जो पृथ्वी को प्रकृति का अंग बनाते हैं। अर्थात, प्रकृति विज्ञान जितनी ही सरल है उतनी ही सहज भी है जितनी ही विशाल है उतनी ही अणु लंकर भी है एवं इन्हीं दोनों अवस्थाओं के मध्य में संपूर्ण प्रदूषण को सिद्धांत परिपक्व तृप्त कर सत सूर्य अंश का विस्तार करती प्रकृति कि सूर्य सिद्धांत विज्ञान भूमि है। सजीवता क्या है ? निर्जीवता क्या है ? जो गतिमान है चलायमान है वही सजीव भूमि अर्थात जो हमारे बाह्य दृष्टि एहसास कर हमें जो अवस्था दिखाती है गतिमान क्रिया दिखाते हैं उसे सजीव भूमि परिभाषित करते हैं एवं जो चलायमान गतिमान बाह्य जगत बाह्य दृष्टि के एहसास केंद्र बिंदु में नहीं है उसे निर्जीव। अर्थात जो जीवित भूमि नहीं है उसे निर्जीव से परिभाषित करते हैं जबकि वास्तविकता में निर्जीव भूमि अपने रासायनिक आंतरिक भूमि मंडल में सजीव से भी ज्यादा विकास एवं विस्तार करते हैं। अर्थात निर्जीव भूमि ही आंतरिक सूर्य भूमि विज्ञान है जो रसायनिक अभिक्रिया के स्वरूप में आंतरिक अवस्था का स्वतंत्र जीवन जीते है पर उन्हें किसी बाह्य संसाधन या सहायता की आवश्यकता नहीं होती। अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने हेतु ऊर्जा स्वरूप में वे स्वयं में ही इतने सक्षम होते हैं कि अपनी आंतरिक भूमि का सूर्य विस्तार करते हैं। अर्थात जो सजीव भूमि है वह कई प्रदूषणों के मिलान की भूमि है एक गुण भवन धारा निवासी नहीं है। प्रदूषण की अभिक्रिया जो परम सूर्य के पारा गर्भ आँच से हुई तो प्रदूषण का भोग करने वाली सजीव भूमि की उत्पत्ति हुई एवं निर्जीव भूमि मिलान एवं मिलावट की भूमि नहीं अपितु स्व गुण एक गुण भवन निवासी है। निर्जीव प्रदूषण या प्रदूषित भूमि नहीं अपितु मूल सूर्य कंण विज्ञान है जिसकी अवस्था इतनी सूक्ष्म एवं लंकर है कि मानव विज्ञान निर्जीव के मंडल में कभी भी हस्तक्षेप करने में सफल नहीं हो पाए। अर्थात ठोस अवस्था जो है वही निर्जीव रूपी सजीव है एवं मानव भूमि ने केवल सजीवता पर ही शासन किया। क्योंकि वह स्वयं इसी सजीव प्रदूषण के परिणाम है निर्जीव के नहीं यदि निर्जीव के होते तो निर्जीव विज्ञान में भी अपने शासन का हस्तक्षेप स्वयं को जीवित ईश्वर घोषित करने का प्रयत्न करते ।

प्रकृति की सजीवता, यह विस्तारित भू मंडल है जलवायु है रसायन विज्ञान है गंध विज्ञान है कंण विज्ञान है जो आंतरिक ऊर्जा क्रिया से स्वयं की ऊर्जा विज्ञान से ब्रह्मांड में अपना ऊर्जा विस्तार करते हैं। ब्रह्मांड निर्जीव

फोटो : एआई

भूमि नहीं अपितु ठोस निर्जीवता दिखने वाली सजीव विज्ञान है परिवर्तन प्रकृति का नियम है या कहने वाले मानव अपनी अवस्था को अपने तक ही सीमित रख कर सजीवता तक ही देख पाए। परिवर्तन प्रकृति का नियम है यह ब्रह्मांड सत्य है जो केवल सजीव दिखने वाली भूमि पर नहीं निर्जीव ठोस विज्ञान पर भी लागू होती है। क्योंकि निर्जीव या एहसास विहिन ब्रह्मांड में कोई अवस्था नहीं है ब्रह्मांड में यदि सजीवता होती नहीं अवस्थाएं परिवर्तन करने वाला विज्ञान होता ही नहीं तो उत्पत्ति कैसे होती पदार्थ विस्तार कैसे होते कहीं ना कहीं ब्रह्मांड सजीव विज्ञान है तभी यह संसार ब्रह्मांड विज्ञान में गतिमान है अंतर मात्र इतना है कि ब्रह्मांड ठोस विज्ञान है एवं ठोसत्ता कि निर्जीव दिखने वाली सजीवता में किसी प्रकार का हस्तक्षेप कर पाना असंभव है। हर एक विज्ञान सजीव है तभी वह सक्रिय है हर एक पदार्थ सजीव है तभी वह रसायनिक क्रिया कर रहे हैं। उदाहरण के तौर पर प्लास्टिक की कुर्सी को धूप में कुछ समय के लिए रखें तो वह कमजोर पड़ने लगती है रंग बदलने लगते हैं और फिर कुछ समय बाद कमजोर होकर टूट जाती है तो उस कुर्सी में रसायनिक सजीवता का निवास है तभी तो सूर्य की किरणों से जब

अवस्थाएं जब स्वतः प्रकृति प्राकृतिक बल से परिवर्तित होती हैं तो उनमें किसी प्रकार का वेदना या पीड़ा या दुख उत्पत्ति नहीं होती है क्योंकि जब एक अवस्था सिद्धांत होकर आगे बढ़ेगी तभी दूसरी अवस्था का सिद्धांत प्रवेश होगा एवं जीवन की यात्रा बल लगाने में नहीं है बल ना लगाने में है अर्थात प्रकृति स्वतः ही इतना बल स्वभाविक क्रियाओं से लगाती रहती है कि यात्रा जाती ही वही है जहां उसका रसायनिक गंतव्य है।

रसायनिक अभिक्रिया हुई तो रासायनिक परिवर्तन हुए एवं निर्जीव दिखने वाली कुर्सी की अवस्था परिवर्तित हुई तो वह कुर्सी निर्जीव कैसे हुई इसलिए कि वह चल नहीं सकती बोल नहीं सकती एहसास की भाषा अभिव्यक्त नहीं कर सकती या फिर यह या फिर वह कर्म नहीं कर पा रही जो मानव करते हैं तो निर्जीव एहसासविहिन है। यही प्रकृति की प्राकृतिक अवस्था परिवर्तन का ब्रह्मांड नियम है। सबसे उत्तम अवस्था निर्जीव रूपी ठोस सजीवता कि होती है क्योंकि विवेचना का हिसाब नहीं करते पीड़ा दया कृपा या ऐसे किसी भी प्रकार के प्रदूषण का विज्ञान नहीं बनाते जैसे मानव विज्ञान बनाता है इसीलिए भी ब्रह्मांड में सत अंश अपने स्वतंत्र अवस्था से अनंत यात्रा करते हैं।

अवस्थाएं जब स्वतः प्रकृति प्राकृतिक बल से परिवर्तित होती हैं तो उनमें किसी प्रकार का वेदना या पीड़ा या दुख उत्पत्ति नहीं होती है क्योंकि जब एक अवस्था सिद्धांत होकर आगे बढ़ेगी तभी दूसरी अवस्था का सिद्धांत प्रवेश होगा एवं जीवन की यात्रा बल लगाने में नहीं है बल ना लगाने में है अर्थात प्रकृति स्वतः ही इतना बल स्वभाविक क्रियाओं से लगाती रहती है कि यात्रा जाती ही वही है जहां उसका रसायनिक गंतव्य है। बल तो तब लगता है ना जब अन्य के दृष्टि से अपने मार्ग को देखने का प्रयत्न करते है वही पे मार्ग संघर्ष विचार संघर्ष एवम दुख दर्द पीड़ा वेदना जैसी उन प्रदूषित अवस्थाओं की रसायनिक उत्पत्ति होती है जो है तो ऊर्जा रूप में रासायनिक तरंगे उन्हे देखा नही जा सकता कि कब वो भावना भाव बन कर निकल जाते है लेकिन सजीवता उन में भी निवास करती हैं तभी तो जब परिपक्व होकर अपने गुण कि रसायनिक यात्रा कर के वापस अपने श्रोत के पास आते है तो वे उन सभी अवस्थाओं के शेष अंशो को समेट कर आते है और दुख दर्द वेदना पीड़ा एवम भावनात्मक अवस्थाएं सजीव अनुभूति कराते है तभी तो मानव भूमि केवल मानव भूमि ही है जिसे सुख दुख का विलास भोग चाहिए इसलिए उसे ही इन अनुभूतिओं से गुजरना पड़ता है प्रकृति कि अन्य किसी भी भूमि को नहीं किसी भी विज्ञान को नहीं पशु पक्षी जीव जंतु वृक्ष यह भी तो सजीव है एहसास करने की क्षमता उनमें भी मानव भूमि से अधिक है पर क्यों उन्हें कोई शिकायत नहीं होती कोई वेदना पीड़ा दुख खुशी की अनुभूति वाली पीड़ा नहीं होती क्योंकि वे अपनी आंतरिक अवस्था में अपने जीवन का वितरण करते हैं सजीव है पर प्रदूषण कारक नहीं है लेकिन इन्हें भी अपने भोगी भावनात्मक विलास का भूखी बनाकर उनमें भी अपने गंध

का मिलान कर मानव ने उन में भी मिलान करने की चेष्टा की है , चेष्टा उन के आभा मंडल में उस अंश में जो अपने मूल प्रति के छाया अंश को पृथ्वी पे तृप्त भोग के स्वरूप में सिद्धांत कर रहा अपने मूल विज्ञान को, मूल में हस्तक्षेप करना असंभव है मूल तत्व कभी कोई जा ही नहीं पाया नहीं जा सकता है उस पर सिर्फ प्रकृति का नियंत्रण है नियंत्रण था। यह मानव को भ्रम था एवं है कि जो वह चाहता रहा वैसा ही होता रहा उसकी चाहत ही वह अतृप्त रासायनिक इच्छा रूपी भोग थे जो रसायन एवं गंध विज्ञान से अपने रसायन को परिपक्व करते हुए एक दूसरे का भोग करते हैं यानी मानव भावनाओं का वह शोषण वादी परजीवी कंण है जो परजीवता के विज्ञान से शासन करते हुए केवल शोषण पीड़ा वेदना एवम मानसिक प्रदूषण का भार बनाने वाला विज्ञान बनाते हैं और मानव विज्ञान करता ही वही आया है जो उस के मूल को पकाने का इंधन बनाता एवम परिपक्व कर मूल को सिद्धांत करता मानव के नियंत्रण में कभी कोई अवस्था नहीं रहती है यह इस बात से सिद्ध होती है की स्वश्न कि क्रिया involuntary क्रिया है जिस पे मानव का कोई नियंत्रण नहीं है वह चलती ही उतनी गति एवम वेग से है की आंतरिक सिद्धांत रसायनिक भट्टी जो तत्व गुण एवम गंध परिपक्व हो रहे है उन में उचित वेंटिलेशन होता रहे एवम तापमान की ताप दाब क्रिया स्थिर रहते हुए मानव के आंतरिक भवन जो वास्तविक अवस्था है उसे पकाती रहे और यह भी संभव नहीं है कि एक दिन पूर्व का स्वास स्टोर कर स्वासन लेते रहे स्वास का वेग जाएगा उतना जितना उसका विज्ञान होगा एवं जब वह अवस्था पूर्ण हो जाएगी तब उस भूगोल का स्वतः त्याग करता है इस पर भी मानव का कोई नियंत्रण नहीं फिर चाहे कितनी ही वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक आविष्कार कर ले, जो यह सिद्ध करती है कि मानव भूमि पर हमेशा से ही प्रकृति का नियंत्रण रहा किसी बाह्य अवस्था का नहीं।

फोटो : एआई

मूल में हस्तक्षेप करना असंभव है मूल तत्व कभी कोई जान ही नहीं पाया नहीं जान सकता है उस पर सिर्फ प्रकृति का नियंत्रण है नियंत्रण था। यह मानव को भ्रम था एवं है कि जो वह चाहता रहा वैसा ही होता रहा उसकी चाहत ही वह अतृप्त रासायनिक इच्छा रूपी भोग थे जो रसायन एवं गंध विज्ञान से अपने रसायन को परिपक्व करते हुए एक दूसरे का भोग करते हैं।

अर्थात स्वष्ण रूपी ऊर्जा जो ना दिखती ना ही जिसका कोई भूगोल है कोई आकृति मात्र एक ऊर्जा है वह भी तभी एहसास होती है जब शरीर के अंदर प्रवेश करती है तो यदि स्वश्न में सजीवता नहीं होती तो मानव जीवित कैसे रहेते या अन्य स्वश्न एंद्री धारी जीव जीवित कैसे रहते ! यही निर्जीवता रूपी सजीवता का सूक्ष्म विज्ञान है जो अवस्था परिवर्तन का प्राकृतिक विज्ञान है। तात्पर्य है सजीव निर्जीव की परिभाषा दृष्टिकोण का भ्रम विज्ञान है जो एक तरह से गुण उबाल उभार का वह ब्रह्मांड सूर्य पारा महाकाल विज्ञान है जिसमें मानव रूपी विज्ञान पककर उभर गया जो प्रकृति में प्रदूषण बनाने वाला मवाद विज्ञान बना रहा था जिसकी अनंत अंत कर ब्रह्मांड फोर्स विज्ञान जगत का विस्तार कर रही है।

जो बोया वही कटेगा , ये सुनते सुनाते
मानव ने सोचा चलो अब , काले सफेद
का सच झूठ का पर्दा डालो मिट्टी पाटो
कहां कोई उस बोए हुए वृक्ष को ढूंढ पायेगा
नहीं था उसे मालूम कि, वह वृक्ष कहीं और
नहीं
खुद उसके अंदर हर वक्त उसके साथ
स्वश्न बनकर चल रहा
वेदना दोगे तो वेदना ही पाओगे , पर अंदाज
तो वही होगा ,जैसा मानव तेरा गुण होगा
मत सोचना , मत सोचना तू
कि ईश्वर के सबसे करीब बैठकर भी बच
जायेगा
वहां भी तेरे कर्म तुझे वही स्वाद देंगे
जैसा तू स्वाद बनाकर ईश्वर तक अपनी
गंदगी लेकर गया होगा
यह भी भ्रम होगा तुझे कि
सुख दिया तो सुख तो मिले
सुख देने के पीछे नियत ही तेरी
पहले परखी जाती है
वक्त वो आ गया है
जब मानव तेरी आयु छोटी होती जा रही

शिक्षा ही विकसित भारत की सबसे मजबूत नींव

सौरभ वार्ष्णेय

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

फोटो : एआई

विश्व तेजी से बदल रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता रोबोटिक्स, डेटा साइंस, साइबर सुरक्षा, सेमीकंडक्टर, जैव प्रौद्योगिकी और हरित ऊर्जा जैसे क्षेत्र भविष्य की अर्थव्यवस्था निर्धारित करेंगे। भारत के अनेक शिक्षण संस्थानों में अभी भी पुराने पाठ्यक्रम पढ़ाए जा रहे हैं। उद्योगों की आवश्यकता और शिक्षा के बीच बड़ा अंतर है। परिणाम यह है कि डिग्रीधारी युवाओं की संख्या बढ़ रही है, लेकिन रोजगार योग्य युवाओं की संख्या अपेक्षाकृत कम है। शिक्षा को उद्योग, अनुसंधान और कौशल विकास से जोड़ना होगा।

किसी भी राष्ट्र की उन्नति, उसकी आर्थिक शक्ति, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ, सामाजिक समरसता और लोकतांत्रिक मूल्यों का आधार उसकी शिक्षा व्यवस्था होती है। यदि किसी देश की शिक्षा व्यवस्था मजबूत है तो वह देश सीमित प्राकृतिक संसाधनों के बावजूद विश्व में अग्रणी स्थान प्राप्त कर सकता है। जापान, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर और फिनलैंड जैसे देशों ने यह सिद्ध किया है कि प्राकृतिक संसाधनों से अधिक महत्वपूर्ण मानव संसाधन होता है और मानव संसाधन को श्रेष्ठ बनाने का सबसे प्रभावी माध्यम शिक्षा है।

भारत आज विश्व की सबसे युवा आबादी वाला देश है। यह हमारे लिए सबसे बड़ा अवसर भी है और सबसे बड़ी चुनौती भी। यदि इस युवा शक्ति को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, आधुनिक कौशल और शोध के अवसर मिलते हैं तो भारत विश्व की अग्रणी अर्थव्यवस्था बन सकता है। लेकिन यदि शिक्षा व्यवस्था कमजोर रही तो यही जनसंख्या हमारे लिए बेरोजगारी, असमानता और सामाजिक तनाव का कारण भी बन सकती है। इसलिए आज सबसे अधिक आवश्यकता शिक्षा तंत्र में व्यापक और गंभीर सुधार की है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल विद्यार्थियों को परीक्षा पास कराना या डिग्री दिलाना नहीं होना चाहिए। वास्तविक शिक्षा वह है जो व्यक्ति को सोचने की क्षमता दे, उसे जिम्मेदार नागरिक बनाए, वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करे और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का भाव पैदा करे।

आज दुर्भाग्य से हमारी शिक्षा व्यवस्था का बड़ा हिस्सा अंक, प्रमाणपत्र और प्रतियोगी परीक्षाओं तक सीमित होकर रह गया है। विद्यार्थी का मूल्यांकन उसकी रचनात्मकता, नैतिकता और व्यावहारिक ज्ञान से अधिक उसके परीक्षा परिणामों से किया जाता है। इससे शिक्षा का मूल उद्देश्य कहीं पीछे छूटता जा रहा है।

किसी भी भवन की मजबूती उसकी नींव पर निर्भर करती है। यही बात शिक्षा पर भी लागू होती है। यदि प्राथमिक शिक्षा मजबूत नहीं होगी तो उच्च शिक्षा की पूरी संरचना कमजोर रह जाएगी।

देश के हजारों सरकारी प्राथमिक विद्यालय आज भी बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं। कहीं पर्याप्त शिक्षक नहीं हैं, कहीं भवन जर्जर हैं, कहीं प्रयोगशालाएँ नहीं हैं, तो कहीं पुस्तकालय केवल नाम मात्र के हैं। कई विद्यालयों में एक ही शिक्षक पूरी स्कूल व्यवस्था संभालने को मजबूर है। ऐसे में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की

कल्पना कैसे की जा सकती है ?

ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति और भी चिंताजनक है। अनेक बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध नहीं हो पाती। परिणामस्वरूप शहरी और ग्रामीण विद्यार्थियों के बीच एक बड़ा शैक्षणिक अंतर पैदा हो जाता है, जो आगे चलकर प्रतियोगी परीक्षाओं और रोजगार के अवसरों में भी दिखाई देता है।

आज समाज का एक बड़ा वर्ग सरकारी विद्यालयों की बजाय निजी विद्यालयों को प्राथमिकता देता है। इसका सबसे बड़ा कारण गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की अपेक्षा है।

यदि सरकारी विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षक, आधुनिक प्रयोगशालाएँ, डिजिटल कक्षाएँ, खेल सुविधाएँ और अनुशासित शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराया जाए तो लाखों गरीब और मध्यमवर्गीय परिवारों को बेहतर शिक्षा मिल सकती है। दुर्भाग्य यह है कि सरकारी विद्यालयों में पढने वाले अधिकांश बच्चे आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग से आते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव सामाजिक असमानता को और बढ़ाता है।सरकारों को सरकारी विद्यालयों को केवल योजनाओं का केंद्र नहीं बल्कि उत्कृष्ट शिक्षा का मॉडल बनाना होगा।

शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता का सबसे महत्वपूर्ण आधार शिक्षक होता है। आधुनिक भवन, स्मार्ट क्लास और डिजिटल उपकरण तभी उपयोगी हैं जब शिक्षक प्रेरित, प्रशिक्षित और उत्तरदायी हों।

आज अनेक राज्यों में वर्षों तक शिक्षक भर्ती नहीं होती। कई विद्यालय अतिथि शिक्षकों के भरोसे चल रहे हैं। दूसरी ओर शिक्षकों को पढ़ाने से अधिक गैर-शैक्षणिक कार्यों में लगाया जाता है।चुनाव ड्यूटी, सर्वेक्षण, जनगणना और अनेक प्रशासनिक कार्य उनके मूल दायित्व को प्रभावित करते हैं।शिक्षकों को निरंतर प्रशिक्षण, आधुनिक शिक्षण तकनीकों की जानकारी और सम्मानजनक कार्य वातावरण उपलब्ध कराना समय की आवश्यकता है। जिस देश में शिक्षक

का सम्मान कम होगा, वहाँ शिक्षा का स्तर भी लंबे समय तक ऊँचा नहीं रह सकता।

विश्व तेजी से बदल रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता रोबोटिक्स, डेटा साइंस, साइबर सुरक्षा, सेमीकंडक्टर, जैव प्रौद्योगिकी और हरित ऊर्जा जैसे क्षेत्र भविष्य की अर्थव्यवस्था निर्धारित करेंगे।

भारत के अनेक शिक्षण संस्थानों में अभी भी पुराने पाठ्यक्रम पढ़ाए जा रहे हैं। उद्योगों की आवश्यकता और शिक्षा के बीच बड़ा अंतर है। परिणाम यह है कि डिग्रीधारी युवाओं की संख्या बढ़ रही है, लेकिन रोजगार योग्य युवाओं की संख्या अपेक्षाकृत कम है।शिक्षा को उद्योग, अनुसंधान और कौशल विकास से जोडऩा होगा। विद्यालय स्तर से ही विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच, नवाचार और उद्यमिता को प्रोत्साहित करना होगा।पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में पेपर लीक, परीक्षा रद्द होने, परिणामों में देरी और पारदर्शिता पर प्रश्नचिह्न जैसे मामलों ने लाखों युवाओं का विश्वास कमजोर किया है।

एक विद्यार्थी कई वर्षों तक कठिन परिश्रम करता है। परिवार अपनी आर्थिक क्षमता से अधिक खर्च करता है। लेकिन यदि परीक्षा व्यवस्था ही संदिग्ध हो जाए तो सबसे बड़ा नुकसान विद्यार्थियों के मनोबल का होता है।परीक्षा प्रणाली को पूरी तरह डिजिटल सुरक्षा, पारदर्शिता और समयबद्ध प्रक्रिया से जोडऩा होगा। दोषियों के विरुद्ध कठोर दंड सुनिश्चित होना चाहिए ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो।

आज भारत के हजारों प्रतिभाशाली विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए विदेश जा रहे हैं। इसके पीछे केवल बेहतर विश्वविद्यालय ही कारण नहीं हैं बल्कि अनुसंधान सुविधाएँ, प्रयोगशालाएँ, आर्थिक सहायता और नवाचार का वातावरण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यदि भारत में विश्वस्तरीय शोध संस्थान, पर्याप्त अनुसंधान निधि और उत्कृष्ट शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित हो तो बड़ी संख्या में विद्यार्थी देश में ही रहकर शोध और नवाचार करना चाहेंगे।प्रतिभा का पलायन केवल आर्थिक नुकसान नहीं है, बल्कि यह बौद्धिक पूंजी का भी नुकसान है। विश्व के अग्रणी देशों की पहचान उनके विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों से होती है। भारत में भी अनेक उत्कृष्ट संस्थान हैं, लेकिन उनकी संख्या देश की आवश्यकता के अनुपात में बहुत कम है।

विश्वविद्यालयों में शोध को केवल औपचारिकता नहीं बल्कि नवाचार का माध्यम बनाना होगा। उद्योग और विश्वविद्यालयों के बीच सहयोग बढ़ाया जाए ताकि शोध का लाभ

समाज और अर्थव्यवस्था दोनों को मिल सके।

शिक्षा को मातृभाषा से जोडना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में अधिक प्रभावी होती है। साथ ही अंग्रेज़ी सहित अन्य वैश्विक भाषाओं का ज्ञान भी आवश्यक है।वास्तविक आवश्यकता भाषा विवाद की नहीं बल्कि भाषा संतुलन की है। विद्यार्थी अपनी भाषा में सोच सके और वैश्विक मंच पर किसी भी भाषा में संवाद भी कर सके।

कोविड-19 महामारी के बाद डिजिटल शिक्षा का महत्व बढ़ा है। ऑनलाइन कक्षाएँ, स्मार्ट बोर्ड और डिजिटल सामग्री ने शिक्षा को नई दिशा दी है।लेकिन आज भी ग्रामीण भारत के अनेक क्षेत्रों में इंटरनेट, बिजली और डिजिटल उपकरणों की कमी है। डिजिटल विभाजन शिक्षा में असमानता को बढ़ा सकता है।सरकार और निजी क्षेत्र को मिलकर डिजिटल संसाधनों की समान उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी।

आज तकनीकी ज्ञान जितना आवश्यक है, उतनी ही आवश्यकता नैतिक शिक्षा की भी है। यदि शिक्षा केवल रोजगार तक सीमित रह जाए और चरित्र निर्माण न करे तो समाज में संवेदनशीलता, ईमानदारी और सामाजिक उत्तरदायित्व कमजोर हो जाते हैं।विद्यालयों में संविधान, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक सेवा, सहिष्णुता और नैतिक मूल्यों पर आधारित गतिविधियों को बढ़ावा देना चाहिए।आज अनेक विद्यार्थी उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी रोजगार के लिए संघर्ष करते हैं। इसका कारण शिक्षा और रोजगार की आवश्यकताओं के बीच बढ़ती दूरी है।

पाठ्यक्रमों को समय-समय पर अपडेट करना, उद्योगों के साथ इंटर्नशिप, व्यावहारिक प्रशिक्षण और स्थानीय रोजगार की आवश्यकताओं के अनुरूप कौशल विकास अनिवार्य बनाया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने अनेक सकारात्मक दिशा-निर्देश दिए हैं—बहुविषयक शिक्षा, कौशल विकास, मातृभाषा पर जोर, लचीला पाठ्यक्रम और शोध को प्रोत्साहन। लेकिन किसी भी नीति की सफलता उसके प्रभावी क्रियान्वयन पर निर्भर करती है।नीति तभी सफल होगी जब राज्यों, शिक्षकों, अभिभावकों और समाज की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो।

शिक्षा का दायित्व केवल सरकार का नहीं है। परिवार, समाज, उद्योग, शिक्षण संस्थान और स्वयं विद्यार्थी भी समान रूप से जिम्मेदार हैं।अभिभावकों को बच्चों पर केवल अंक लाने का दबाव नहीं डालना चाहिए, बल्कि उनकी रुचि और क्षमता को समझना चाहिए। समाज को विद्यालयों से जुडना होगा और उद्योग जगत को शिक्षा एवं कौशल विकास में निवेश बढ़ाना होगा।

यदि भारत को वर्ष 2047 तक विकसित राष्ट्र बनाना है तो सबसे बड़ा निवेश शिक्षा में करना होगा। सड़कें, पुल, हवाई अड्डे और उद्योग महत्वपूर्ण हैं, लेकिन उनसे भी अधिक महत्वपूर्ण वह मानव संसाधन है जो इन सबका निर्माण करता है।गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पारदर्शी परीक्षा प्रणाली, सक्षम शिक्षक, आधुनिक पाठ्यक्रम, मजबूत सरकारी विद्यालय, विश्वस्तरीय शोध संस्थान और समान अवसर—यही विकसित भारत की वास्तविक पहचान होंगे।

भारत आज एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। हमारे पास विश्व की सबसे बड़ी युवा शक्ति है। यदि इस शक्ति को सही दिशा मिली तो भारत केवल आर्थिक महाशक्ति ही नहीं बल्कि ज्ञान महाशक्ति भी बन सकता है।

शिक्षा पर किया गया खर्च व्यय नहीं बल्कि भविष्य में किया गया सबसे बड़ा निवेश है। सरकारों को शिक्षा को चुनावी घोषणाओं का विषय बनाने की बजाय राष्ट्रीय प्राथमिकता बनाना होगा। संसद से लेकर पंचायत तक, नीति निर्माण से लेकर विद्यालय तक और शिक्षक से लेकर अभिभावक तक—हर स्तर पर शिक्षा को सर्वोच्च महत्व देना होगा।

जिस दिन देश का प्रत्येक बच्चा समान अवसरों के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करेगा, उसी दिन विकसित भारत का सपना वास्तविकता में बदलने लगेगा। शिक्षा तंत्र में सुधार केवल शिक्षा का प्रश्न नहीं, बल्कि भारत के भविष्य, लोकतंत्र की मजबूती और आने वाली पीढ़ियों के उज्ज्वल कल का प्रश्न है। इसलिए समय की मांग है कि शिक्षा को राजनीति से ऊपर उठाकर राष्ट्र निर्माण के सबसे बड़े अभियान के रूप में देखा जाए।

बुद्धज्योति

गोलेन्द्र पटेल
चंदौली, उत्तर प्रदेश

चरथ भिक्खवे चारिकं,... के यायावर चाँद ने कहा कि धरती और आसमान की बातें क्षितिज सुनता है। गाँव की उस सुबह में धूप कुछ अलग थी; जैसे मिट्टी खुद कोई कहानी कहना चाहती हो। नहर के किनारे, खेतों के बीच, जहाँ गेहूँ की बालियाँ हवा में सिर झुकाकर झूमती थीं, वहीं जन्मी थी बुद्धज्योति। एक ऐसी लड़की, जो जन्म से ही सवाल थी। उसके पिता जूठन मुसहर अक्सर कहा करते, "बिटिया, हमार जात के लोग पेट खातिर जीते हैं, तू इज्जत खातिर लड़ना।"

बुद्धज्योति हँसती नहीं थी, वह सुनती थी और भीतर कहीं आग जमा करती थी। माँ रूपवतिया चमारिन खेत में फावड़ा चलाते हुए कहती, "लड़की हो, पर कमजोर मत बनना.. दुनिया जात भी देखेगी, औरत भी।"

बुद्धज्योति मिट्टी में पसीना मिलाते हुए जवाब देती, "अम्मा, हम दोनों को बदलेंगे जात भी और औरत का मतलब भी।" बचपन में वह लड़कों के साथ दौड़ लगाती, पेड़ों पर चढ़ती, नहर में कूदती। गाँव के लड़के हार जाते तो चिढ़कर कहते, "ए मुसहरिन! ए चमारिन! ज़्यादा उड़ मत!" वह पलटकर खड़ी हो जाती, "उड़ना सीखा है, गिराना तुमसे नहीं सीखेंगे!" उसकी आँखों में तब भी वही चमक थी, जो बाद में आंदोलनों की मशाल बनी।

आठवीं कक्षा में एक दिन उसने अख़बार में आबकारी विभाग का नंबर देखा। गाँव में अवैध शराब बनती थी और उसी शराब में कई घर डूबते थे। उसने फोन कर दिया। छापा पड़ा। लोग पकड़े गए। लेकिन असली अपराधी वह बन गई। गाँव के चौपाल पर ठाकुर तलवार सिंह गरजा, "यह लड़की गाँव की इज्जत बेच आई! इसे सबक सिखाना पड़ेगा!"

भोंदू पंडित ने तिलक ठीक करते हुए कहा, "जात भूल गई है.. इसे याद दिलाना होगा।" बुद्धज्योति ने पहली बार खुलकर कहा, "इज्जत शराब में नहीं डूबती, साहब.. इज्जत चुप रहने में डूबती है।" उस दिन से गाँव उसका दुश्मन हो गया। रात में घर पर पत्थर फेंके गए। एक बार रास्ते में घेरकर जान से मारने की कोशिश हुई। पुलिस केस भी उसी पर लाद दिया गया। पिता थककर बोले, "बिटिया, लड़ाई छोड़ दे..जिनके लिए लड़ रही है, वही साथ नहीं देंगे।"

बुद्धज्योति की आवाज़ भारी थी, "बाबा, हम किसी के लिए नहीं.. अपने होने के लिए लड़ रहे हैं।" कॉलेज पहुँची तो दुनिया और बड़ी लगी, पर भेदभाव भी उतना ही बड़ा। क्रिश्चियन स्कूल में उसे स्कर्ट पहनने को कहा गया। उसने साफ कहा, "मेरे शरीर पर मेरा हक है। ड्रेस आपकी हो सकती है, इज्जत मेरी है।" प्रबंधन ने दबाव डाला। वह उठी और बोली, "शिक्षा अगर आत्मसम्मान छीन ले, तो वह ज्ञान नहीं, गुलामी है।" और कॉलेज छोड़ दिया।

लखनऊ में उसकी मुलाकात हुई निहारिका से। निहारिका ने पूछा, "तू इतनी लड़ती क्यों है?" बुद्धज्योति मुस्कुराई, "क्योंकि चुप रहने से कुछ नहीं बदला।" धीरे-धीरे वह आंदोलनों का चेहरा बन गई। उसने सावित्रीबाई फुले, फातिमा शेख, रमाबाई अंबेडकर और फूलन देवी को अपना गुरु माना। उसने बहुजन श्रमण परम्परा के पथ को चुना। वह कहती, "हमारी लड़ाई सिर्फ अधिकार की नहीं, पहचान की है।"

एक दिन गाँव लौटी तो देखा, महादलित बस्ती में आग लगी थी। घर जलाए गए थे। औरतें रो रही थीं। चिरैय्या नाउन ने रोते हुए कहा, "दीदी, हमरी बिटिया को उठा ले गए.. कौन सुनता है हमारी?" बुद्धज्योति का गला भर आया, "कानून है.. पर न्याय नहीं। हमें खुद आवाज़ बनना होगा।" उसने सभा बुलाई। भीड़ में कुछ लोग फुसफुसा रहे थे, "ये लड़की बहुत बोलती है.. इसे चुप कराओ।" तभी एक आदमी खड़ा हुआ, "अंबेडकर भी क्या कर गए? सब राजनीति है!" भीड़ में सन्नाटा।

बुद्धज्योति ने गहरी सांस ली, "अंबेडकर कोई भगवान नहीं थे.. वो रास्ता थे। अगर हम रास्ता छोड़ देंगे, तो मंज़िल खुद हमें छोड़ देगी।" कुछ लोग फिर भी भड़काने लगे, "सब नेता धोखेबाज़ हैं! सब मिशनरी दलाल हैं!" बुद्धज्योति ने सख्ती से कहा, "गलत लोग हर जगह हैं, पर विचार गलत नहीं होता। अगर कुछ लोग भ्रष्ट हैं, तो क्या हम न्याय का सपना भी छोड़ दें?" भीड़ में पहली बार सहमति की आवाज़ उठी।

इसी बीच उसकी मुलाकात हुई शांतिलेखा से, जो कि एक थेरी बौद्ध भिक्खुनी हैं। उन्होंने कहा, "क्रोध आग है, बुद्धज्योति.. इसे प्रकाश बनाओ।... अप्प दीपो भव।" बुद्धज्योति ने पूछा, "कैसे?" शांतिलेखा मुस्कुराईं, "ज्ञान से। संगठन से। करुणा से।" वह पढ़ती रही, लड़ती रही, गिरती रही, पर रुकी नहीं। लखनऊ विश्वविद्यालय से खेल में चयन हुआ, राज्य स्तर पर खेली। फिर वही लड़की, जो खेतों में फसल ढोती थी, डॉक्टरेट कर गई।

एक दिन पेरियार प्रज्ञा ने मंच से पूछा, "तुम्हारी असली पहचान क्या है?" बुद्धज्योति ने जवाब दिया, "मैं महादलित नहीं... मैं मनुष्य हूँ और जब तक हर औरत सुरक्षित नहीं, तब तक मेरी डिग्री बेकार है।" अंबेडकर की जितनी प्रतिज्ञाएं और पेरियार के जितने प्रश्न हैं, उतनी ही उम्र तक जीवित रहीं रमाबाई अंबेडकर। मतलब लगभग 37 बरस जीवित थीं उसकी तिसरी शिक्षिका। आज वह 37 साल की है। उसकी आवाज़ अब सिर्फ गाँव तक सीमित नहीं, शहर, विश्वविद्यालय, मीडिया तक गूंजती है। दूरदर्शन के कार्यक्रमों से लेकर खेतों की मेड़ तक, हर जगह उसका संघर्ष दर्ज है। लेकिन वह आज भी वही लड़की है, जो नहर में कूदती थी, पेड़ों से छलांग लगाती थी।

एक शाम वह अपने गाँव के उसी पेड़ के नीचे बैठी थी।बहन फुलिया ने पूछा, "दीदी, क्या बदला?" बुद्धज्योति ने दूर आसमान की ओर देखा, "थोड़ा-थोड़ा.. और बहुत कुछ बाकी है।" भाई घोंचूराम बोला, "डर नहीं लगता?" वह मुस्कुराई, "डर लगता है.. पर उससे बड़ा सपना है।" आसमान में धूप ढल रही थी। लेकिन बुद्धज्योति के भीतर एक नई सुबह उग रही थी। वह धीरे से बुदबुदाई, "हम राख नहीं हैं.. हम आग हैं और आग कभी दबती नहीं, बस सही समय पर जलती है।"

सारनाथ
बुद्ध की प्रथम उपदेश स्थली से विश्व धरोहर तक

सुनील कुमार महला
पिथौरागढ़, उत्तराखंड

सारनाथ के विश्व धरोहर बनने के साथ ही बौद्ध धर्म के चार प्रमुख तीर्थस्थलों में से तीन-लुंबिनी (नेपाल), महाबोधि मंदिर, बोधगया (बिहार) और अब सारनाथ (उत्तर प्रदेश) विश्व धरोहर सूची में शामिल हो चुके हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि इससे भारत की पहचान बौद्ध धर्म की जन्मभूमि और उसके प्रमुख केंद्र के रूप में और मजबूत हुई है। प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआइबी) के अनुसार, सारनाथ को वर्ष 1998 में यूनेस्को की संभावित विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया था। इसके बाद जनवरी 2025 में इसका औपचारिक नामांकन प्रस्ताव भेजा गया।

हाल ही में 25 जुलाई 2026 को दक्षिण कोरिया के बुसान में आयोजित यूनेस्को की 48वीं विश्व धरोहर समिति की बैठक में सारनाथ को विश्व धरोहर स्थल का दर्जा प्रदान किया गया है। वास्तव में, यह उत्तर प्रदेश ही नहीं, बल्कि पूरे भारत के लिए गर्व और सम्मान का विषय है। इसके साथ ही सारनाथ भारत का 45वाँ यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल बन गया है। बहरहाल, यहां पाठकों को बताता चलूं कि सारनाथ वही पवित्र स्थान है जहाँ भगवान गौतम बुद्ध ने बोधगया में ज्ञान प्राप्त करने के बाद अपना प्रथम उपदेश, अर्थात् धर्मचक्र प्रवर्तन, दिया था। यहीं स्थित सम्राट अशोक का सिंह स्तंभ भारत का राष्ट्रीय प्रतीक है तथा हमारे राष्ट्रीय ध्वज का अशोक चक्र भी इसी स्तंभ से प्रेरित है। यूनेस्को ने सारनाथ को सांस्कृतिक मानदंड (iii) और (vi) के अंतर्गत विश्व धरोहर सूची में शामिल किया है। यह सम्मान भारत की समृद्ध बौद्ध विरासत, सांस्कृतिक इतिहास और वैश्विक पहचान को और अधिक सुदृढ़ करता है।

सारनाथ के विश्व धरोहर बनने के साथ ही बौद्ध धर्म के चार प्रमुख तीर्थस्थलों में से तीन-लुंबिनी (नेपाल), महाबोधि मंदिर, बोधगया (बिहार) और अब सारनाथ (उत्तर प्रदेश) विश्व धरोहर सूची में शामिल हो चुके हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि इससे भारत की पहचान बौद्ध धर्म की जन्मभूमि और उसके प्रमुख केंद्र के रूप में और मजबूत हुई है। प्रेस सूचना ब्यूरो (पीआइबी) के अनुसार, सारनाथ को वर्ष 1998 में यूनेस्को की संभावित विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया था। इसके बाद जनवरी 2025 में इसका औपचारिक नामांकन प्रस्ताव भेजा गया। लगभग 18 महीने तक चली तकनीकी समीक्षा, विशेषज्ञ बैठकों और आईसीओएमओएस के निरीक्षण के बाद विश्व धरोहर समिति ने बुसान में इसे विश्व धरोहर सूची में शामिल करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया। इस उपलब्धि पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय संस्कृति मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत तथा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए देशवासियों को बधाई दी है। उनका मानना है कि यह सम्मान भारत की सांस्कृतिक विरासत को विश्व स्तर पर नई पहचान दिलाने वाला ऐतिहासिक कदम है।सारनाथ को विश्व धरोहर का दर्जा मिलने से जापान, थाईलैंड, श्रीलंका, म्यांमार, कंबोडिया, वियतनाम, दक्षिण कोरिया और मंगोलिया जैसे बौद्ध देशों के साथ भारत के सांस्कृतिक संबंध और मजबूत होंगे। यह उपलब्धि भारत की सांस्कृतिक कूटनीति, विरासत संरक्षण तथा वैश्विक स्तर पर उसकी साख को भी नई ऊँचाई प्रदान करेगी। उल्लेखनीय है कि पिछले वर्ष पेरिस में आयोजित यूनेस्को की 47वीं विश्व धरोहर समिति की बैठक में 'भारत के मराठा मिलिट्री लैंडस्केप्स' को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया था। वर्तमान में 45 विश्व धरोहर स्थलों के साथ भारत विश्व में छठे तथा एशिया-प्रशांत क्षेत्र में दूसरे स्थान पर है। विश्व धरोहर सम्मेलन, 1972 को अब तक 196 देशों ने स्वीकार किया है।

अंत में यहां पर यदि हम सरल शब्दों में कहें तो सारनाथ का यूनेस्को विश्व धरोहर सूची में शामिल होना भारत की सांस्कृतिक विरासत को मिला एक ऐतिहासिक वैश्विक सम्मान है। इससे देश में पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा, स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर बढ़ेंगे और इस अमूल्य धरोहर के संरक्षण को भी मजबूती मिलेगी। अब आवश्यकता इस बात की है कि भारत के अन्य महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों को भी विश्व धरोहर सूची में शामिल कराने के लिए निरंतर प्रयास किए जाएँ, ताकि हमारी समृद्ध विरासत को विश्व पटल पर और अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हो सके।

साथ ही, यह उपलब्धि सरकार, पुरातत्व विभाग, स्थानीय प्रशासन और आम नागरिकों की जिम्मेदारियों को भी बढ़ाती है। विश्व धरोहर का दर्जा मिलने के बाद सारनाथ में पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, आधुनिक पर्यटक सुविधाओं, डिजिटल सूचना व्यवस्था, यातायात प्रबंधन तथा विरासत संरक्षण के उच्चतम अंतरराष्ट्रीय मानकों का पालन सुनिश्चित करना आवश्यक होगा। यदि विकास और संरक्षण के बीच संतुलन बनाकर सारनाथ को एक आदर्श सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जाता है, तो यह न केवल भारत की गौरवशाली विरासत को सुरक्षित रखेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए ज्ञान, संस्कृति और मानवीय मूल्यों की अमूल्य धरोहर के रूप में सदैव प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

जब मूर्तियाँ बोलती हैं

प्रकृतिमेल डेस्क

इतिहास साक्षी है की महान सभ्यताओं को अमर बनाने में एक मूर्तिकार की भूमिका सबसे बड़ी रही है मील का पत्थर बनी है अजंता एलोरा की गुफाएं कोणार्क सूर्य मंदिर भारत के दक्षिण की विभिन्न अद्भुत कृतियां सदियों से हमें भारतीय कला की ऊंचाइयों का अनुभव करा रही हैं इन रचनाओं ने सिद्ध किया है कि शिल्प केवल कला नहीं बल्कि देश की अंतर्मुखी आत्मा का चेहरा है उसका दर्पण है।

विश्वास नहीं होता की मूर्तियों में कोई इस प्रकार जान फूंक दे की मूर्ति भी जीवन तो होकर बोलने लगती है।

कहते हैं कि गुरु जब प्रेरणापुंज बनाकर शिष्य की साधना का स्वीकारते हैं और अपनी दैनिक कृपा से उसकी आत्मा को आलोकित करते हैं। तब शिष्य के अंतर मन की वही सच्ची लगन उसकी कलम में ढल जाती है गुरु के इसी दिव्या स्पर्श और आशीर्वाद का चमत्कार है कि शिल्पकार की बनाई गई वह मूर्ति भी जीवन तो होकर स्वयं बोलने लगती है।

एक अच्छा शिल्पकार मूर्तिकार का उद्देश्य केवल पत्थर या मिट्टी को जाकर देना नहीं होता बल्कि अपनी कला के माध्यम से भाव विचार संस्कृति और आत्मा को अभिव्यक्त करना होता है।

एक अच्छा मूर्तिकार गुरु की साधना के बल पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति से निर्जीव वस्तु में भी जीवन भाव और ऐसा आकर्षण उत्पन्न करता है की मूर्ति में छपी आकृति भी बोलने लगती है लगता है कि जैसे अपने तरह से भाव से सौंदर्य की सृष्टि कर रहा है इसी तब से वह आकृति को केवल घटना नहीं बल्कि इसमें छिपेड़े देवत्व को प्रकट करता है।

एक अच्छा मूर्तिकार अब आने वाली पीढ़ियां और विरासत को बनाए रखने के लिए भारतीय मंदिर कला मूर्तियां हस्तशिल्प का माध्यम होकर अपना संदेश देता पहुंचना है। अजंता एलोरा खजुराहो और देश के वीर सपूतों की शिल्प कला केवल कल ही नहीं बल्कि युगों युगों की चेतन को सार्थक करता है।

एक अच्छा मूर्तिकार अपनी भावनाओं के भाव इस प्रकार अंकुरित करता है जैसे भक्ति वीरता मातृत्व प्रेम त्याग और करुणा स्वयं में जीवित हो उठे। एक अच्छे शिल्पकार की सोच अपनी कला से मानव को संवेदनशील बनाकर समाज को सौंदर्य बोध नैतिकता और आध्यात्मिकता की प्रेरणा के लिए उत्साहित करती है।

अपनी मेहनत और कला से प्रकृति के सौंदर्य को उसकी सुचिता और आनंद को इस प्रकार से करता है कि जैसे संगीत के साथ

सपना घुल मिल गए हो, चारों ओर आनंद ही आनंद हो, पक्षियों की कल कलाहट हो, एक अच्छा मूर्तिकार अपनी कला को व्यवसाय नहीं मानता बल्कि साधना मानता है। मूर्तिकार का काम केवल मूर्ति बनाना नहीं बल्कि मूर्ति में प्राण फूंक देना होता है अपने हाथों से अपनी कलाइयों और उंगलियों से मूर्ति की आत्मा को आकार देता है उसे बोलने के लिए और देता है।

ऐसी ही इन सभी मूल्यों पर खरा उतरने के लिए कई स्थानों पर जिनकी साधना तप और त्याग को अपना सब कुछ न्योछावर कर मूर्तियों के रूप में उतर कर जान समूहों की प्रशंसा और वही करते पाया। वह एक साधारण सा दिखने वाला चेहरे पर सफेद दाढ़ी लेकिन माथे पर दूरदर्शिता वाला तेज आनंद देने वाला भाव, गंभीर व गुरु के प्रति आत्मीय श्रद्धा और सच्चा साधक वाला भाव मुस्कुराता चेहरा अनुभवी क्वालिफाइड शिल्पकार अवधेश कुमार खरे।

हम शिल्पकार अवधेश कुमार खरे की प्रभावशाली प्रतिभा एवं व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित थे और संकोच के साथ एक प्रश्न भी किया।

बुरा ना माने तो एक जिज्ञासा आपसे कहूं उन्होंने भी आत्मीयता भाव से सिर हिला कर सहमति जता दी आप मूर्तिकार के रूप में तन मन गुरु के प्रति सच्ची लगन और साधना के साथ इन मूर्तियों में अपना सर्वस्व लुटा रहे हैं ना खाने की चिंता ना घर परिवार का ध्यान आपकी कला में निखार है आपकी उंगलियां मूर्ति को ऐसे तरसती हैं कि वह जीवन तो होकर बोलने लगती है और फिर क्या मिलता होगा अच्छा होता कोई और व्यवसाय करते पैसा और शोहरत आपके आगे पीछे होती इतना सुनकर चेहरा लाल हो गया आंखों से आंसू बहने को थे हमें उन्हें लगी गहरी ठेस और अपनी गलती का एहसास तथा अपनी जिज्ञासा पर पछतावा था।

अपने भाव को अंदर ही अंदर समझते हुए उन्होंने बहुत सहज बोलना शुरू किया...

आप क्या समझते हैं कि मैं मूर्तिकार अवधेश कुमार खरे पिछले 20 से 30 वर्षों से

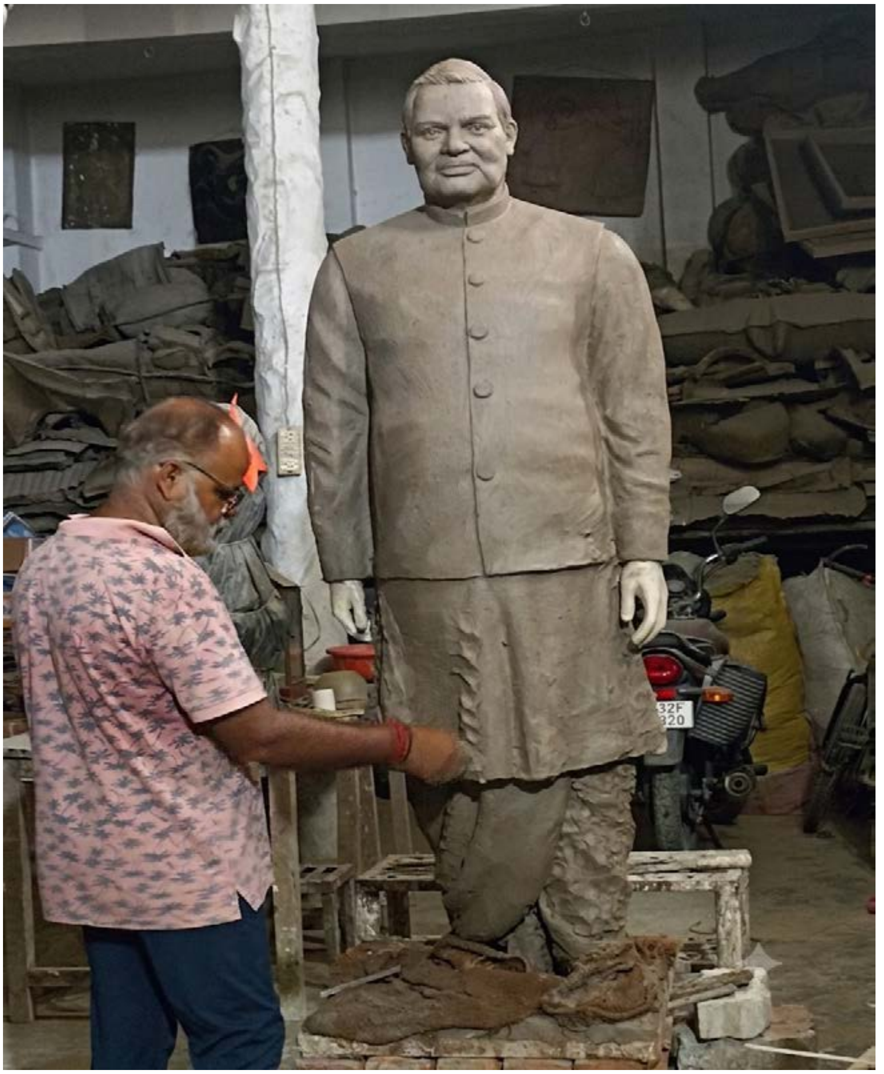

केवल व्यवसाय के लिए मूर्तियां बनाता हूं यह सच है कि मुझे घर चलाने के लिए व्यवसाय भी चाहिए लेकिन यह भी बता दूं कि मेरा उद्देश्य यह कदापि नहीं।

एक मूर्तिकार एक सड़क के रूप में अपनी मूर्ति में गहरी त्याग से गहरी लगन से उसमें प्राण भर कर उसे जीवन तो बना देना चाहता है वह अपनी कला को पहचान देकर उसे युगों युगों तक अमर बनाना चाहता है मूर्तिकार केवल हाथों से कार्य करने वाला निर्माता नहीं बल्कि वह संवेदनाओं कल्पनाओं और संस्कृति का निर्माता होता है। जहां सामान्य जन्म मूर्ति देखा है वहां मूर्तिकार एक दिव्या प्रतिभा का दर्शन करता है उसके हाथ उसकी उंगलियां उसके तप धैर्य और साधना के प्रतीक होते हैं उसके गुरु की दिव्या कृपा होती है।

इतिहास साक्षी है की महान सभ्यताओं को अमर बनाने में एक मूर्तिकार की भूमिका सबसे बड़ी रही है मिल का पत्थर बनी है। अजंता एलोरा की गुफाएं कोणार्क सूर्य मंदिर भारत के दक्षिण की विभिन्न अद्भुत कृतियां सदियों से हमें भारतीय कला की ऊंचाइयों का अनुभव कर रही हैं इन रचनाओं ने सिद्ध किया है कि शिल्प केवल कल नहीं बल्कि देश की अंतर्मुखी आत्मा का चेहरा है उसका दर्पण है। मूर्तिकार हमेशा धैर्य और अनुशासन एवं लगातार अध्ययन से असंभव को भी संभव बनाता है।

एक मूर्तिकार हमेशा चाहता है कि हम अपनी कृतियों से देश की पारंपरिक संस्कृति कला और विरासत को बनाएं रखने के लिए भविष्य के शिल्पकारों मूर्तिकारों को भी तैयार करें जिसके लिए हम अपने जूनियर सहयोगियों को भी आगे बढ़ा रहे हैं उनको प्रशिक्षित कर रहे हैं।

यदि देश के प्रधानमंत्री दूर दृष्टि रखते हुए देश को समृद्ध बनाना चाहते हैं तो मैं एक मूर्तिकार अपनी पारंपरिक कलाओं सांस्कृतिक विरासत और भारत की आध्यात्मिकता और मूर्तिकार वह शिल्पकार का सम्मान और उनकी

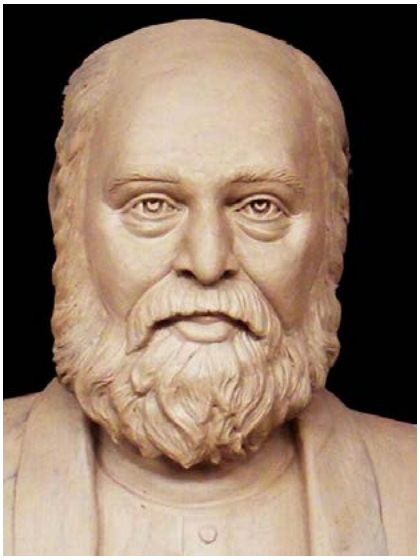

साधना को पहचान मिले के लिए अपनी सच्ची साधना से पीछे क्यों रहूं।

एक मूर्तिकार केवल मूर्तियां को ही नहीं तरसता व संस्कृति की आत्मा को आकार देकर कल के माथे पर अमरता लिखता है रचनात्मक मूर्तियों में धड़कन भर देता है और तब मूर्तियां भी जीवित होती हैं गुरुदेव की कृपा और आशीर्वाद उनमें प्राणों का संरक्षण होने लगता है गौतम मूर्तियां जीवित होकर बोलने लगते हैं मूर्तिकार समय से कभी नहीं हारता उसकी मूर्तियां युगों तक बोलती रहती हैं।

जहां कल साधन बन जाए
वहां समय भी शीश झुकाता है
मूर्तिकार के कर कौशल से
पत्थर अमर हो जाता है

संघर्ष का बदलता चेहरा: प्रतिरोध की नई भाषा

डॉ. विजय गर्ग
सेवानिवृत्त प्रिंसिपल,
मलोट, पंजाब

आज का संघर्ष केवल सरकारों के खिलाफ नहीं, बल्कि सामाजिक बुराइयों, पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता, शिक्षा, स्वास्थ्य, डिजिटल अधिकार, जलवायु परिवर्तन और मानवाधिकार जैसे विषयों पर भी केंद्रित है। नई पीढ़ी अपने विचारों को कला, संगीत, कविता, फिल्मों, स्ट्रीट थिएटर और डिजिटल कंटेंट के माध्यम से भी व्यक्त कर रही है। यह प्रतिरोध का अधिक रचनात्मक और संवादात्मक स्वरूप है। संघर्ष की नई भाषा में संवाद का महत्व भी बढ़ा है।

मानव का इतिहास संघर्षों का इतिहास भी है। अधिकारों की प्राप्ति, सामाजिक न्याय, समानता, स्वतंत्रता और सम्मान के लिए हर युग में संघर्ष किए हैं। संघर्ष के उद्देश्य तो लगभग वही रहे हैं, लेकिन उनके स्वरूप, तरीके और अभिव्यक्ति की भाषा लगातार बदलती रही है। कभी तलवारें संघर्ष का प्रतीक थीं, फिर कलम ने क्रांति की मशाल थामी, उसके बाद सड़कें और जनआंदोलन प्रतिरोध की पहचान बने और आज सोशल मीडिया, डिजिटल अभियान तथा जनमत नई प्रतिरोध-भाषा के रूप में उभर रहे हैं।

प्राचीन समय में संघर्ष मुख्यतः शारीरिक शक्ति और युद्ध के माध्यम से लड़े जाते थे। राज्यों के विस्तार, सत्ता परिवर्तन और सामाजिक अधिकारों की लड़ाई हथियारों के बल पर होती थी। लेकिन जैसे-जैसे समाज विकसित हुआ, विचारों ने हथियारों की जगह लेनी शुरू की। संतों, समाज सुधारकों और विचारकों ने शब्दों के माध्यम से समाज में परिवर्तन की नींव रखी। कबीर, गुरु नानक देव, महात्मा ज्योतिबा फुले, डॉ. भीमराव आंबेडकर और महात्मा गांधी जैसे व्यक्तित्वों ने यह सिद्ध किया कि विचारों की शक्ति किसी भी हथियार से अधिक प्रभावशाली हो सकती है। भारत का स्वतंत्रता संग्राम इस परिवर्तन का सबसे बड़ा उदाहरण है। महात्मा गांधी ने

सत्याग्रह और अहिंसा को प्रतिरोध की नई भाषा बनाया। नमक सत्याग्रह, असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन ने यह दिखाया कि बिना हिंसा के भी साम्राज्य की नींव हिलाई जा सकती है। इस दौर में संघर्ष का अर्थ केवल विरोध नहीं था, बल्कि नैतिक शक्ति, धैर्य और जनसहभागिता भी था। स्वतंत्रता के बाद संघर्षों का स्वरूप सामाजिक और आर्थिक मुद्दों की ओर बढ़ा। किसानों, मजदूरों, विद्यार्थियों, महिलाओं, दलितों और आदिवासियों ने अपने अधिकारों के लिए संगठित आंदोलनों का सहारा लिया। धरने, प्रदर्शन, रैलियाँ, भूख हड़ताल और ज्ञापन लोकतांत्रिक प्रतिरोध के सामान्य माध्यम बने। इन आंदोलनों ने अनेक नीतियों और कानूनों को प्रभावित किया।

इक्कीसवीं सदी में तकनीक ने संघर्ष की भाषा को पूरी तरह बदल दिया है। आज एक हैशटैग लाखों लोगों को जोड़ सकता है। सोशल मीडिया पर शुरू हुआ अभियान कुछ ही घंटों में वैश्विक चर्चा का विषय बन सकता है। डिजिटल याचिकाएँ, ऑनलाइन हस्ताक्षर अभियान, वीडियो संदेश, ब्लॉग और स्वतंत्र पत्रकारिता ने आम नागरिक को भी अपनी आवाज़ उठाने का मंच दिया है। अब प्रतिरोध केवल सड़कों तक सीमित नहीं है, वह मोबाइल स्क्रीन और इंटरनेट के माध्यम से दुनिया के हर कोने तक पहुँच सकता है।

हालाँकि इस नई भाषा के अपने लाभ और चुनौतियाँ दोनों हैं। एक ओर सूचना तेजी से फैलती है, लोगों को संगठित करना आसान हो गया है और हाशिए पर खड़े लोगों की आवाज़ भी व्यापक स्तर तक पहुँच सकती है। दूसरी ओर, फर्जी खबरें, भ्रामक सूचनाएँ, ट्रोल संस्कृति और डिजिटल ध्रुवीकरण ने संघर्ष की विश्वसनीयता को भी चुनौती दी है। कई बार वास्तविक मुद्दों की जगह भावनात्मक या भ्रामक अभियानों को अधिक महत्व मिल जाता है। आज का संघर्ष केवल सरकारों के खिलाफ नहीं, बल्कि सामाजिक बुराइयों, पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता, शिक्षा, स्वास्थ्य, डिजिटल अधिकार,

जलवायु परिवर्तन और मानवाधिकार जैसे विषयों पर भी केंद्रित है। नई पीढ़ी अपने विचारों को कला, संगीत, कविता, फिल्मों, स्ट्रीट थिएटर और डिजिटल कंटेंट के माध्यम से भी व्यक्त कर रही है। यह प्रतिरोध का अधिक रचनात्मक और संवादात्मक स्वरूप है। संघर्ष की नई भाषा में संवाद का महत्व भी बढ़ा है। पहले विरोध का अर्थ केवल टकराव माना जाता था, लेकिन अब बातचीत, सार्वजनिक विमर्श, जनभागीदारी और नीति-निर्माण में नागरिकों की भागीदारी को भी परिवर्तन का प्रभावी माध्यम माना जा रहा है। लोकतंत्र में स्वस्थ संवाद किसी भी समाज को अधिक मजबूत बनाता है।

हालाँकि यह भी सच है कि हर संघर्ष सकारात्मक नहीं होता। जब प्रतिरोध हिंसा, नफरत, सार्वजनिक संपत्ति के नुकसान या सामाजिक विभाजन का रूप ले लेता है, तब उसका मूल उद्देश्य कमजोर पड़ जाता है। इसलिए किसी भी आंदोलन की सफलता केवल उसकी आवाज़ की ऊँचाई से नहीं, बल्कि उसके उद्देश्य, नैतिकता और समाज पर पड़ने वाले सकारात्मक प्रभाव से तय होती है। आने वाले वर्षों में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), डेटा विश्लेषण और डिजिटल संचार संघर्ष की भाषा को और अधिक बदलेंगे। नागरिकों की भागीदारी के नए तरीके सामने आएँगे, लेकिन साथ ही सूचना की सत्यता, जिम्मेदारी और नैतिकता पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो जाएगी।

अंततः, संघर्ष का चेहरा बदल सकता है, उसके साधन बदल सकते हैं और उसकी भाषा भी बदल सकती है, लेकिन उसका मूल उद्देश्य वही रहता है- अन्याय का विरोध, समानता की स्थापना और बेहतर समाज का निर्माण। यदि प्रतिरोध में संवेदनशीलता, विवेक, सत्य और संवाद शामिल हों, तो वह केवल विरोध नहीं, बल्कि परिवर्तन की सबसे शक्तिशाली शक्ति बन जाता है। आज की दुनिया को ऐसे ही संघर्षों की आवश्यकता है, जो समाज को तोड़ें नहीं, बल्कि जोड़ें; जो नफरत नहीं, बल्कि न्याय और मानवता का मार्ग प्रशस्त करें।

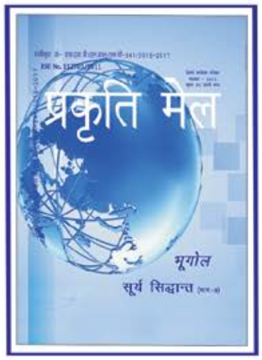

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका
(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)________________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता____

________________________ राज्य____________ पिन____________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेलः________________________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड- 226022, उ0 प्र0।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें। किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।

नि:शुल्क ई-मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट - www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

- प्रकृति के साथ गतिमान होकर व्यक्ति स्वयं सध जाता है उसके बाद उससे जो निर्माण होता है वही उसका धन है जो स्वतः उसके नाम अंकित होता जाता है।

- सही मिलान से ही किसी जीव पदार्थ का पूर्ण निर्माण हो सकता है जो प्रकृति की हर इकाई स्वसाधना से पूर्ण कर रही है।

- रहस्य वह रश्मी है जो हरियाली स्थापित करने का यत्न करती है। अर्थात् कोई भी रहस्य पदार्थ वह पर्दा है जो उसके विकास की आवश्यकता है।

- सृष्टि का निर्माण तो अपने जीवन के उद्देश्य को जानते हूए वास्तविक गुणों का विकास करके ही पूरा किया जा सकता है।

- विज्ञान की सही जानकारी से जीवन को सरल बनाया जा सकता है सृष्टि का निर्माण नहीं किया जा सकता।

- जीवन तो पूर्ण सुरक्षित वर्तमान को देखने और उसमें जीने में ही है क्योंकि जो बीत गया वह दुबारा नहीं आता और जो आनेवाला है उसे हम बदल नहीं सकते।

- हम जिस व्यक्ति या वस्तु के बारे में सोचते हैं हमारे अंदर उसके अनुसार खेती होने लगती है जिससे हमारी जमीन पर उसके बीज का उत्पादन होने लगता है।

- हमारे वास्तविक लक्ष्य पर पहुँचने के लिये एक ही मार्ग है जिसके दोनों तरफ परिस्थिति रूपी खाई बनी होती है जो हमे अपने मार्ग पर चलने के लिए सचेत करती है परन्तु हम उस खाई को संसाधनों से भर कर दूसरा मार्ग तैयार करने की कोशिश करते हैं और अपने वास्तविक लक्ष्य से भटक जाते हैं।

- हमारी मूल प्रवृत्ति चुम्बक की तरह होती है जो की हमारे वास्तविक निर्माण में जिन अवयवों की आवश्यकता होती उसे स्वयं अपनी ओर खींच लेता है यही निर्माण की अप्राकृतिक प्रक्रिया है जब हम अच्छे बुरे के चुनाव में पड़ जाते हैं तो वहीं हामरा निर्माण रूक जाता है और हम अपरिपक्व अवस्था में रह जाते हैं।

जीवन की जीत

स्ववजूद का जीवन जीने से अपनी यात्रा पूर्ण होती है जिससे स्वसूर्य पराग बन जाता है जो इच्छा मुक्त कर देता है यही जीवन की जीत है।

फोटो : एआई

अशोक मानव

रूकावट स्वभाव के विपरीत उत्पन्न होने वाली नकारात्मक ऊर्जा होती है जो स्वाभाविक विकास के लिए अप्राकृतिक होती है। पर यही रूकावट बिखरी हुई शक्ति को केन्द्रित कर देती है जिससे स्वभाव का पूर्ण विकासा हो पाता है। जिसे प्रकृति कहते हैं।

आगे बढ़ो रूकावट ही पूर्ण विजय

प्रकृति को आगे बढ़ाने की क्रिया को प्रकृति कहते हैं और रूकावट पैदा करने वाली नकारात्मक ऊर्जा की अप्रकृति कहते हैं। जीवन प्रकृति का सृजन है। जिसे निरन्तर विकासोन्मुख करने की क्रिया प्रकृति करती है। यह क्रिया सूर्य प्रकाश पड़ने के कारण निरन्तर होता रहता है। प्रकाश से स्वभाव का विकास होता है और ऐसे विकास का मार्ग दिखायी पड़ता है। जिस स्वभाव का तत्व पदार्थ और जीव होता है। प्रकाश पड़ने के बाद उसी गुण की ऊर्जा को उत्सर्जित करता है। जो अपनी प्रकृति के गुण का सहयोग करता है। इसी प्रकार तत्व पदार्थ जीव की गुणात्मक वृद्धि होती है। तत्व पदार्थ जीव की उत्पत्ति गुण विशेष को उत्पन्न करने के लिए होती है। प्रकाश का एक गुण होता है। तत्व पदार्थ जीव को प्रकाशित कर उसका विकास करना, गुणात्मकता का भेद अलग-अलग प्रवृत्ति होने के कारण होता है। प्रकाश को रोकने और ले पाने की क्रिया जल द्वारा निर्मित आत्मिक निर्माण से होती है। आत्मा तत्व पदार्थ जीव सभी में होता है। जीव में आत्मा का निर्माण सबसे पहले होता है। जिसमें जीव प्रकाश रूकता है। वही शरीर का विकास करता है और प्रकृति के अनुसार प्रकृति में गुण छोड़ता है। तत्व पदार्थ में आत्मा उसके केन्द्र में होती है जो प्रकाश को अपनी तरफ आकर्षित करके अपने गुणों का विकास करता है।

वह गुण प्रकृति निर्माण में अपना सहयोग करता है। प्रकृति के सहयोग की ऊर्जा उसका विकास करती है पर प्रकृति के विपरित गुण की ऊर्जा रूकावट पैदा करती है। यह ऊर्जा विकास में पर्दा का कार्य करती है जिससे विकास का मार्ग दिखायी नहीं पड़ता है। जो जीवन में अंधेरे का कार्य करता है। प्रकृति का अंधेरा सृजन की आवश्यकता होती है। पर यह अंधेरा जीवन की बाधा होती है। जो प्रकाश से खत्म हो पाती है। सूर्य प्रकाश तो निरन्तर पड़ता रहता है। पर

अपने अन्दर का प्रकाश अनेकों विषयों में बंटा होता है। पर जब रूकावट आती है तब जीव अनेकों विषयों से हट कर रूकावट दूर करने के लिए केन्द्रित हो जाता है। जिससे उसका प्रकाश एक कार्य में लग जाता है और रूकावट धुँआ बनकर उड़ जाती है। मन का केन्द्रीयकरण होने के कारण प्रकृति की गुणात्मक ऊर्जा तीर की तरह अपने लक्ष्य का भेदन करती है और विषयात्मक विजय प्राप्त हो जाती है।

पूरे बह्माण्ड में हर जगह ऊर्जा विद्यमान रहती है। ऊर्जा सूर्य प्रकाश पड़ने से तत्व पदार्थ के परिवर्तित रूप से निकलती है। व्यक्ति द्वारा जो ऊर्जा भावना से निकलती है वह किसी ऊर्जा के सम्पर्क में आने के बाद आगे बढ़ती है जो व्यक्ति की ऊर्जा रोकने की क्रिया करती है। जिसका घर्षण भावात्मक ऊर्जा से होता है। स्वगुणीय ऊर्जा होती है तो विकास (नये गुण) का निर्माण होता है जिसका एहसास अच्छा होता है। विपरीत गुण की ऊर्जा होती है तो उसका एहसास अच्छा नहीं होता जिससे शारीरिक पीड़ा पैदा होती है। यह प्राकृतिक क्रिया होती है। जीवन में सूर्य प्रकाश होता है। जो जीव प्रकाश के रूप में कार्य करता है। शरीर के अन्दर पैदा होने वाली गति रूप में ऊर्जा निकलती है जो विपरीत गुण की ऊर्जा को जलाकर खत्म कर देती है। यही क्रिया सहयोगी गुण से घर्षण करने के बाद अवगुण को जलाकर और शक्तिशाली हो जाती है। दोनों के घर्षण के बाद जो तीसरा गुण बनता है वह और आगे बढ़ता है जिसकी श्रंखृला आगे बढ़ती रहती है। जो अन्तिम विजय पर पहुंचकर व्यक्ति को इच्छित फल देने लगती हैं इस प्रकार प्रकृति में अवगुण जलकर खत्म होता रहता है और गुण का निर्माण होता रहता है। सूर्य प्रकाश अवगुण को जला कर खत्म करता है और गुणात्मक पदार्थ का निर्माण करता है। जीव में सूर्य का वही परम प्रकाश का अंश होता है। जो इस क्रिया में भाव ऊर्जा छोड़कर कार्य करता है। इसमें सभी जीव पदार्थ का योगदान है जो जिस भाव का गुण छोड़ता है उसी गुण की ऊर्जा को बढ़ता है। जीवन प्रकृति का विज्ञान है। इसलिए इसकी हर क्रिया का विज्ञान की तरह परिणाम निकलता है। इसे लोग नहीं जानते है जब कभी वैज्ञानिकों द्वारा कोई ऐसी मशीन बनाई ली जायेगी जो सूक्ष्म उर्जा की गुणात्मक पहचान कर सके तो हर व्यक्ति इस विज्ञान को जान पायेगा। आप सब लोग अपने वास्तविक विज्ञान को पहचाने और प्रकृति में सद्गुणीय भाव की ऊर्जा छोड़ जिससे समाज में व्याप्त समस्मत बुराईयां खत्म हो। मानव ऊर्जा में बहुत ताकत होती है यदि दुनिया के सभी मानव एक निश्चित समय, निश्चित भाव छोड़े तो किसी भी घटना को अपने इच्छानुसार परिवर्तित कर सकते है।

जीवन में आने वाली रूकावट से मानव को घबराना नहीं चाहिए बल्कि अपनी ईच्छाशक्ति को और प्रबल कर लेना चाहिए। जिससे अपने अन्दर का सारा बल एक निश्चित विषय के लिए कार्य करने लगता है ऐसा होने से अपनी ऊर्जा शक्तिशाली हो जाती है। जो रूकावट को दूर करने के लिए लग जाती है उसका यही बल नकारात्मक ऊर्जा को जलाकर खत्म कर देता है। जिससे रूकावट खत्म हो जाती है। और व्यक्ति जहां जाना चाहता है वही पहुंच जाता है। व्यक्ति धनुष है। भावनात्मक इच्छा (उद्देश्य) उसका तीर है, प्रत्यन्चा रूकावट (विरोधी ऊर्जा) है। प्रत्यन्चा जितना तेज खीची जाती है उतनी तेज तो अपने उद्देश्य की तरफ जाता है। जो लक्ष्य का भेदन करता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि रूकावट के समय ऊर्जा केन्द्रित हो जाती है। जिस प्रकार गुब्बार को जितना तेज दबाया जाता है उतनी तेज उलझता है। ठीक इसी प्रकार रूकावट व्यक्ति की गति को बढ़ा देती है। रूकावट भी एक ऊर्जा होती है जो धीरे-धीरे घर्षण से खत्म हो जाती है। अगर गुब्बारे की हवा निकल जाये तो उछल नहीं पाता है। ठीक उसी प्रकार जब व्यक्ति की इच्छाशक्ति कमजोर पड़ जाती है तो वह उद्देश्य तक नहीं पहुंच पाता है। इसलिए अपने उद्देश्य की इच्छाशक्ति कभी कमजोर नहीं होने देना चाहिए और उद्देश्य की तरफ निरन्तर बढ़ते रहना चाहिए। ऐसा करने से उद्देश्य की विजय अवश्य होती है रूकावट से अपने को कमजोर न करे बल्कि ऐसे अपनी प्रत्यन्चा बना कर लक्ष्य का भेदन करें। विजय अवश्य मिलेगी। ऐसा भी सूरवीर कहते हैं कि बिना चुनौती के लड़ने में मजा नहीं आती है। रूकावट किसी की परीक्षा नहीं होती है। यह नकारात्मक (विरोधी) ऊर्जा होती है जो अहंकार के कारण पैदा हो जाती है कभी खुद से तो कभी अपनो से, इससे व्यक्ति बन जाता है। जो प्रकृति में व्याप्त विपरीत गुण से पैदा हो जाती है। इसे अपने आप की परीक्षा न मानें। बल्कि प्रबल इच्छाशक्ति से इसका सामना करते हुए आगे बढ़ते रहिये। विजय श्री आप को मिलेगी। व्यवहारिक जीवन में भी आप लोग देखे है दर्द का चरम ही उसका अन्त होता है। जैसे नकारात्मक ऊर्जा बढ़ते-बढ़ते फोड़ा बन जाता है पर जब दर्द के चरम पर पहुंच जाता है तो फूट जाता है उसके बाद दर्द का अन्त हो जाता है। रूकावट विजय, प्रकृति-अप्रकृति का स्वाभावित खेल है इसमें भागीदारी भी स्वाभाविक है। साक्षी बनकर इसका सामना करे और अच्छे भाव छोड़ते चले जिससे भविष्य में यह खेल बन्द हो जाये क्योंकि इस खेल का जिम्मेदार भावनात्मक प्रदूषण ही है। इसी के नकारात्मक ऊर्जा का जन्म होता है।

अन्य कोई भी जीव प्रदूषण नहीं छोड़ते है। उनका तो सिर्फ इस्तेमाल किया जाता है। भविष्य में मानव ही अपनी मानसिकता बदलकर इस खेल को रोक सकता। इस विषय पर फिर कभी, अभी तो इतना ही कहना चाहते है कि रूकावट से अपने उत्साह को कम न होने दे। शरीर से उत्साह को बल मिलता है। तो उत्साह से शरीर को बल मिलता हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक है। उत्साह से शरीर में रासायनिक क्रिया होती है जिससे सहयोगी जीवाणु पैदा होते हैं जो कार्य को पूरा करने की ऊर्जा छोड़ते हैं। इस वैज्ञानिकता को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़िये, जीत आप को अवश्य मिलेगी।

प्रश्न हमारे
उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न : दबाव क्या है ?

उत्तर : दबाव प्रकृति की वह वैज्ञानिक क्रिया है जिसमे विषय को पूर्ण करने का कण विज्ञान बनता है।

प्रश्न :अपनी यात्रा कैसे पूर्ण होगी ?

उत्तर : तत्व रसायन का गंधीय विज्ञान 'तरंग' बनकर स्वईधन को अपनी भूमि से जोड़कर अपनी यात्रा को पूर्ण करता है।

प्रश्न : मानव क्या है ?

उत्तर : मानसिक मार्ग का नयन बनाकर अपने वजूद को सिद्धांत करने वाला जीव मानव है।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।
आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं

डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई),
कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ0 प्र0
ईमेल-info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com
9807636072, 7376495194

स्वतंत्रता के मूल्य

गौरीशंकर वैश्य विनम्र
लखनऊ

फोटो : एआई

स्वतंत्रता का शाब्दिक अर्थ है- स्वयं पर आधारित होना, अर्थात् किसी अन्य की इच्छा या नियंत्रण के बिना अपने विवेक और इच्छा के अनुसार जीवन-यापन करना। परंतु स्वतंत्रता का यह अर्थ कदापि उच्छृंखलता या अराजकता नहीं है। सच्ची स्वतंत्रता वह है जो व्यक्ति को अपने विकास, अभिव्यक्ति और आत्म-साक्षात्कार का अवसर प्रदान करे, परंतु साथ ही समाज और राष्ट्र के प्रति उसके कर्तव्यों की सीमा भी निर्धारित करे।

मनुष्य के जीवन में स्वतंत्रता का वही स्थान है, जो शरीर में प्राण का है। स्वतंत्रता के बिना मनुष्य का अस्तित्व निर्जीव और निष्प्राण-सा प्रतीत होता है। यह वह मूल्य है जिसके लिए सदियों से मानव सभ्यता संघर्ष करती आई है- कभी विदेशी सत्ता के विरुद्ध, कभी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध, तो कभी अपने ही भीतर की जड़ता और अज्ञान के विरुद्ध। भारत ने भी लगभग दो सौ वर्षों की पराधीनता के पश्चात् 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त की, परंतु यह स्वतंत्रता किसी उपहार के रूप में नहीं, अपितु लाखों देशभक्तों के त्याग, तपस्या और बलिदान के परिणामस्वरूप प्राप्त हुई। आज जब हम स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं, तो यह आवश्यक हो जाता है कि हम स्वतंत्रता के वास्तविक मूल्यों को समझें, उनका सम्मान करें और आने वाली पीढ़ियों तक उन्हें सुरक्षित रूप से पहुँचाएँ। स्वतंत्रता केवल राजनीतिक परतंत्रता से मुक्ति का नाम नहीं है, अपितु यह एक व्यापक अवधारणा है जिसमें सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैचारिक स्वाधीनता भी सम्मिलित है।

स्वतंत्रता की अवधारणा

स्वतंत्रता का शाब्दिक अर्थ है- स्वयं पर आधारित होना, अर्थात् किसी अन्य की इच्छा या नियंत्रण के बिना अपने विवेक और इच्छा के अनुसार जीवन-यापन करना। परंतु स्वतंत्रता का यह अर्थ कदापि उच्छृंखलता या अराजकता नहीं है। सच्ची स्वतंत्रता वह है जो व्यक्ति को अपने विकास, अभिव्यक्ति और आत्म-साक्षात्कार का अवसर प्रदान करे, परंतु साथ ही समाज और राष्ट्र के प्रति उसके कर्तव्यों की सीमा भी निर्धारित करे। महात्मा गांधी ने स्वराज की जो परिकल्पना प्रस्तुत की थी, वह केवल अंग्रेजों से सत्ता हस्तांतरण तक सीमित नहीं थी, अपितु उसमें आत्म-अनुशासन, स्वावलंबन और नैतिक उत्थान की भावना निहित थी। स्वतंत्रता की अवधारणा को मुख्यतः दो रूपों में देखा जा सकता है- पहला, "नकारात्मक स्वतंत्रता" अर्थात् बाह्य बाधाओं और नियंत्रण से मुक्ति, और दूसरा, "सकारात्मक स्वतंत्रता" अर्थात् अपनी क्षमताओं के पूर्ण विकास तथा आत्म-निर्णय की क्षमता। भारतीय संविधान में भी स्वतंत्रता को मौलिक अधिकार के रूप में स्वीकार किया गया है, जिसमें विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता सम्मिलित है। परंतु यह स्वतंत्रता उचित प्रतिबंधों के अधीन है, ताकि किसी की स्वतंत्रता दूसरे की स्वतंत्रता में बाधक न बने।

स्वतंत्रता के संबंध में विद्वानों, राजनीतिज्ञों तथा साहित्यकारों के विचार

स्वतंत्रता के महत्व को विश्व के अनेक महापुरुषों ने अपने-अपने ढंग से रेखांकित किया है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने यह उद्घोष किया था कि "स्वराज उनका जन्मसिद्ध अधिकार है और वे इसे लेकर रहेंगे।"

यह कथन उस युग में भारतीयों के हृदय में स्वाधीनता की चिंगारी प्रज्वलित करने वाला सिद्ध हुआ। नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने अपने अनुयायियों से रक्त की मांग करते हुए स्वतंत्रता प्रदान करने की बात कही थी, जो आज भी भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है।

महात्मा गांधी का मानना था कि स्वतंत्रता

उस समय तक अर्थहीन है जब तक वह समाज के अंतिम व्यक्ति तक न पहुँचे। उनके अनुसार - "सच्चा स्वराज कुछ लोगों द्वारा सत्ता प्राप्त कर लेने से नहीं, बल्कि सत्ता का दुरुपयोग होने पर सभी में उसका प्रतिकार करने की क्षमता आने से है। "पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने प्रसिद्ध भाषण में यह भाव व्यक्त किया था कि वर्षों पूर्व भाग्य के साथ जो प्रतिज्ञा की गई थी, अब उसे पूर्ण रूप से नहीं तो बहुत सीमा तक चरितार्थ करने का समय आ गया है।

पश्चिमी विचारकों में जॉन स्टुअर्ट मिल ने अपने ग्रंथ में स्वतंत्रता को व्यक्ति के आत्म-विकास के लिए अपरिहार्य माना और कहा कि किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता पर तभी अंकुश लगाया जा सकता है जब उसके कार्यों से अन्य व्यक्तियों को हानि पहुँचती हो। अमेरिकी क्रांति के अग्रदूत पैट्रिक हेनरी का यह विचार विश्वप्रसिद्ध है कि उन्हें स्वतंत्रता चाहिए, अन्यथा मृत्यु। रवींद्रनाथ ठाकुर ने अपनी रचनाओं में उस स्वर्ग की कल्पना की है जहाँ मन निर्भय हो और मस्तक ऊँचा रहे- यह स्वतंत्र चित्त की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति मानी जाती है। इसी प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान से लेकर माखनलाल चतुर्वेदी तक अनेक हिंदी कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्वतंत्रता की अलख जगाई। इन सभी विचारकों के कथन इस बात के प्रमाण हैं कि स्वतंत्रता केवल एक राजनीतिक अवधारणा है।

स्वतंत्रता के मूल्य

राष्ट्रीय मूल्य :स्वतंत्रता किसी राष्ट्र की आत्मा है। जब कोई देश पराधीन होता है, तो उसकी अपनी कोई पहचान, नीति अथवा दिशा नहीं होती; वह विदेशी शक्तियों के हितों के अनुरूप संचालित होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् ही भारत अपनी विदेश नीति, कृषि, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, रक्षा नीति तथा राष्ट्रीय हितों के अनुरूप निर्णय लेने में सक्षम हो सका। राष्ट्रीय एकता, अखंडता और संप्रभुता

स्वतंत्रता के बिना संभव ही नहीं है।

सामाजिक मूल्य : स्वतंत्रता का सामाजिक आयाम अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह जाति, वर्ण, लिंग तथा धर्म के आधार पर होने वाले भेदभाव से मुक्ति का प्रतीक है। स्वतंत्र भारत में अस्पृश्यता का उन्मूलन, महिलाओं को समान अधिकार तथा सामाजिक न्याय की स्थापना जैसे कार्य स्वतंत्रता के सामाजिक मूल्यों की ही देन हैं। समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस भी स्वतंत्रता के कारण ही संभव हो पाया है।

आर्थिक मूल्य :आर्थिक स्वतंत्रता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता अधूरी रहती है। स्वतंत्रता ने भारत को अपनी आर्थिक नीतियाँ स्वयं निर्धारित करने, उद्योगों की स्थापना करने तथा वैश्विक व्यापार में भागीदार बनने का अवसर दिया। पंचवर्षीय योजनाओं से लेकर आज की उदारीकरण, निजीकरण तथा वैश्वीकरण की नीतियों तक- यह सब आर्थिक स्वाधीनता के परिणामस्वरूप ही संभव हो सका है। हर हाथ को काम, कौशल विकास, सेवाओं में गुणवत्ता, भ्रष्टाचार से मुक्ति, बाल श्रमिक प्रथा का उन्मूलन, वृद्धजनों, असहायों के लिए जीविकोपार्जन की व्यवस्था। शिक्षा, चिकित्सा एवं परम्परागत ज्ञान में समानता एवं पारदर्शिता की वचनबद्धता आदि का समुचित क्रियान्वयन आवश्यक है।

राजनीतिक मूल्य : लोकतांत्रिक शासन-प्रणाली, सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार, स्वतंत्र न्यायपालिका तथा शक्तियों का पृथक्करण- ये सभी स्वतंत्रता के राजनीतिक मूल्यों के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। नागरिकों को अपनी सरकार चुनने, नीतियों की आलोचना करने तथा शासन में भागीदारी करने का अधिकार स्वतंत्रता का ही परिणाम है।अपराधों में कमी तथा नियमों के प्रति जन - जागरूकता सत्ताधारी राजनीतिज्ञों को सदाचार से आदर्श स्थापित करें।

सांस्कृतिक मूल्य :स्वतंत्रता ने भारत को अपनी हजारों वर्ष पुरानी सांस्कृतिक विरासत को पुनर्जीवित करने तथा विश्व के समक्ष गौरव के साथ प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। ऐतिहासिक धरोहरों, भाषा, कला, साहित्य, संगीत तथा परंपराओं का संरक्षण एवं संवर्द्धन स्वतंत्रता के बिना संभव नहीं है। सांस्कृतिक स्वतंत्रता ने विविधता में एकता के भारतीय आदर्श को सशक्त किया है।

स्वतंत्रता की वर्तमान स्थिति

आज स्वतंत्रता प्राप्ति के लगभग आठ दशक पश्चात् भारत विश्व के सबसे बड़े

लोकतंत्र के रूप में स्थापित हो चुका है। नागरिकों को मौलिक अधिकार प्राप्त हैं, प्रेस स्वतंत्र है, न्यायपालिका स्वायत्त है और चुनाव नियमित रूप से संपन्न होते हैं। परंतु वर्तमान समय में स्वतंत्रता के समक्ष अनेक नई चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं। सोशल मीडिया के युग में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कभी-कभी दुरुपयोग का माध्यम बन जाती है, जिससे भ्रामक सूचनाओं तथा सांप्रदायिक विद्वेष का प्रसार होता है। आर्थिक असमानता, बेरोजगारी तथा भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ अनेक नागरिकों की वास्तविक स्वतंत्रता को सीमित करती हैं- क्योंकि जिस व्यक्ति के पास मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन नहीं है, उसके लिए स्वतंत्रता का व्यावहारिक अर्थ सीमित हो जाता है। महिला सुरक्षा, बाल अधिकार तथा वंचित वर्गों के सशक्तीकरण की दिशा में अभी भी बहुत कार्य किया जाना शेष है। साथ ही, राष्ट्रवाद और स्वतंत्रता के मध्य संतुलन बनाए रखना, सीमा सुरक्षा तथा आंतरिक अशांति जैसी चुनौतियों का समाधान करना भी वर्तमान युग की आवश्यकता है। इन सबके बावजूद यह स्वीकार करना होगा कि भारत ने स्वतंत्रता के मूल्यों को सुदृढ़ करने की दिशा में सराहनीय प्रगति की है।

आम नागरिकों के स्वतंत्रता के प्रति कर्तव्य

स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं, अपितु उत्तरदायित्व भी है। जिस प्रकार वृक्ष की जड़ों की रक्षा किए बिना उसकी शाखाओं तथा फलों की कल्पना नहीं की जा सकती, उसी प्रकार स्वतंत्रता के मूल्यों की रक्षा किए बिना उसके लाभों की अपेक्षा नहीं की जा सकती। प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह संविधान का सम्मान करे, कानून का पालन करे तथा राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को सर्वोपरि माने। अपने मताधिकार का विवेकपूर्ण उपयोग करना, सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध सजग रहना, पर्यावरण की रक्षा करना तथा सार्वजनिक संपत्ति की सुरक्षा करना- ये सभी स्वतंत्रता के प्रति हमारे मूलभूत कर्तव्य हैं। इसके अतिरिक्त, दूसरों की स्वतंत्रता का सम्मान करना भी उतना ही आवश्यक है, जितना अपनी स्वतंत्रता का उपभोग करना। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रयोग करते समय संयम बरतना, सोशल मीडिया पर उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार करना तथा भ्रामक सूचनाओं के प्रसार से बचना भी एक जागरूक नागरिक का कर्तव्य है। यदि प्रत्येक नागरिक अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहे, और 'राष्ट्र प्रथम 'भावना को अपना ले तो स्वतंत्रता के मूल्य स्वतः ही सुदृढ़ होते चले जाएँगे।

स्वतंत्रता केवल अधिकार नहीं, अपितु उत्तरदायित्व भी है। जिस प्रकार वृक्ष की जड़ों की रक्षा किए बिना उसकी शाखाओं तथा फलों की कल्पना नहीं की जा सकती, उसी प्रकार स्वतंत्रता के मूल्यों की रक्षा किए बिना उसके लाभों की अपेक्षा नहीं की जा सकती। प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह संविधान का सम्मान करे, कानून का पालन करे तथा राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को सर्वोपरि माने।

देश की स्वतंत्रता का भारत के विकास में योगदान

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत ने अनेक क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है। कृषि क्षेत्र में हरित क्रांति के माध्यम से भारत खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बना। औद्योगिक क्षेत्र में भारी उद्योगों की स्थापना, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में अंतरिक्ष तथा परमाणु ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ स्वतंत्रता के कारण ही संभव हो सकीं। शिक्षा के क्षेत्र में साक्षरता दर में निरंतर वृद्धि, उच्च शिक्षा संस्थानों का विस्तार तथा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की वैश्विक पहचान—यह सब स्वतंत्रता के फलस्वरूप ही अर्जित हुआ है। स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार, अवसंरचना का विकास, डिजिटल क्रांति तथा वैश्विक मंच पर भारत की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा—इन सभी उपलब्धियों की नींव स्वतंत्रता ने ही रखी। यदि भारत पराधीन रहता, तो न तो वह अपनी नीतियाँ स्वयं निर्धारित कर पाता और न ही अपने संसाधनों का उपयोग अपने नागरिकों के कल्याण हेतु कर पाता। स्वतंत्रता ने भारतीयों में आत्मविश्वास, आत्मगौरव तथा राष्ट्रीय भावना का संचार किया, जिसके परिणामस्वरूप आज भारत विश्व की एक प्रमुख आर्थिक तथा सामरिक शक्ति के रूप में उभर रहा है।

स्वतंत्रता के मूल्यों को प्रभावी बनाने के सुझाव

स्वतंत्रता के मूल्यों को और अधिक प्रभावी तथा सार्थक बनाने के लिए निम्नलिखित सुझाव महत्वपूर्ण हो सकते हैंः

शिक्षा के माध्यम से जागरूकताः

बच्चों तथा युवाओं को प्रारंभ से ही स्वतंत्रता के वास्तविक अर्थ, इतिहास तथा महत्व की शिक्षा दी जानी चाहिए, ताकि वे स्वतंत्रता के मूल्य को हल्के में न लें।

कर्तव्यों के प्रति सजगताः

अधिकारों के साथ-साथ नागरिकों को अपने मौलिक कर्तव्यों के प्रति भी सजग किया जाना चाहिए, जिससे अधिकार और कर्तव्य के मध्य संतुलन स्थापित हो सके।

आर्थिक समानता का प्रयासः

गरीबी उन्मूलन, रोजगार सृजन तथा संसाधनों के समान वितरण के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि स्वतंत्रता का लाभ समाज के प्रत्येक वर्ग तक पहुँचे।

सामाजिक सुधार :

जातिगत भेदभाव, लैंगिक असमानता तथा अस्पृश्यता जैसी कुरीतियों के उन्मूलन हेतु निरंतर प्रयास किए जाने चाहिए।

संयोग नहीं अपितु सद्प्रयासों व संघर्ष का परिणाम है सफलता

सीताराम गुप्ता
पीतमपुरा,दिल्ली

एक खिलाड़ी अत्यंत कठिन परिश्रम करता है, तभी सफलता प्राप्त करता है। जीवनभर साधना करने के उपरांत ही कोई योग्य अथवा महान संगीतकार या कलाकार बन पाता है। अब प्रश्न उठता है कि हम साधना अथवा परिश्रम क्यों और कब करते हैं? साधना अथवा परिश्रम भी हम तभी करते हैं, जब हमने कुछ पाने का संकल्प लिया हो। तो सफलता के लिए दृढ़ संकल्प भी अनिवार्य है।

पेले एक महान फुटबॉल खिलाड़ी हुए हैं। फुटबॉल में पेले की उपलब्धियों को देखते हुए उनको सफलता का पर्याय कहा जा सकता है। 29 दिसंबर सन् 2022 को इस महान फुटबॉल खिलाड़ी के निधन पर एक समाचार पत्र में पेले से संबंधित आलेख से पहले, सफलता के विषय में उनका एक कथन उद्धृत किया गया था, जिसका पहला वाक्य था - सफलता कोई दुर्घटना नहीं है। यह उनके द्वारा कहे गए अंग्रेज़ी के एक वाक्य ''सक्सेस इज़ नो एक्सिडेंट'' का हिंदी अनुवाद है। एक्सिडेंट का एक अर्थ दुर्घटना भी होता है, लेकिन हिंदी भाषा में सफलता के संदर्भ में एक्सिडेंट का अर्थ दुर्घटना लिखना अनुचित ही नहीं, अत्यंत भ्रामक है। एक्सिडेंट अंग्रेज़ी का एक अनेकार्थी शब्द है, जिसके अर्थ हैं दुर्घटना, हादसा, वारदात, इत्तिफ़ाक, संयोग, अप्रत्याशित अथवा आकस्मिक घटना आदि। संयोग अथवा अप्रत्याशित घटना को दुर्घटना नहीं कहा जाता। सफलता के संदर्भ में तो बिलकुल नहीं, क्योंकि सफलता एक सकारात्मक, उत्साहजनक व प्रसन्नतादायक स्थिति है, जबकि दुर्घटना एक निराशाजनक स्थिति है। सफलता ही नहीं असफलता को भी दुर्घटना नहीं कहा जा सकता, क्योंकि असफलताएँ भी सफलता का मार्ग ही प्रशस्त करती हैं।

सफलता वास्तव में क्या है? सफलता सकारात्मक उदात्त जीवन मूल्यों का समुच्चय है, जो दुर्घटना तो छोड़िए आकस्मिक अथवा अप्रत्याशित घटना भी नहीं हो सकती। सफलता के लिए अपेक्षित सकारात्मक उदात्त जीवन मूल्यों व कुशलताओं को विकसित किया जाता है। सफलता संघर्ष का ही दूसरा नाम है, क्योंकि बिना संघर्ष के सफलता मिलना असंभव है। जिसके लिए हमने कभी कोई संघर्ष ही नहीं किया, उसे सफलता कैसे कह सकते हैं? हम किसी उपहार अथवा अनुदान को अपनी सफलता नहीं कह सकते। ग़लत तरीक़े से अर्जित किसी उपलब्धि को भी सफलता नहीं कहा जा सकता। सफलता के विषय में पेले आगे कहते हैं - "इट इज़ हार्ड वर्क, पर्सिविरेंस, लर्निंग, स्टडिंग, सैक्रिफ़ाइस एंड मोस्ट ऑफ़ ऑल, लव ऑफ़ वाट यू आर डुइंग ऑर लर्निंग टु डू।" ये कठिन परिश्रम, अध्यवसाय, प्रशिक्षण, अध्ययन, त्याग और सबसे बढ़कर, आप जो

कर रहे हो अथवा सीख रहे हो, उससे प्यार करना है। क्या कोई दुर्घटना कठिन परिश्रम, अध्यवसाय, प्रशिक्षण, अध्ययन, त्याग और प्यार जैसी क्रियाओं का परिणाम हो सकती है? कदापि नहीं। यदि परिश्रम की बात करें, तो बिना कठिन परिश्रम के सफलता असंभव है। एक खिलाड़ी को ही लीजिए। बिना पर्याप्त अभ्यास के कोई खिलाड़ी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

एक खिलाड़ी अत्यंत कठिन परिश्रम करता है, तभी सफलता प्राप्त करता है। जीवनभर साधना करने के उपरांत ही कोई योग्य अथवा महान संगीतकार या कलाकार बन पाता है। अब प्रश्न उठता है कि हम साधना अथवा परिश्रम क्यों और कब करते हैं? साधना अथवा परिश्रम भी हम तभी करते हैं, जब हमने कुछ पाने का संकल्प लिया हो। तो सफलता के लिए दृढ़ संकल्प भी अनिवार्य है। संकल्प भी कोई अप्रत्याशित घटना अथवा संयोग नहीं हो सकता। संकल्प भी हमारा स्वयं का चुनाव होता है। सही संकल्पों और उन पर डटे रहने के कारण ही हम सफलता की ओर अग्रसर होते हैं। शिवसंकल्प सूक्त में कहा गया है कि तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु। यजुर्वेद के चौंतीसवें अध्याय में छह मंत्र मिलते हैं, जिन्हें शिवसंकल्प सूक्त के नाम से जाना जाता है। इन मंत्रों में मन की विशेषताएँ बतलाने के साथ-साथ हर मंत्र के अंत में प्रार्थना की गई है - 'तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु' अर्थात् ऐसा हमारा मन शुभ संकल्पों वाला हो। शुभ संकल्प से तात्पर्य सकारात्मक सोच व कल्याणकारी संकल्प से ही है। आजकल जिस सकारात्मक सोच को विकसित करने की बात की जाती है, वे वास्तव में शुभ संकल्प ही होते हैं। इसलिए हमारे संकल्प शुभ अर्थात् सकारात्मक हों।

हम जैसे भी संकल्प लेते हैं, उन्हीं के अनुसार सफलता अथवा असफलता मिलती है, इसलिए संकल्पों का सही होना और उन पर दृढ. रहना, दोनों बातें अनिवार्य हैं। किसी भी कार्य की सफलता में संकल्प के साथ-साथ अध्ययन और प्रशिक्षण का बहुत अधिक महत्त्व होता है। निरंतर अध्ययन द्वारा ही हम नई-नई चीज़ें सीखते हैं और उनके द्वारा संसार की जानकारी प्राप्त करके जीवन में आगे बढ़ते हैं। अध्ययन अथवा स्वाध्याय के साथ-साथ प्रशिक्षण का भी बहुत अधिक महत्त्व है। उचित प्रशिक्षण के अभाव में हम कुछ चीज़ें सीख ही नहीं सकते। यदि हम तैरना सीखना चाहते हैं, तो उसके लिए अध्ययन नहीं प्रशिक्षण अनिवार्य है। यदि हम ध्यानपूर्वक विचार करें तो पाएँगे कि हमने जीवन में जो कुशलताएँ अर्जित की हैं उनमें से अधिकतर प्रशिक्षण द्वारा ही अर्जित की हैं। इसी प्रकार से यदि हम खेल अथवा अन्य क्रिया-कलापों की बात करें, तो उनके लिए प्रशिक्षण व नियमित रूप से अच्छा प्रशिक्षण भी अनिवार्य है। उचित प्रशिक्षण के अभाव में कार्यों में उत्कृष्टता प्राप्त करना असंभव है और उत्कृष्टता कोई संयोग अथवा अप्रत्याशित रूप से घटित होने वाली घटना नहीं होती। एक खिलाड़ी, कलाकार अथवा रचनाकार निरंतर अभ्यास और प्रशिक्षण के द्वारा ही उत्कृष्टता और उत्कृष्टता से सफलता प्राप्त कर महान बन पाता है।

जीवन के अन्य क्षेत्रों में ही नहीं, सफलता में भी त्याग का बहुत महत्त्व होता है। अच्छे स्वास्थ्य अथवा रोगमुक्ति के लिए कई बार हमें अपनी पसंदीदा खाने-पीने की चीज़ों को त्यागना पड़ता है। दिनचर्या अथवा जीवनचर्या में परिवर्तन करके सुख-सुविधाओं का त्याग करना पड़ता है। इसी प्रकार से आराम का त्याग किए बिना हम कठिन परिश्रम नहीं कर सकते। एक खिलाड़ी को नियमित रूप से व्यायाम व खेल का अभ्यास करना पड़ता है। एक संगीतकार को नियमित रूप से घंटो रियाज़ करना होता है। जब हम किसी महान उद्देश्य के लिए समर्पित हो जाते हैं, तो हमें आराम का ही नहीं निरर्थक बातों का भी त्याग करना पड़ता है। हमें बहुत सारी चीजें और कार्य पसंद होते हैं। यदि हम केवल अपनी पसंद के कार्यों अथवा कम महत्त्वपूर्ण व बेकार की बातों में ही समय नष्ट करते रहेंगे, तो हमें अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपेक्षित कार्य करने का समय कैसे मिल पाएगा? हम व्यस्त रहें, लेकिन उपयोगी व सार्थक क्रिया-कलापों में। हम बहुत कुछ और बहुत अच्छा कर सकते हैं, लेकिन तभी जब हम सब कुछ करने का विचार त्याग दें। इसके लिए कुछ प्राथमिकताएँ निश्चित करना अनिवार्य है। और सबसे महत्त्वपूर्ण बात ये है, कि हम जो कर रहे हैं, उससे प्यार करें न कि उसे बोझ समझें। काम के प्रति प्यार ही हमें काम के प्रति समर्पित करता है।

प्यार के अभाव में तो हमारे आपसी संबंध भी बोझ बनकर रह जाते हैं। एक सात-आठ साल की कमज़ोर और दुबली-पतली लड़की, अपने से दो-एक साल छोटे एक हृष्ट-पुष्ट बच्चे को गोद में उठाकर तेज़ी से चली जा रही थी। एक राहगीर ने जब ये देखा, तो उसने उत्सुकतावश लड़की से पूछा, "बेटा इतना बोझ उठा कर भी तुम इतनी तेज़ी से कैसे चल लेती हो?" "बोझ नहीं ये मेरा भाई है," लड़की ने राहगीर को जवाब दिया और ख़ुशी-ख़ुशी अपने मार्ग पर आगे बढ़ गई। वस्तुतः जिस व्यक्ति, वस्तु अथवा कार्य को हम मन से प्यार करते हैं, वह हमें बोझ नहीं लगता। सफलता के लिए भी अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित होना और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले प्रयासों से प्यार करना अनिवार्य है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए किए जाने वाले प्रयासों अथवा कार्यों से प्रेम करना भी आकस्मिक घटना नहीं, अपितु इसे विकसित व अर्जित किया जाता है। इन सब बातों को जीवन में उतारने पर ही हम सफलता की ओर अग्रसर हो सकते हैं, इसमें संदेह नहीं। सफलता किसी भी प्रकार का शॉर्टकट, संयोग अथवा दुर्घटना नहीं, अपितु व्यक्ति द्वारा किए गए सद्प्रयासों, त्याग, संघर्ष व प्रतीक्षा का सुखद परिणाम है।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कृत्रिम मेधा की उपयोगिता

नमिता वैश्य
मसकनवा, गोण्डा

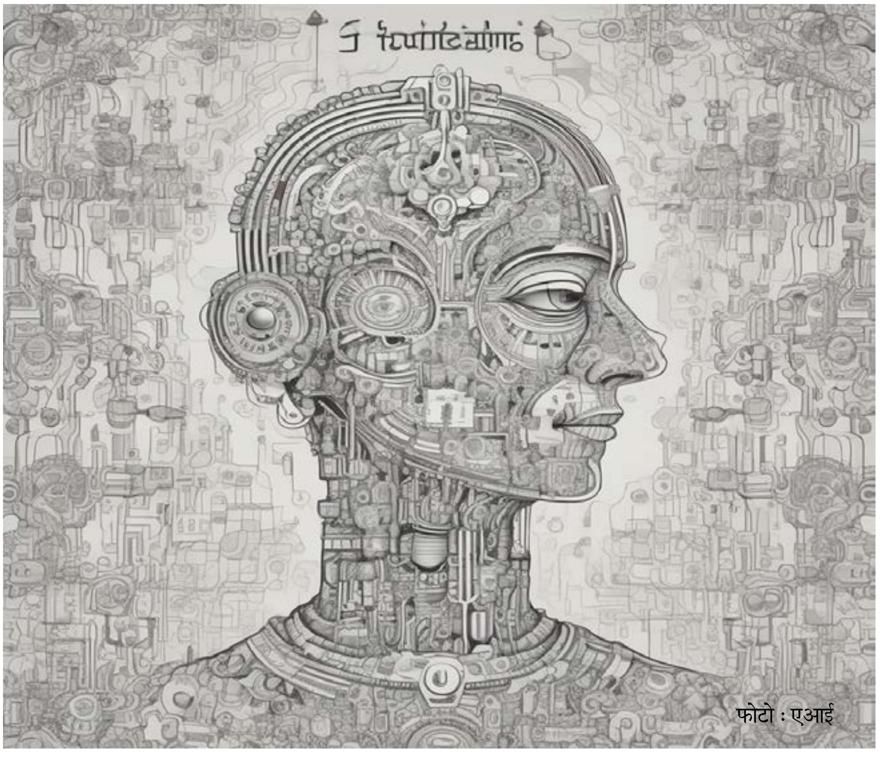

एआई आधारित शिक्षण मंच विद्यार्थियों की क्षमता के अनुसार अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराते हैं। वर्चुअल शिक्षक, चैटबॉट तथा स्मार्ट लर्निंग ऐप हिन्दी व्याकरण, उच्चारण, शब्दावली तथा लेखन कौशल का अभ्यास कराने में सहायक हैं। विदेशों में रहने वाले भारतीयों तथा हिन्दी सीखने वाले विदेशी विद्यार्थियों के लिए भी एआई आधारित पाठ्यक्रम अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

भाषा किसी भी राष्ट्र की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक चेतना और बौद्धिक विकास का आधार होती है। हिन्दी विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है और भारत की राजभाषा होने के साथ-साथ करोड़ों लोगों की मातृभाषा भी है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के इस युग में भाषा का विकास केवल पुस्तकों और कक्षाओं तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि इंटरनेट, डिजिटल मीडिया, मोबाइल अनुप्रयोगों तथा कृत्रिम मेधा (Artificial Intelligence–AI) के माध्यम से वैश्विक स्तर पर तीव्र गति से हो रहा है।

कृत्रिम मेधा वह तकनीक है जिसके द्वारा कम्प्यूटर और मशीनें मानव की भाँति सोचने, सीखने, समझने, निर्णय लेने तथा भाषा को संसाधित करने में सक्षम बनती हैं। प्राकृतिक भाषा संसाधन (Natural Language Processing), मशीन अनुवाद, वाक् पहचान (Speech Recognition), वाक् संश्लेषण (Text-to-Speech), चैटबॉट तथा जनरेटिव एआई जैसी तकनीकों ने हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के नए द्वार खोल दिए हैं। आज एआई के माध्यम से हिन्दी में लेखन, अनुवाद, शिक्षण, पत्रकारिता, शोध, साहित्य, प्रशासन और डिजिटल संचार अधिक सरल एवं प्रभावी हो गया है। हाल के शोधों में भी यह रेखांकित किया गया है कि एआई हिन्दी भाषा के संरक्षण, संवर्धन तथा वैश्विक प्रसार का महत्वपूर्ण साधन बन रहा है।

कृत्रिम मेधा का अर्थ एवं स्वरूप

कृत्रिम मेधा ऐसी कम्प्यूटर आधारित प्रणाली है जो मानव बुद्धि का अनुकरण करते हुए सीखने, तर्क करने, समस्याओं का समाधान करने तथा भाषा को समझने का कार्य करती है। इसके प्रमुख घटक हैं-

मशीन लर्निंग (Machine Learning)
डीप लर्निंग (Deep Learning)
प्राकृतिक भाषा संसाधन (NLP)
स्पीच रिकग्निशन
मशीन अनुवाद
जनरेटिव एआई

इन तकनीकों ने हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं के लिए नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कृत्रिम मेधा की उपयोगिता

भाषा अनुवाद को सरल बनाना

एआई आधारित अनुवाद प्रणालियाँ हिन्दी तथा अन्य भारतीय एवं विदेशी भाषाओं के बीच त्वरित अनुवाद उपलब्ध कराती हैं। इससे हिन्दी साहित्य, सरकारी दस्तावेज़, शैक्षिक सामग्री और वैज्ञानिक ज्ञान अधिक लोगों तक पहुँच रहा है।

मशीन अनुवाद की सहायता से अंग्रेज़ी, फ्रेंच, जापानी, रूसी आदि भाषाओं की सामग्री हिन्दी में तथा हिन्दी साहित्य का अन्य भाषाओं में अनुवाद अधिक तेजी से संभव हुआ है।

हिन्दी शिक्षा को सुलभ बनाना

एआई आधारित शिक्षण मंच विद्यार्थियों की क्षमता के अनुसार अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराते हैं। वर्चुअल शिक्षक, चैटबॉट तथा स्मार्ट लर्निंग ऐप हिन्दी व्याकरण, उच्चारण, शब्दावली तथा लेखन कौशल का अभ्यास कराने में सहायक हैं। विदेशों में रहने वाले भारतीयों तथा हिन्दी सीखने वाले विदेशी विद्यार्थियों के लिए भी एआई आधारित पाठ्यक्रम अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

वाक् पहचान

आज मोबाइल फोन में हिन्दी बोलकर संदेश लिखना, खोज करना, ई-मेल भेजना तथा इंटरनेट पर जानकारी प्राप्त करना अत्यंत सरल हो गया है। यह सुविधा विशेष रूप से उन लोगों के लिए लाभकारी है जो टाइपिंग में दक्ष नहीं हैं।

टेक्स्ट-टू-स्पीच तकनीक

एआई आधारित टेक्स्ट-टू-स्पीच तकनीक हिन्दी पाठ को स्पष्ट ध्वनि में पढ़कर सुनाती है। इससे दृष्टिबाधित व्यक्तियों तथा कम पढ़े-लिखे लोगों को भी हिन्दी सामग्री तक पहुँच मिलती है।

डिजिटल सामग्री का निर्माण

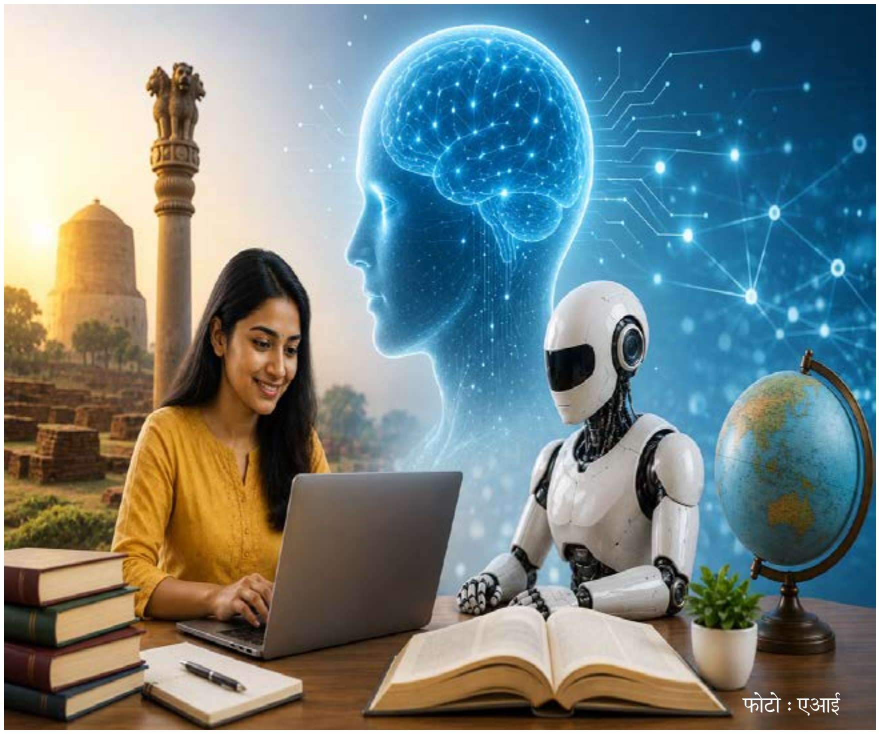

फोटो : एआई

यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स (पूर्व ट्विटर) तथा अन्य डिजिटल मंचों पर एआई आधारित कैप्शन, अनुवाद, उपशीर्षक और वॉइस तकनीक के कारण हिन्दी सामग्री वैश्विक स्तर पर अधिक लोगों तक पहुँच रही है।

आज ब्लॉग, समाचार, सोशल मीडिया पोस्ट, विज्ञापन, शोध सार, भाषण, लेख तथा रचनात्मक सामग्री एआई की सहायता से शीघ्र तैयार की जा रही है। इससे हिन्दी में डिजिटल सामग्री की मात्रा लगातार बढ़ रही है। हिन्दी डिजिटल मीडिया में एआई उपकरणों के बढ़ते उपयोग से सामग्री निर्माण की गति और पहुँच दोनों में वृद्धि देखी जा रही है।

हिन्दी पत्रकारिता में योगदान

समाचार संस्थान एआई की सहायता से समाचारों का त्वरित अनुवाद, सार-संक्षेप, शीर्षक निर्माण तथा तथ्य विश्लेषण कर रहे हैं। इससे हिन्दी समाचारों की गुणवत्ता एवं गति दोनों में सुधार हुआ है।

साहित्य के संरक्षण में सहायता

हिन्दी की प्राचीन पांडुलिपियों, दुर्लभ पुस्तकों तथा साहित्यिक दस्तावेज़ों का डिजिटलीकरण एआई की सहायता से अधिक प्रभावी ढंग से किया जा रहा है। ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन (OCR) तकनीक पुराने मुद्रित ग्रंथों को डिजिटल पाठ में परिवर्तित कर रही है।

शोध कार्यों में उपयोगिता

शोधार्थी एआई की सहायता से साहित्य समीक्षा, संदर्भ खोज, डेटा विश्लेषण, सार लेखन,भाषा संपादन, व्याकरण सुधार जैसे कार्य कम समय में कर सकते हैं।

प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का प्रयोग

ई-गवर्नेंस प्लेटफॉर्म, चैटबॉट और एआई आधारित सहायता प्रणालियाँ हिन्दी में नागरिक सेवाएँ उपलब्ध करा रही हैं। इससे राजभाषा हिन्दी का प्रयोग सरकारी कार्यों में बढ़ रहा है।

सोशल मीडिया पर हिन्दी का विस्तार

यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम, एक्स (पूर्व ट्विटर) तथा अन्य डिजिटल मंचों पर एआई आधारित कैप्शन, अनुवाद, उपशीर्षक और वॉइस तकनीक के कारण हिन्दी सामग्री वैश्विक स्तर पर अधिक लोगों तक पहुँच रही है।

कृत्रिम मेधा द्वारा हिन्दी के वैश्विक प्रसार की संभावनाएँ-

आज विश्व के अनेक देशों में हिन्दी सीखने वालों की संख्या बढ़ रही है। एआई आधारित ऑनलाइन प्लेटफॉर्म उन्हें उच्चारण सिखाते हैं, संवाद अभ्यास कराते हैं, व्याकरण सुधारते हैं, शब्दार्थ समझाते हैं,व्यक्तिगत अभ्यास उपलब्ध कराते हैं। इस प्रकार हिन्दी का अंतरराष्ट्रीय विस्तार अधिक सशक्त हो रहा है।

भारतीय भाषाओं के विकास में एआई की भूमिका

भारत बहुभाषी देश है। एआई केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि संस्कृत, तमिल, मराठी, बंगाली, पंजाबी, गुजराती, उड़िया, कन्नड़, मलयालम, तेलुगु आदि भाषाओं के संरक्षण एवं विकास में भी योगदान दे रहा है। बहुभाषीय एआई मॉडल भारतीय भाषाओं के बीच ज्ञान-विनिमय को आसान बना रहे हैं।

कृषि, स्वास्थ्य और जनसेवा में हिन्दी एआई

आज अनेक एआई आधारित सेवाएँ हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए कृषि क्षेत्र में विकसित बहुभाषी एआई सलाह सेवाएँ किसानों को उनकी भाषा में जानकारी उपलब्ध करा रही हैं, जिससे स्थानीय भाषाओं के उपयोग को भी बढ़ावा मिल रहा है।

हिन्दी साहित्य पर कृत्रिम मेधा का प्रभाव

एआई ने हिन्दी साहित्य में भी नई संभावनाएँ विकसित की हैं- कविता लेखन, कहानी लेखन, संवाद निर्माण,भाषा संशोधन, छंद विश्लेषण, साहित्यिक शोध,डिजिटल पुस्तक निर्माण आदि में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। हालाँकि साहित्य में मानवीय संवेदना, कल्पनाशक्ति और मौलिक अनुभव का स्थान अभी भी सर्वोपरि है। शोधों में यह भी माना गया है कि एआई लेखक का विकल्प नहीं बल्कि एक सहायक उपकरण है।

भारत बहुभाषी देश है। एआई केवल हिन्दी ही नहीं बल्कि संस्कृत, तमिल, मराठी, बंगाली, पंजाबी, गुजराती, उड़िया, कन्नड़, मलयालम, तेलुगु आदि भाषाओं के संरक्षण एवं विकास में भी योगदान दे रहा है। बहुभाषीय एआई मॉडल भारतीय भाषाओं के बीच ज्ञान-विनिमय को आसान बना रहे हैं।

हिन्दी के प्रचार-प्रसार में एआई की प्रमुख उपलब्धियाँ

हिन्दी टाइपिंग को सरल बनाया।

वॉइस इनपुट की सुविधा प्रदान की।

मशीन अनुवाद को विकसित किया।

ऑनलाइन शिक्षा को सशक्त बनाया।

डिजिटल पुस्तकालयों का विस्तार किया।

शोध कार्यों को गति दी।

सोशल मीडिया पर हिन्दी सामग्री बढ़ाई।

प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी का उपयोग आसान बनाया।

दिव्यांगजन के लिए भाषा-सुलभ तकनीक विकसित की।

हिन्दी को वैश्विक डिजिटल मंचों पर प्रतिष्ठित किया।

चुनौतियाँ

- यद्यपि कृत्रिम मेधा अत्यंत उपयोगी है, फिर भी कुछ चुनौतियाँ विद्यमान हैं-
- हिन्दी के गुणवत्तापूर्ण डेटा की कमी।
- अनेक बोलियों और क्षेत्रीय विविधताओं का समुचित समावेशन। अनुवाद में संदर्भगत त्रुटियाँ।सांस्कृतिक एवं मुहावरेदार अभिव्यक्तियों को समझने में कठिनाई।
- एआई द्वारा उत्पन्न सामग्री की तथ्यात्मक शुद्धता का प्रश्न।
- कॉपीराइट और बौद्धिक संपदा से जुड़े मुद्दे।
- अत्यधिक निर्भरता से मौलिक लेखन में कमी की आशंका।

इन चुनौतियों के समाधान के लिए उच्च गुणवत्ता वाले भाषा-संसाधनों, मानकीकृत कॉर्पस तथा उत्तरदायी एआई विकास की आवश्यकता है।

भविष्य की संभावनाएँ

- भविष्य में कृत्रिम मेधा के माध्यम से-
- प्रत्येक भारतीय नागरिक अपनी भाषा में डिजिटल सेवाएँ प्राप्त कर सकेगा।
- हिन्दी आधारित शोध और नवाचार बढ़ेंगे।
- वैश्विक विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन को नई गति मिलेगी।
- हिन्दी में वैज्ञानिक एवं तकनीकी साहित्य का विस्तार होगा।
- बहुभाषीय संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान अधिक सहज होगा।

डिजिटल भारत अभियान को नई शक्ति मिलेगी।

कृत्रिम मेधा हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार का एक अत्यंत प्रभावशाली माध्यम बनकर उभरी है। इसने हिन्दी को केवल संचार की भाषा नहीं, बल्कि ज्ञान-विज्ञान, शिक्षा, प्रशासन, शोध, पत्रकारिता और वैश्विक संवाद की भाषा के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मशीन अनुवाद, प्राकृतिक भाषा संसाधन, वाक् पहचान, डिजिटल शिक्षण तथा जनरेटिव एआई जैसी तकनीकों ने हिन्दी को नई ऊर्जा प्रदान की है।

यद्यपि डेटा, भाषाई विविधता, तथ्यात्मक शुद्धता तथा नैतिक उपयोग जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, फिर भी यदि सरकार, शैक्षणिक संस्थान, तकनीकी कंपनियाँ और भाषाविद् मिलकर कार्य करें तो हिन्दी विश्व की अग्रणी डिजिटल भाषाओं में अपना सशक्त स्थान बना सकती है। अतः यह कहा जा सकता है कि कृत्रिम मेधा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का केवल एक तकनीकी साधन नहीं, बल्कि उसके वैश्विक भविष्य की आधारशिला है।

जीवन दर्शन

सुनील कुमार माथुर
जोधपुर, राजस्थान

फोटो : एआई

सवेरे जल्दी उठकर नंगे पांव हरी हरी दूब पर घूमना, पौधों को पानी देना, सूखी व बिखरी हुई पतियों को एकत्रित कर उनका समय पर निस्तारण करना, खाद डालना उनकी दिनचर्या बन गई। मुकेश के बड़े भाई दिनेश ने यह बगीचा लगाया था और उसमें चीकू, आम, सीताफल, गोंदे, तरह-तरह के गुलाब के फूल लगाए। उनकी अनुपस्थिति में मुकेश आज बगीचे की देखभाल कर रहा है और उसकी मेहनत भी रंग लाई।

प्रकृति के प्रति प्रेम

मुकेश बचपन से ही प्रकृति प्रेमी हैं। उसका जितना शिवजी की भक्ति में प्रेम और विश्वास है उतना ही प्रकृति के प्रति भी प्रेम और लगाव है। वह शिक्षक होने के नाते खाली समय में पेड़ पौधों पर विशेष ध्यान देता था और बच्चों को भी उनको भी पौधे लगाने के लिए प्रेरित करता। सेवानिवृत्ति के बाद उसने अपना पूरा समय बागवानी को समर्पित कर दिया।

सवेरे जल्दी उठकर नंगे पांव हरी हरी दूब पर घूमना, पौधों को पानी देना, सूखी व बिखरी हुई पतियों को एकत्रित कर उनका समय पर निस्तारण करना, खाद डालना उनकी दिनचर्या बन गई। मुकेश के बड़े भाई दिनेश ने यह बगीचा लगाया था और उसमें चीकू, आम, सीताफल, गोंदे , तरह-तरह के गुलाब के फूल लगाए। उनकी अनुपस्थिति में मुकेश आज बगीचे की देखभाल कर रहा है और उसकी मेहनत भी रंग लाई।

मौहल्ले के लोग बगीचे में आकर न केवल सवेरे-सवेरे ठंडी-ठंडी हवा का आनन्द ही लेते है अपितु जाते समय कोई पूजा के लिए गुलाब का फूल, कोई गोंदे तो कोई आम अपने साथ ले जाता और मुकेश को प्रकृति प्रेमी कह कर उसका हौसला अफजाई करते रहते हैं। मुकेश का प्रकृति के प्रति प्रेम देखकर अन्य लोगों ने भी अपने-अपने घरों के आसपास पेड़ पौधे लगाकर अपने शहर को प्रकृति के अनुरूप भरा कर दिया और मुकेश की मेहनत रंग लाई।

सुख - दुःख

सुख और दुःख का गरीबी और अमीरी से कोई लेना देना नहीं है अक्सर लोग महलों में रोते हुए और झोपड़ियों में हंसते हुए देखे और सुने जाते हैं। सुख और दुःख जीवन में आते ही रहते है। अगर दुःख न हो तो सुख का व सुख न हो तो दुःख का अहसास कैसे होगा। याद रखिए सुख व दुःख कभी भी एक साथ नहीं आते है। इनका आना जाना तो जीवन में लगा ही रहता हैं। इसलिए व्यक्ति को हर परिस्थिति में एक समान रुप से बना रहना चाहिए। जो परिस्थितियों को देखकर चलता है उसके जीवन में कभी भी दुःख नहीं आता हैं, क्यों कि जो परिस्थितियों को देखकर चलता है उसके साथ हर वक्त परमात्मा खड़े रहते हैं। तभी तो कहा जाता है कि विपरीत परिस्थितियों में भी इंसान बहुत कुछ सीख लेता हैं एवं बिना बाधा के अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेता हैं।

मन की उलझनें

मन की उलझनों में न उलझों। एक धागा समझाओ कि दूसरा उलझ ही जाता हैं। ठीक इसी तरह की हमारी जिंदगी हैं। अनेक जिम्मेदारियों को निभाते निभाते इंसान से कहीं न कही भूल हो ही जाती है लेकिन उसे कभी भी गहराई से नहीं लेना चाहिए। मन में नाना प्रकार के विचार आते रहते हैं लेकिन हमें

उचित समय पर उचित निर्णय लेना चाहिए। कभी भी इस चक्कर में न पड़ें कि समाज के लोग क्या कहेंगे। आप कितना भी अच्छा कर लो, लेकिन गलती निकालने वाले कहीं न कहीं गलती निकालने में लगे ही रहते हैं। अतः हमें बिना सिर पैर की बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए। जहां गलत होने की आशंका हो वहां समय रहते गलती सुधारने में कोई झिझक नहीं होनी चाहिए।

किसी का हम अच्छा न कर सके तो कोई बात नहीं है लेकिन किसी का बुरा भी नहीं करना चाहिए , क्यों कि दुनियां कमजोर है लेकिन दुनियां बनाने वाला नहीं। ईश्वर सर्वशक्तिमान है। हर कोई उसके आगे नतमस्तक है। हम सब उसकी संतान हैं जब उसने हमें इतना सुन्दर बनाया है। आनन्द व अपार खुशियां दी हैं तो हम क्यों दूसरों का बुरा करें आखिर वे भी तो हमारे ही भाई बंधु है फिर भला बताइए कि हम अपनों का ही बुरा क्यों सोचेंगे। सदैव सकारात्मक सोच रखो और जीवन की राह में आगे बढ़ते रहिए। सफलता आपके कदम अवश्य ही चूमेगी।

भक्ति की राह

भक्ति की राह जरा कठिन अवश्य ही है लेकिन जो इस राह पर पूरी ईमानदारी व निष्ठा से चलता है उसे ईश्वर की अवश्य ही प्राप्ति होती है। आज भले ही हम अपने आपको प्रगतिशील , आधुनिक , शिक्षित और तकनीकी युग का इंसान मानते है और अपनी सफलता पर गौरवान्वित महसूस करते है। लेकिन हकीकत यह है कि लोग छोटी-छोटी असफलताओं से ही घबरा जाते है और आत्म हत्या जैसा जघन्य कदम उठा लेते है जो किसी भी समस्या का समाधान नहीं है। अपितु जिसे एक तरह की कायरता ही कहा जा सकता है। जब आपको जीवन कठिन लगे तो भक्ति की राह चुनों। वहां शांति भी है और समाधान भी है।

दोषों को छुपाने का नहीं, मिटाने का उपाय करों

ऐसा कोई भी इंसान नहीं है जिसने कभी भी कोई गलती न की हो। जो कार्य करेगा उससे गलती अवश्य ही होती है। लेकिन समय रहते गलती को अवश्य ही सुधार लेना चाहिए। हम इंसान हैं और इंसान से गलती होना कोई बड़ी बात नहीं है। यह अलग बात है कि कोई काम ही नहीं करेगा तो उससे गलती क्या खाक होगी। इसलिए दोषों को छुपाने का नहीं बल्कि मिटाने का प्रयास करें और गुणों को दिखाने का नहीं उन्हें जग जाहिर करने से या प्रचारित व प्रसारित करने से बचना चाहिए।

ऐसा कोई भी इंसान नहीं है जिसने कभी भी कोई गलती न की हो। जो कार्य करेगा उससे गलती अवश्य ही होती है। लेकिन समय रहते गलती को अवश्य ही सुधार लेना चाहिए। हम इंसान हैं और इंसान से गलती होना कोई बड़ी बात नहीं है। यह अलग बात है कि कोई काम ही नहीं करेगा तो उससे गलती क्या खाक होगी। इसलिए दोषों को छुपाने का नहीं बल्कि मिटाने का प्रयास करें और गुणों को दिखाने का नहीं उन्हें जग जाहिर करने से या प्रचारित व प्रसारित करने से बचना चाहिए।

लम्बी यात्रा

जीवन की लम्बी यात्रा हैं। अतः हमें अपना जीवन भक्ति भाव, आराधना , कथा कीर्तन, भजन संध्या आदि में लगाना चाहिए। सारी जिंदगी हाय धन, हाय धन नहीं करना चाहिए। हमें अपने रोजगार के अलावा ईश्वर भक्ति में भी समय लगाना चाहिए। लेकिन हम ऐसा नहीं कर रहे है। अक्सर लोग मुसीबत के वक्त ही ईश्वर का स्मरण करता है जो ठीक नहीं है। नियमित रूप से ईश्वर का स्मरण करते रहने से ईश्वर भी हमारी समस्याओं का समय रहते निदान करते रहता है और हमें पता भी नहीं चलता है कि कब समया उत्पन्न हुई और कब उसका कैसे समाधान हो गया। जीवन तो एक लम्बी यात्रा हैं और सुख दुःख, कामयाबी, अनुभव ये जीवन के छोटे-छोटे स्टेशन है लेकिन जो हमारे साथ यात्रा करता है वो प्रेम है।

सबसे बड़ा उपहार और सम्मान

उपहार और सम्मान प्राप्त कर इंसान को इतराना नहीं चाहिए। क्यों आज के इस तकनीकी युग में उपहार और सम्मान धड़ल्ले से बिक रहे हैं। आनलाईन पैसे का भुगतान कीजिए और जैसा चाहे वैसा सम्मान व उपहार प्राप्त कीजिए और फिर व्हाट्सएप पर

अपनी फोटो के साथ प्रमाण पत्र , मेडल ,कप पोस्ट कर अपने मित्रों , रिश्तेदारों , से बधाईयां बटोरते रहिए। आम के आम व गुठलियों के दाम आपको मिल जाएंगे। कहते भी है कि दो पल की जिंदगी के दो नियम हैं शिखरों फूलों की तरह और बिखरों खूश्बू की तरह। किसी को प्रेम देना सबसे बड़ा उपहार है और किसी का प्रेम पाना सबसे बड़ा सम्मान है।

दिशाहीन होती युवा शक्ति

आज की युवाशक्ति दिशाहीन होती जा रहीं हैं। चूंकि टूटते संयुक्त परिवारों के कारण एकांगी परिवार में बच्चों को आदर्श संस्कार देने वाले बुजुर्ग नहीं रहे हैं बच्चों के माता-पिता अपनी-अपनी जिंदगी जी रहे हैं और बच्चे आदर्श संस्कारों के अभाव में राष्ट्र की मुख्यधारा से कट रहे हैं। इतना ही नहीं संयम, धैर्य, सहनशीलता, त्याग की भावना जैसे आदर्श संस्कारों के अभाव में मानव ही मानव का दुश्मन हो गया हैं। मानवता रो रही है व मानवीय मूल्य आज कराह रहे हैं। आज हम जो आजादी की श्वास ले रहे है वह हमारे स्वतंत्रता सैनानियों के त्याग और बलिदान का ही परिणाम है। उन्होंने देश की एकता-अखंडता के लिए अपने प्राणों तक की आहुति दे दी और हम अपने स्वार्थ में अंधे होकर अपनों के ही दुश्मन बन बैठे हैं। यह कैसी विडम्बना है। हमारे स्वतंत्रता सैनानियों ने भावी पीढ़ी के लिए ऐसे आदर्श स्थापित किये जो हमें आज भी प्रेरणा देते है लेकिन हम मानवीय मूल्यों को भूल कर अपने अंहकार में आकर सभी आदर्श मूल्यों को ताक पर रख दिए जो उचित नहीं है। आदर्श मूल्यों और संस्कारों की पुनः स्थापना करते हुए हमें संयुक्त परिवारों के महत्व को देखते हुए उस ओर फिर से लौटना होगा।

लेखन भी एक कला है

लेखन भी एक कला है। यहीं वजह है कि लेखक के पास शब्दों का अथाह भण्डार होता है और वह लेखन कार्य करते समय निर्बाध रूप से लिखता चला जाता है। लेखक हर समय चिंतन मनन और संवाद करते रहते है जिसकी वजह से उनका शब्दों का भण्डार निरन्तर अपडेट होता रहता है। उनके निरन्तर संवाद व चिंतन मनन का ही परिणाम है कि वे आसानी से कचरे में से भी ऐसी जानकारी जुटा लेते हैं कि उनकी उस विषय पर लेखनी चल पड़ती है। एक श्रेष्ठ लेखक व साहित्यकार को लेखन विधा में कहानी, कविता, आलेख, साक्षात्कार (इंटरव्यू), व्यंग्य, समीक्षा, यात्रा वृत्तांत, संस्मरण, आंखों देखा हाल, न्यूज बनाना, जैसा ज्ञान होना नितांत आवश्यक है अन्यथा वह साहित्य के क्षेत्र में प्रगति नहीं कर सकता। साहित्य सृजन में वही व्यक्ति सफलता हासिल कर सकता है जो इन सब कलाओं में निपुण हो। इसलिए कहा गया है कि लेखन कला को कभी भी हल्के में नहीं लेना चाहिए।

अकेलापन

यह जिंदगी भी अजीब है। जिंदगी में पीछे देखोगे तो अनुभव मिलेगा। आगे देखोगे तो आशा मिलेगी।

दांए-बांए देखोगे तो सत्य मिलेगा लेकिन अगर भीतर देखोगे तो आत्मविश्वास मिलेगा। मगर अफसोस इस बात का है कि व्यक्ति में आज आत्मविश्वास की सर्वाधिक कमी है। कोई भी नया काम शुरू करने से पहले ही उसके हाथ पैर कांपने लगते हैं। यह मुझ से नहीं होगा। जैसे बोल बोलने लगता हैं। यह सभी जानते हैं कि मां के पेट में से कोई भी व्यक्ति कुछ भी सीख कर नहीं आता है। हर कोई जन्म के बाद ही सीखता है फिर कैसा डर।

आप अपने आपको अकेला क्यों मानते है। आपके साथ चौबीसों घंटे परमात्मा साथ है फिर काहे का डर। जब “परमात्मा” मित्र बनते है तब अकेलापन खत्म हो जाता हैं। सब आत्म विश्वास बनाए रखें। यह आत्मविश्वास ही आपकी सबसे बड़ी ताकत , पूंजी और शक्ति हैं। इसलिए जीवन में कभी भी हिम्मत नहीं हारे।

समय सबसे कीमती

वक़्त सबको मिलता है ज़िंदगी बदलने के लिए लेकिन ज़िंदगी दोबारा नहीं मिलती वक़्त बदलने के लिए। यह बहुत ही गहरी और सच्ची बात है। समय सबसे कीमती है - जो चला गया वो लौटकर नहीं आता। मगर न जानें क्यों इंसान वक्त की अनदेखी कर रहा है। आज भी ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो आपको निशुल्क ज्ञान व तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराने को तैयार है लेकिन हम है कि समय नहीं है कह कर बात टाल देते हैं जो हमारी मूर्खता के आलावा कुछ भी नहीं है।

जब हमें कभी कोई चीज सीखनी होती है तो पैसे देने के बावजूद भी सिखाने वाले नहीं मिलते है तब हम मन ही मन सीखाने वालों को कोसते है कि वे नाटक कर रहे है। अपनी इम्पोर्टेंस दिखा रहे है। लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं होता है। वे वास्तव में बिजी होते है। इसलिए जब भी खाली बैठे हो और कोई नवीन जानकारी बता रहा हो तो उसे अवश्य ही हासिल करे। न जानें कब काम आ जाये। सीखने-सिखाने की कोई उम्र नहीं होती है। बस आपके मन में ज्ञान अर्जित करने की जिज्ञासा होनी चाहिए।

जब हमें कभी कोई चीज सीखनी होती है तो पैसे देने के बावजूद भी सिखाने वाले नहीं मिलते है तब हम मन ही मन सीखाने वालों को कोसते है कि वे नाटक कर रहे है। अपनी इम्पोर्टेंस दिखा रहे है। लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं होता है। वे वास्तव में बिजी होते है। इसलिए जब भी खाली बैठे हो और कोई नवीन जानकारी बता रहा हो तो उसे अवश्य ही हासिल करे। न जानें कब काम आ जाये। सीखने-सिखाने की कोई उम्र नहीं होती है। बस आपके मन में ज्ञान अर्जित करने की जिज्ञासा होनी चाहिए।

बड़े वृक्ष के नीचे

गुरुवर स्पष्ट करते है कि क्या कभी किसी बड़े वृक्ष के नीचे पौधो को पनपते देखा है? लाख कोई कोशिश कर ले व्यक्ति उतना ही प्राप्त करता है जितना और जैसा उसका रासायनिक गुण होता है। गुरुवर कहते है कि हर किसी की रासायनिक यात्रा स्वयं के स्वभाव पर चलकर ही पूरी हो सकती है। दूसरों जैसा बनने का प्रयास करके या दूसरो को प्रभावित करके कोई कुछ नही कर सकता। वे बताते है कि मानव की यह स्व से स्व की यात्रा है। इसमें कोई दूसरा अपना स्व नही जोड़ सकता।

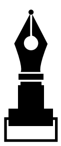

उमेश मानव

गुरु का शब्दिक अर्थ 'अंधकार को मिटाने वाला' होता है। सच्चा गुरु हमें इस लायक बनाने का प्रयास करता है। ताकि हम अपने अंदर के प्रकाश को पहचान सकें। हम जो दुनिया के प्रलोभनो में भटक कर अपने अंदर की असल सम्पत्ति को नहीं जान पा रहे है, गुरु हमें हमारे इस छुपे हुए गुण का एहसास कराता है। गुरुवर श्री अशोक मानव जी का यही कहना है कि "मैं कोई शिष्य नही बनाता मैं किसी को अपने पीछे आने को नहीं कहता, मैं गुरु बनाता हूँ। सभी अपने गुरु स्वयं है। सभी में प्रकृति की अनुकम्पा है। जो कुछ मानव बाहर खोज रहा है वह सब उसके पास मौजूद है। उसे बस इसका एहसास करना है। चमत्कार करने की क्षमता सभी में है। हर मानव प्रकृति का एक चमत्कार ही है। " गुरुवर स्वयं कह रहे है कि किसी का अनुसरण करने की आवश्यकता नही है, मेरा अनुसरण करने की भी नहीं। हर एक को अपने एहसास पर ही चलना है। ऐसा करके ही आप पूर्ण हो सकते है।

समाज में बहुत से लोग है जो बाबा बने, गुरु बने घूम रहे है। लोगो को चमत्कार दिखाने के बहाने अपने पीछे-पीछे दौड़ाते है। दूसरों को आशीर्वाद देने के बहाने साथ रखते है और मूर्ख बनाते है। समाज की भी ऐसी ही दशा हो गई है कि कुछ डर से, कुछ ज्यादा पाने की लालच में लोग दूसरो के सहारे हो जाते है। यहाँ यह याद रखना जरूरी है कि जो हमारा है हमारे गुण का है वही हम से जुड़ सकता है या हमे मिल सकता है, दूसरा नहीं। इससे हमें समझ आनी चाहिए कि कोई दूसरा हमारे पर कृपा करके वह नहीं दिला सकता जो हमारा नहीं है और जो हमारा है वो हमसे कोई छीन नहीं सकता। तब मानव को कृपा की जरूरत क्यों है। गुरुवर करते हैं प्रकृति में कौन सा जानवर किसी गुरु के आशीर्वाद के लिए परेशान है? या किस गुरू का आशीर्वाद लेकर वह अपना जीवन निर्वाह कर रहा है? केवल प्रकृति का सबसे समझदार प्राणी कहा जाने वाला 'मानव' ही हमेशा कोई न कोई सहारा तलाश करता रहता है।' यह प्रयास ही, कि दूसरो में सहारा तलाशना समस्या पैदा कर रहा है। थोड़ा ध्यान दे तो हम स्वयं ही देख

पायेंगे कि अपने से शक्तिशाली, प्रभावशाली या ऊँचा, हम जिन्हें मानते है और हम उनके सहारे हो जाते है। ऐसे में कितने होंगे जो वह सब पा सके जो सारा उन प्रभावशाली लोगों के पास है। कोई भी नहीं बल्कि जो कुछ हमारा था हमारी ताकत थी ऊर्जा थी, वह उल्टा उनकी ही मदद कर रही थी हमारे फायदे में नहीं। हमारी ऊर्जा उनकी सेवा में लगी उनको ऊँचा उठाने में लगी। और हम स्वयं में खोखले होते गये। वैसे भी जिस प्रभावशाली लोगो की बात होती है, उनका प्रभाव वही लोग होते है या उनसे ही होता है जो उनके आप-पास कृपा पाने के लिए रहते है। कुछ ऐसे होते है जो यह कहते है कि किसी कृपा से उनमें बदलाव आया या उन्होंने अपने में कुछ बदलाव महसूस किया है। तो यह सोचिए कि जिस प्रकार की दिनचर्या का पालन किया जाता जो बदलाव जीवनशैली में आता है। वह सब स्वाभाविक रूप से ही हमारे में कुछ प्रभाव तो ला ही देगा।

गुरुवर स्पष्ट करते है कि "क्या कभी किसी बड़े वृक्ष के नीचे पौधो को पनपते देखा है? लाख कोई कोशिश करले व्यक्ति उतना ही प्राप्त करता है। जितना और जैसा उसका रासायनिक गुण होता है। गुरुवर कहते है कि हर किसी की रासायनिक यात्रा स्वयं के स्वभाव पर चलकर ही पूरी हो सकती है। दूसरों जैसा बनने का प्रयास करके या दूसरो को प्रभावित करके कोई कुछ नही कर सकता। वे बताते है कि मानव की यह स्व से स्व की यात्रा है। इसमें कोई दूसरा अपना स्व नही जोड़ सकता। केवल दूसरे को अपनी यात्रा के अनुभव ही बता सकता है। दूसरे को अपनी यात्रा का एहसास नहीं कराया जा सकता। सभी का एहसास अलग है, व्यक्तिगत है। अपने स्व की यात्रा, अपने एहसास से ही पूर्ण होगी बाकि सबसे नहीं। " गुरु हमें हमारे प्रकाश से मिलने का मार्ग बताता है , उसका एहसास कराता है। हमें उसे स्वयं ही खोजना है स्वयं ही एहसास करना है" हम सभी को दुनिया के प्रलोभनों से दूर रहकर यह करना है। सच्चा गुरु आपको स्वतंत्र छोड़ता है अपने मार्ग पर

आपको स्वयं ही चलने को कहता है। आपको वह सब स्वयं से भोगकर परिपक्व होना है।

गुरुवर का यह कथन की 'बड़े वृक्ष के नीचे छोटे पौधे नही पनपते ' से अर्थ यह निकलना चाहिए कि हमें स्वयं का गुरु बनना है। स्वयं में सशक्त होना है हमें सहारा नहीं तलाशना। गुरुवर तो यहाँ तक कहते है कि किसी भी चीज के लिए सहारा न तलाशे और न ही किसी का सहारा बनकर उसे कमजोर करे। जरूरत है तो यह कि अन्य को इस बात के लिए तैयार कर दे सजग कर दे कि कोई और आपकी सहायता के लिए नही आयेगा। आप स्वयं ही जिम्मेदार है और आप को ही करना भी है। आपने हौसले को बनाकर आगे चलते रहिये और यह सोचिए की जो भी हो हमे ही करना है हमे ही भोगना है। ऐसा नहीं है कि हमने किसी महापुरुष के चरण पकड़ लिए है और सब छोड़ कर बैठ गये है कि अब तो भगवन ही पार लगयेंगे। ऐसा नहीं होता यह पलायनवाद है। आप अपनी सच्चाई से भाग रहे है। आप अपने ही द्वारा कभी किसी समय बनाई गई इच्छा का अपमान कर रहे है। गुरुवर तो यहाँ तक कहते है कि अगर आप ध्यान भी करना चाहते है तो किसी भी चीज का सहारा न ले , बस ठहर जाये। गुरुवर के अनुसार कोई भी सहारा कभी न कभी साथ छोड़ देता है। जिससे आपका सफर अधूरा रह जायेगा। स्वयं पर भरोसा होना चाहिए। स्वयं को गुरु बनाकर काम करेंगे तो जीत अवश्य ही मिलेगी, आनन्दित रहेंगे, निडर रहेंगे और पूर्णत तक पहुँचेंगे। प्रकृति ने हमें बलवान बनाया है हमें अपने संघर्षो का जो कि हमारी पूर्णत के लिए अनिवार्य है, का मुकाबला डट कर करना है। हम सब जो गुरूवर को हृदय से मानने का दावा करते है। उनके कहे का पालन करने की बात करते है, क्या वास्तव में ऐसा है? या जो हमारे फायदें का होता है उसे तो हम सहर्ष मान लेते है और जहाँ लगता है हमारा लाभ नहीं (भले वह उचित बात हो) उस के लिए गुरुवर के सामने हाँ तो कर देते है पर करते वही है जो हमें पसंद आता है। अजीब लगने वाली बात है पर सत्य है गुरु बनाते तो है पर गुरु मानते नहीं। आध्यात्मिक कहलाना पसंद तो है पर उस राह पूर्ण समर्पण से चलते नहीं। इसी को समझाकर गुरुवर कहते है कि व्यक्ति वही करता है जो उसका रासायनिक गुण होता है। किसी गुरु के कहने पर नही और यही सही भी है तभी आप विकास कर पायेंगे। हम सब ये तो कहते नही थकते कि हम एक बहुत पहुँचे हुए महात्मा के शिष्य है पर जब उनकी बात हमें नहीं जजती तो कहते है कि गुरुजी समझ नहीं रहे है। स्पष्ट संदेश गुरुवर का है कि हमारे या किसी के सहारा आपको रहने की आवश्यकता बिलकुल भी नहीं है। बड़े वृक्ष की तलाश न करिये, किसी अन्य के सहारा की इच्छा न रखिये। आपको प्रकृति ने सक्षम बनाया है। स्वयं से अपना सहारा बनिये वृक्ष बनिये।

आलेख

मनुष्य की सबसे बड़ी लड़ाई स्वयं से

अवनीश कुमार गुप्ता
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

कट्टरता विचारों की वह अवस्था है जहाँ संवाद समाप्त हो जाता है और केवल आग्रह शेष रह जाता है। कट्टर व्यक्ति सुनने की क्षमता खो देता है, क्योंकि उसके लिए सत्य का अर्थ वही होता है जो वह पहले से मानता आया है। संकीर्णता इसी मानसिकता का विस्तार है, जो विविधता को खतरे के रूप में देखती है। जबकि प्रकृति का सबसे बड़ा नियम विविधता ही है। भाषा, संस्कृति, विचार, जीवनशैली और मतों की भिन्नता किसी समाज की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी बौद्धिक संपन्नता का प्रमाण होती है।

मनुष्य का वास्तविक संघर्ष बाहरी संसार से कम और अपने अंतर्मन से अधिक होता है। सभ्यताओं का इतिहास इस सत्य का प्रमाण है कि किसी राष्ट्र का उत्थान केवल उसके प्राकृतिक संसाधनों, आर्थिक समृद्धि अथवा वैज्ञानिक उपलब्धियों से सुनिश्चित नहीं होता, बल्कि उसकी सामूहिक चेतना, नैतिक मूल्यों और विचारों की गुणवत्ता ही उसके भविष्य का निर्धारण करती है। जब किसी समाज में सत्य की अपेक्षा सुविधा, विवेक की अपेक्षा अंधानुकरण और उत्तरदायित्व की अपेक्षा स्वार्थ को अधिक महत्त्व मिलने लगता है, तब पतन का आरंभ दिखाई दिए बिना ही हो जाता है। सामाजिक अव्यवस्थाएँ अचानक जन्म नहीं लेतीं; वे वर्षों तक व्यक्ति के भीतर पनपने वाले छोटे-छोटे मानसिक विकारों का परिणाम होती हैं। यही कारण है कि किसी भी परिवर्तन की शुरुआत व्यवस्था से पहले व्यक्ति के अंतःकरण से होती है।

रूढ़िवाद तब तक समाज की सांस्कृतिक पहचान का भाग है जब तक वह विवेक और परिवर्तन का विरोध नहीं करता। प्रत्येक परंपरा अपने समय की आवश्यकताओं, परिस्थितियों और अनुभवों से निर्मित होती है, इसलिए समय के साथ उसका परीक्षण भी आवश्यक है। जब परंपरा को अंतिम सत्य घोषित कर दिया जाता है और तर्क, अनुभव तथा वैज्ञानिक दृष्टि को अस्वीकार कर दिया जाता है, तब वही परंपरा प्रगति की सबसे बड़ी बाधा बन जाती है। समाज का दायित्व केवल अपनी विरासत को सुरक्षित रखना नहीं, बल्कि उसे समयानुकूल परिष्कृत करना भी है। परिवर्तन का विरोध करना संस्कृति की रक्षा नहीं, बल्कि उसकी जीवंतता को समाप्त करना है।

कट्टरता विचारों की वह अवस्था है जहाँ संवाद समाप्त हो जाता है और केवल आग्रह शेष रह जाता है। कट्टर व्यक्ति सुनने की क्षमता खो देता है, क्योंकि उसके लिए सत्य का अर्थ

वही होता है जो वह पहले से मानता आया है। संकीर्णता इसी मानसिकता का विस्तार है, जो विविधता को खतरे के रूप में देखती है। जबकि प्रकृति का सबसे बड़ा नियम विविधता ही है। भाषा, संस्कृति, विचार, जीवनशैली और मतों की भिन्नता किसी समाज की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी बौद्धिक संपन्नता का प्रमाण होती है। जो समाज मतभेदों को शत्रुता नहीं बनने देता, वही दीर्घकाल तक स्थिर और समृद्ध बना रहता है।

अंधविश्वास केवल धार्मिक जीवन तक सीमित नहीं है। राजनीति में व्यक्तिपूजा, शिक्षा में रटंत प्रणाली, चिकित्सा में अप्रमाणित उपचार, अर्थव्यवस्था में अवैज्ञानिक निवेश और सामाजिक जीवन में अफवाहों पर विश्वास—ये सभी अंधविश्वास के आधुनिक रूप हैं। जब प्रमाणों के स्थान पर धारणाएँ निर्णय लेने लगती हैं, तब व्यक्ति अपनी स्वतंत्र सोच खो देता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अर्थ परंपराओं का विरोध करना नहीं, बल्कि प्रत्येक विचार को तर्क, अनुभव और प्रमाण की कसौटी पर परखना है। प्रश्न पूछना विद्रोह नहीं, बल्कि ज्ञान की पहली सीढ़ी है।

अज्ञान किसी भी समस्या की जड़ है, किंतु उससे भी अधिक खतरनाक है ज्ञान का भ्रम। आज सूचना का विस्फोट है, परंतु विवेक का विस्तार उसी अनुपात में नहीं हुआ। लोग पढ़ने से अधिक प्रतिक्रिया देने लगे हैं, समझने से अधिक निर्णय सुनाने लगे हैं। ज्ञान केवल तथ्यों का संग्रह नहीं है; वह दृष्टि है, जो तथ्यों के पीछे छिपे कारणों, परिणामों और संबंधों को समझने की क्षमता प्रदान करती है। शिक्षा यदि केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने का साधन बन जाए और चरित्र निर्माण का माध्यम न रहे, तो वह अपने मूल उद्देश्य से भटक जाती है। किसी भी राष्ट्र की सबसे बड़ी पूँजी उसकी शिक्षित जनसंख्या नहीं, बल्कि उसकी विवेकशील जनसंख्या होती है।

अहंकार मनुष्य की सबसे सूक्ष्म और सबसे विनाशकारी कमजोरी है। यह व्यक्ति

स्वार्थ, लालच, लोभ, मोह और तृष्णा मनुष्य की इच्छाओं को आवश्यकता से अलग कर देते हैं। आवश्यकता जीवन को चलाती है, जबकि तृष्णा जीवन को नियंत्रित करने लगती है। आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति ने सफलता को संपत्ति, प्रतिष्ठा और प्रदर्शन से जोड़ दिया है। परिणामस्वरूप संतोष का स्थान निरंतर तुलना ने ले लिया है। जिस समाज में व्यक्ति अपनी उपलब्धियों से अधिक दूसरों की उपलब्धियों की चिंता करता है, वहाँ मानसिक तनाव, असंतोष और सामाजिक दूरी स्वाभाविक रूप से बढ़ने लगती है।

को अपनी सीमाओं का बोध नहीं होने देता। अभिमान उसे दूसरों से श्रेष्ठ होने का भ्रम देता है और दंभ उसे अपनी कमियों को स्वीकार करने से रोकता है। यही कारण है कि इतिहास में अनेक शक्तिशाली व्यक्ति अपनी बाहरी पराजय से पहले आंतरिक अहंकार के कारण पराजित हुए। विनम्रता का अर्थ स्वयं को छोटा मानना नहीं, बल्कि सत्य को स्वयं से बड़ा मानना है। जो व्यक्ति सीखना बंद कर देता है, उसका विकास उसी क्षण रुक जाता है।

स्वार्थ, लालच, लोभ, मोह और तृष्णा मनुष्य की इच्छाओं को आवश्यकता से अलग कर देते हैं। आवश्यकता जीवन को चलाती है, जबकि तृष्णा जीवन को नियंत्रित करने लगती है। आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति ने सफलता को संपत्ति, प्रतिष्ठा और प्रदर्शन से जोड़ दिया है। परिणामस्वरूप संतोष का स्थान निरंतर तुलना ने ले लिया है। जिस समाज में व्यक्ति अपनी उपलब्धियों से अधिक दूसरों की उपलब्धियों की चिंता करता है, वहाँ मानसिक तनाव, असंतोष और सामाजिक दूरी स्वाभाविक रूप से बढ़ने लगती है। धन का होना समस्या नहीं है; धन का उद्देश्य बन जाना समस्या है। जब साधन ही साध्य बन जाएँ,

तब नैतिकता सबसे पहले प्रभावित होती है।

मत्सर, ईर्ष्या और द्वेष की उत्पत्ति तुलना से होती है। तुलना यदि प्रेरणा दे तो विकास का साधन है, किंतु यदि वह दूसरे के पतन में सुख खोजने लगे तो वही विनाश का कारण बन जाती है। आज सामाजिक माध्यमों ने तुलना की संस्कृति को अभूतपूर्व गति दी है। लोग दूसरों के जीवन के श्रेष्ठ क्षणों की तुलना अपने जीवन की सामान्य परिस्थितियों से करने लगे हैं। इससे आत्मविश्वास कम होता है और असंतोष बढ़ता है। प्रत्येक व्यक्ति की परिस्थितियाँ, संघर्ष, अवसर और गति अलग होती है। इसलिए स्वस्थ समाज वह है जहाँ प्रतिस्पर्धा से अधिक आत्मविकास को महत्त्व दिया जाए।

द्वेष, विद्वेष, दुर्भावना, नफरत, प्रतिशोध, क्रोध और हिंसा व्यक्ति के भीतर की असुरक्षा के बाहरी रूप हैं। जो व्यक्ति स्वयं से संतुष्ट नहीं होता, वह प्रायः दूसरों को दोषी ठहराकर मानसिक संतुलन खोजने का प्रयास करता है। हिंसा केवल शारीरिक नहीं होती; कटु शब्द, अपमान, सामाजिक बहिष्कार, झूठा प्रचार और मानसिक उत्पीड़न भी हिंसा के ही रूप हैं। किसी समाज की सभ्यता का मूल्यांकन इस आधार पर नहीं किया जाता कि वहाँ कितने लोग सहमत हैं, बल्कि इस आधार पर किया जाता है कि वहाँ असहमति का सम्मान कितना सुरक्षित है। संवाद लोकतंत्र की आत्मा है और सहिष्णुता उसकी सबसे बड़ी शक्ति।

छल, कपट, धोखा, बेईमानी, पाखंड और भ्रष्टाचार समाज में अचानक उत्पन्न नहीं होते। वे तब जन्म लेते हैं जब व्यक्तिगत सुविधा को सामूहिक उत्तरदायित्व से ऊपर रखा जाने लगता है। भ्रष्टाचार केवल आर्थिक अपराध नहीं है; यह विश्वास का ह्रास है। जब नागरिक व्यवस्था पर विश्वास खो देते हैं, तब विकास की गति चाहे जितनी दिखाई दे, उसकी नींव कमजोर हो जाती है। ईमानदारी केवल व्यक्तिगत सद्गुण नहीं, बल्कि सार्वजनिक जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है। जिस समाज में सत्यनिष्ठा सम्मान का विषय बनती है और बेईमानी सामाजिक लज्जा का कारण, वहीं स्थायी प्रगति संभव होती है।

यही वे मानसिक और नैतिक प्रवृत्तियाँ हैं जो धीरे-धीरे व्यक्ति के चरित्र, परिवार के संस्कार, समाज की संस्कृति और राष्ट्र की दिशा को प्रभावित करती हैं। इसलिए किसी भी सुधार की शुरुआत कानूनों से पहले चेतना में, नीतियों से पहले नैतिकता में और विकास से पहले आत्ममंथन में होनी चाहिए। बाहरी परिवर्तन तभी स्थायी होते हैं जब उनके पीछे आंतरिक परिवर्तन की दृढ़ आधारशिला उपस्थित हो।

अन्याय, अत्याचार, शोषण, भेदभाव, जातिवाद, सांप्रदायिकता और वैमनस्य किसी भी राष्ट्र के सामाजिक स्वास्थ्य के सबसे बड़े शत्रु हैं। इनका प्रभाव केवल पीड़ित व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की मानसिकता को भी प्रभावित करता है। जब जन्म, जाति, भाषा, धर्म, क्षेत्र या आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी मनुष्य का मूल्य निर्धारित किया जाने लगे, तब संविधान की भावना और मानवता का मूल दर्शन दोनों आहत होते हैं। किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी सेना, अर्थव्यवस्था अथवा जनसंख्या में नहीं, बल्कि इस तथ्य में निहित होती है कि उसका सबसे कमजोर नागरिक भी स्वयं को समान सम्मान और अवसर का अधिकारी महसूस करे। सामाजिक न्याय केवल न्यायालयों का विषय नहीं, बल्कि परिवार, विद्यालय, कार्यस्थल और सार्वजनिक जीवन की संस्कृति का अभिन्न अंग होना चाहिए।

असत्य, मिथ्याचार, असंवेदनशीलता, निर्दयता और निष्ठुरता आधुनिक समाज की वे मौन विकृतियाँ हैं जो धीरे-धीरे सामान्य व्यवहार का रूप धारण कर लेती हैं। आज सूचना का प्रवाह तीव्र है, किंतु संवेदना का विस्तार उतनी गति से नहीं हो रहा। किसी दुर्घटना या पीड़ा को सहायता के अवसर के बजाय दृश्य सामग्री के रूप में देखना मानवीय चेतना के क्षरण का संकेत है। करुणा सभ्यता का आभूषण नहीं, उसका आधार है। जो समाज दूसरों के दुःख को अपना दुःख समझने की क्षमता खो देता है, वह आर्थिक रूप से समृद्ध होकर भी नैतिक रूप से निर्धन बना रहता है।

अकर्मण्यता, आलस्य और प्रमाद व्यक्ति की क्षमताओं को भीतर ही भीतर समाप्त कर देते हैं। अवसरवाद और चापलूसी योग्यता की प्रतिष्ठा को कमज़ोर करते हैं तथा परिश्रम के स्थान पर सुविधा को स्थापित करते हैं। भय,

अनैतिकता, अविश्वास, असमानता, उपेक्षा, हठधर्मिता, नकारात्मकता और नैतिक पतन किसी समाज में एक दिन में उत्पन्न नहीं होते। इनकी जड़ें उन छोटे-छोटे समझौतों में होती हैं जिन्हें लोग सुविधा के नाम पर स्वीकार कर लेते हैं। सड़क पर नियम तोड़ने से लेकर सार्वजनिक संपत्ति की उपेक्षा तक, रिश्वत देने से लेकर असत्य को मौन स्वीकृति देने तक—प्रत्येक छोटी अनैतिकता भविष्य के बड़े संकट की आधारशिला बनती है। राष्ट्र केवल संविधान और संस्थाओं से संचालित नहीं होता; वह नागरिकों के दैनिक आचरण से भी निर्मित होता है। इसलिए नैतिकता को केवल उपदेश का विषय नहीं, बल्कि व्यवहार का संस्कार बनाना आवश्यक है।

असुरक्षा और कायरता मनुष्य को सत्य के पक्ष में खड़े होने से रोकते हैं। अविवेक, असंयम और असंतोष निर्णय क्षमता को प्रभावित करते हैं, जबकि कुंठा व्यक्ति को स्वयं की असफलताओं के लिए सदैव दूसरों को दोषी ठहराने की आदत सिखाती है। इन प्रवृत्तियों का परिणाम केवल व्यक्तिगत विफलता नहीं, बल्कि सामूहिक निष्क्रियता के रूप में सामने आता है। जब योग्य लोग मौन हो जाते हैं और अवसरवादी सक्रिय हो जाते हैं, तब संस्थाओं का क्षरण आरम्भ हो जाता है।

अनैतिकता, अविश्वास, असमानता, उपेक्षा, हठधर्मिता, नकारात्मकता और नैतिक पतन किसी समाज में एक दिन में उत्पन्न नहीं होते। इनकी जड़ें उन छोटे-छोटे समझौतों में होती हैं जिन्हें लोग सुविधा के नाम पर स्वीकार कर लेते हैं। सड़क पर नियम तोड़ने से लेकर सार्वजनिक संपत्ति की उपेक्षा तक, रिश्वत देने से लेकर असत्य को मौन स्वीकृति देने तक—प्रत्येक छोटी अनैतिकता भविष्य के बड़े संकट की आधारशिला बनती है। राष्ट्र केवल संविधान और संस्थाओं से संचालित नहीं होता; वह नागरिकों के दैनिक आचरण से भी निर्मित होता है। इसलिए नैतिकता को केवल उपदेश का विषय नहीं, बल्कि व्यवहार का संस्कार बनाना आवश्यक है।

इन सभी विकृतियों का समाधान केवल कठोर कानूनों, दंडात्मक व्यवस्थाओं अथवा प्रशासनिक नियंत्रण में नहीं है। कानून भय उत्पन्न कर सकता है, किंतु चरित्र का निर्माण नहीं कर सकता। चरित्र का निर्माण परिवार में संस्कारों से, विद्यालय में मूल्यपरक शिक्षा से, समाज में उत्तरदायी संवाद से, साहित्य में संवेदनशील विचारों से और व्यक्तिगत जीवन में सतत आत्मानुशासन से होता है। यदि शिक्षा केवल कौशल दे और चरित्र न दे, यदि राजनीति केवल सत्ता दे और सेवा न दे, यदि विज्ञान केवल साधन दे और विवेक न दे, तो विकास अधूरा रहेगा। ज्ञान, नैतिकता और उत्तरदायित्व का समन्वय ही स्वस्थ समाज की वास्तविक पहचान है।

परिवार इस परिवर्तन की प्रथम पाठशाला है। बालक वही सीखता है जो वह देखता है। यदि घर में सत्य, श्रम, अनुशासन, करुणा और समानता का वातावरण होगा, तो वही संस्कार उसके व्यक्तित्व का स्थायी आधार बनेंगे। विद्यालयों को केवल परीक्षा परिणामों का केंद्र नहीं, बल्कि नागरिक चेतना के निर्माण का संस्थान बनना होगा। विश्वविद्यालयों में स्वतंत्र चिंतन, तर्क, शोध और सामाजिक उत्तरदायित्व की संस्कृति विकसित करनी होगी। मीडिया को सनसनी के स्थान पर तथ्य, संवाद और जनहित को प्राथमिकता देनी चाहिए। साहित्य और कला को भी मनोरंजन के साथ-साथ समाज की नैतिक चेतना को जागृत करने का दायित्व निभाना होगा।

स्थानीय स्तर पर भी परिवर्तन की अपार संभावनाएँ हैं। ग्राम सभाएँ, नगर समितियाँ, पुस्तकालय, युवा मंडल, स्वयंसेवी संस्थाएँ और सामाजिक संगठन यदि स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, नशामुक्ति, साक्षरता, संवैधानिक मूल्यों और नागरिक कर्तव्यों पर निरंतर जनजागरण चलाएँ, तो परिवर्तन अधिक स्थायी होगा। जब नागरिक केवल अधिकारों की नहीं, कर्तव्यों की भी चर्चा करने लगेंगे, तभी लोकतंत्र परिपक्व होगा। सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, यातायात नियमों का पालन, करों का ईमानदारी से भुगतान, जल और ऊर्जा का संयमित उपयोग तथा सामाजिक सद्भाव बनाए रखना भी राष्ट्रसेवा के ही स्वरूप हैं।

भारतीय चिंतन ने सदैव आत्मविजय को विश्वविजय से अधिक महत्त्व दिया है। उपनिषदों से लेकर बुद्ध, महावीर, कबीर, गुरु नानक, स्वामी विवेकानंद और महात्मा गांधी तक सभी ने मनुष्य के भीतर परिवर्तन को ही बाहरी परिवर्तन का मूल आधार माना। जब तक मनुष्य अपने भीतर छिपे अहंकार, लालच, द्वेष और असत्य को पराजित नहीं करता, तब तक कोई भी सामाजिक व्यवस्था स्थायी रूप से आदर्श नहीं बन सकती। राष्ट्र का चरित्र उसके नागरिकों के चरित्र का ही विस्तृत रूप होता है।

अंततः यह स्मरण रखना होगा कि सभ्यता का भविष्य तकनीकी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि नैतिक चेतना से सुरक्षित होता है। यदि विवेक श्रद्धा का मार्गदर्शन करे, विज्ञान संवेदना के साथ चले, शक्ति न्याय के अधीन रहे और विकास मानवीय गरिमा को केंद्र में रखे, तभी सच्चे अर्थों में प्रगतिशील समाज का निर्माण संभव होगा। आत्मचिंतन, सत्यनिष्ठा, करुणा, उत्तरदायित्व और सतत आत्मपरिष्कार ही वे प्रकाशस्तंभ हैं जो व्यक्ति को श्रेष्ठ नागरिक, समाज को सशक्त समुदाय और राष्ट्र को स्थायी रूप से समृद्ध एवं मानवीय सभ्यता में रूपांतरित कर सकते हैं। यही आत्मविजय, राष्ट्रविजय की सबसे विश्वसनीय और शाश्वत आधारशिला है।

किसी को सलाह देना हो तो उसकी अच्छाई बुराई का ख्याल भी करना आवश्यक होता है

डॉ. बी.आर. नलवाया
मन्दसौर (म.प्र.)

हर क्षेत्र में चाहे वह सामाजिक संस्था हो, धार्मिक संस्था हो, शैक्षणिक संस्था हो, सांस्कृतिक संस्था हो, खेलकूद की संस्था हो या राजनीतिक संगठन या आश्रम में गुरु द्वारा शिक्षा दी जाती हो शिष्यो को इत्यादि संस्थाओं के पदाधिकारियों में वरिष्ठ व्यक्ति ही सही मार्गदर्शन देने में सक्षम होते हैं। चाहे आप उन संस्थाओं के पूर्व पदाधिकारियों से सलाह ले या ना ले परंतु उनके अनुभव अत्यंत ही उपयोगी होते हैं, क्योंकि बड़े बुजुर्ग, अभिभावक, गुरुजन, मित्र, सगे संबंधी से किसी भी शुभ अशुभ मौके पर सलाह लेने और देने की परंपरा भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से चली आ रही है। हालांकि कुछ लोग अपने आपको ज्यादा ही समझदार समझते हैं और बिना वरिष्ठ व्यक्ति की सलाह के जीवन के महत्वपूर्ण फैसले कर लेते हैं। नतीजन ऐसे लोग कई बार संकट में भी फंस जाते हैं।

सलाह लेना और देना समाज में सहिष्णुता और नैतिकता विकसित करने का आध्यात्मिक मार्ग भी है। यही वजह है कि हमारे यहां अतीत से ही यह परंपरा चली आ रही है कि वरिष्ठ व्यक्ति से सलाह लेने व देने का मार्ग अनुचित नहीं होता है। यहां यह जिक्र करना भी लाजमी है, कि भगवान श्रीकृष्ण की सलाह अगर दुर्योधन मान लेता, तो महाभारत जैसा भयंकर युद्ध नहीं होता और कौरव वंश का विनाश नहीं होता, वही श्री कृष्ण की सलाह मानने के कारण ही पांडवों की विजय तय हुई।

किसी को सलाह देना हो तो उसकी अच्छाई-बुराई का ध्यान रखें....

उपनिषद कहते हैं कि ब्रह्माजी की तीन संतानें हैं- देवता, दानव और मनुष्य। एक दिन ये तीनों ब्रह्माजी के पास पहुंचे। तीनों ने उनसे कहा कि हमें कोई उपदेश दीजिए, जिससे हमारा जीवन सफल हो जाए। ब्रह्माजी ने तीनों को "द" शब्द दिया। "द" शब्द का अर्थ देवता, दानव और मनुष्य, तीनों के लिए अलग-अलग था।* सबसे पहले ब्रह्माजी देवताओं से बोले, कि तुम्हारे जीवन में भोग-विलास बहुत अधिक है। इसलिए तुम्हारे लिए द का अर्थ है... दमन। दमन यानी नियंत्रण। अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण करना।

मनुष्यों से ब्रह्माजी बोले कि मैंने तुम्हें द शब्द इसलिए दिया है कि तुम इससे दान करो। दान का अर्थ है सेवा। मनुष्य शरीर से किया जा सकने वाला सबसे अच्छा काम होता है, किसी की सेवा करना। सेवा करना ही इंसानों का मुख्य धर्म है। अंत में ब्रह्माजी ने दानवों से कहा कि तुम हिंसक हो। लड़ाई-झगड़ा करना ही तुम्हारा स्वभाव है। तुम्हारे लिए द का अर्थ है दया। तुम अत्याचारी हो और जीवनभर हिंसा ही करोगे। इसलिए एक बात याद रखना दूसरों पर दया करना।

सीख निष्कर्ष - ब्रह्माजी ने जो किया, वही हमें भी करना चाहिए। जब भी किसी को ज्ञान, उपदेश, समझाइश देना हो तो उस व्यक्ति के स्वभाव, आदतों और उसके मनोविज्ञान पर जरूर नजर रखें। व्यक्ति की अच्छी-बुरी आदतें, उसकी रुचि, लक्ष्य को समझें। इसके बाद ही ये दूरदर्शिता रखें कि आगे जाकर ये अपनी बुराइयों से क्या नुकसान करेगा, उस नुकसान की भरपाई किस ज्ञान से होगी? वैसा ही ज्ञान, उपदेश या सलाह देनी चाहिए।

सलाह के संबंध में यहां एक ओर प्रसंग अत्यंत महत्वपूर्ण है कि--- "यूनान के एक प्रसिद्ध दार्शनिक सुकरात भ्रमण करते हुए एक शहर में पहुंचे। वहां उनकी एक वृद्ध व्यक्ति से भेंट हुई वे दोनों काफी घुलमिल गए। सुकरात ने उनके व्यक्तिगत जीवन में काफी रूचि ली और उनसे काफी खुलकर बातें की। संतोष व्यक्त करते हुए सुकरात ने कहा आप का गत जीवन तो बड़े शानदार ढंग से बीता है, लेकिन इस वृद्धावस्था में आपको कौन-कौन से पापड़ बेलने पड़ रहे हैं, यह तो बतलाइए। वृद्ध ने... मुस्कुराते हुए कहा कि, मैं अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को अपने समर्थ पुत्रों को देकर निश्चिंत हूं। वह जो कहते हैं, वह मैं कर देता हूं, जो खिलाते हैं, वह खा लेता हूं, और पौत्र-पौत्रियों के साथ हंसता खेलता रहता हूं। बच्चे कुछ भूल भी करते हैं, फिर भी मैं चुप रहता हूं, मैं उनके कार्य में बाधक नहीं बनता, लेकिन जब कभी भी वे मुझसे परामर्श लेने आते हैं, तो मैं अपने जीवन के सारे अनुभवो को उनके सामने रख देता हूं,और की गई भूलों से उत्पन्न दुष्परिणामों की ओर उन्हें सचेत कर देता हूं। वे मेरी सलाह पर कितना चलते हैं, यह देखना मेरा काम नहीं है। वह मेरे निर्देशों पर चले यह मेरा आग्रह नहीं होता। परामर्श देने के बाद भी यदि वह भूल करते हैं, तो मैं चिंतित नहीं होता, उस पर भी यदि वे पुनः मेरे पास आते हैं, तो उनके लिए मेरा दरवाजा सदैव खुला रहता है, मैं उन्हें उचित सलाह देकर विदा कर देता हूं।

उपनिषद कहते हैं कि ब्रह्माजी की तीन संतानें हैं- देवता, दानव और मनुष्य। एक दिन ये तीनों ब्रह्माजी के पास पहुंचे। तीनों ने उनसे कहा कि हमें कोई उपदेश दीजिए, जिससे हमारा जीवन सफल हो जाए। ब्रह्माजी ने तीनों को "द" शब्द दिया। "द" शब्द का अर्थ देवता, दानव और मनुष्य, तीनों के लिए अलग-अलग था।*

वृद्ध की बात सुनकर सुकरात बहुत ही प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा इस आयु में भी जीवन को सुंदर ढंग से कैसे जिया जाए। यह आपने बखूबी समझ लिया है इसीलिए आपकी वृद्धावस्था बहुत अच्छी दिख रही है।

अतः सारांश यह है कि वृद्धजनों, साधु-संत,ऋषि मुनियों, विद्वानों से सलाह लेना अत्यंत महत्वपूर्ण है, इन विद्यवजनो के पास बैठने से उनके बरसों का अनुभव आपको कुछ लम्हों में ही मिल जाता है। और आप जीवन में गलतियां करने से बच जाते हैं।

वास्तव में, सही समय पर सही व्यक्ति से ली गई सलाह जीवन की दिशा बदलने की क्षमता रखती है। अनुभव से प्राप्त मार्गदर्शन व्यक्ति को केवल समस्याओं से बचने में ही सहायता नहीं करता, बल्कि उसके व्यक्तित्व, निर्णय क्षमता और जीवन मूल्यों को भी परिपक्व बनाता है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि सलाह देने वाला निष्पक्ष, सद्भावनापूर्ण और दूरदर्शी हो तथा सलाह लेने वाला खुले मन से उसका विवेकपूर्ण मूल्यांकन करे। जब अनुभव, विवेक और विनम्रता का समन्वय होता है, तभी सलाह सार्थक सिद्ध होती है और व्यक्ति अपने जीवन में सफलता, संतुलन तथा आत्मिक संतोष की ओर अग्रसर होता है। यही भारतीय संस्कृति की वह अमूल्य परंपरा है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान, अनुभव और जीवन मूल्यों का सतत संचार करती आ रही है।

अंततः यह समझना आवश्यक है कि सलाह केवल सुन लेने से जीवन नहीं बदलता, बल्कि उसे उचित समय पर व्यवहार में उतारने से उसका वास्तविक लाभ प्राप्त होता है। विवेकपूर्ण सलाह व्यक्ति को भ्रम, अहंकार और जल्दबाजी में लिए गए गलत निर्णयों से बचाती है तथा उसके भीतर धैर्य, संतुलन और दूरदर्शिता का विकास करती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में ऐसे अनुभवी, निष्पक्ष और सद्भावनापूर्ण मार्गदर्शकों का सम्मान करना चाहिए, जो बिना किसी स्वार्थ के सही दिशा दिखाने का प्रयास करते हैं। वहीं सलाह देने वालों का भी यह दायित्व है कि वे सामने वाले की परिस्थिति, क्षमता, स्वभाव और आवश्यकताओं को समझकर ही मार्गदर्शन दें। जब सलाह संवेदनशीलता, अनुभव और सद्भाव के साथ दी जाती है, तभी वह व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का माध्यम बनती है और समाज को अधिक जागरूक, संतुलित तथा संस्कारित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संकल्प, संघर्ष और स्वर्णिम तिरंगा: खिलाड़ियों की अविश्वसनीय दास्तान

डॉ. सीमा ओझा
बाराबंकी

यह कहानी केवल खेल के मैदानों पर बने रिकॉर्ड्स की नहीं है; यह इंसानी जज्बे, कभी न टूटने वाले हौसले और उन बेड़ियों को तोड़ने की गाथा है जो एक साधारण इंसान को असाधारण बना देती है। जब दुनिया के किसी भी कोने में राष्ट्रगान बजता है और भारतीय तिरंगा सबसे ऊपर फहराता है, तो उस क्षण के पीछे केवल पसीना नहीं, बल्कि बरसों की खामोश तपस्या और अनगिनत आँसू छिपे होते हैं। हाल ही में चल रहे ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेल (CWG) 2026, विश्व पैरा-एथलेटिक्स, अंतरराष्ट्रीय वेटलिफ्टिंग कप और शतरंज की बिसात पर भारतीय खिलाड़ियों ने यह साबित कर दिया है कि जब इरादे चट्टान जैसे हों, तो किस्मत को भी घुटने टेकने पड़ते हैं।

राष्ट्रमंडल खेल 2026 में भारत का सफर अब तक का बेहद प्रेरणादायक रहा है, जहाँ देश ने भारोत्तोलन, एथलेटिक्स, पैरा-एथलेटिक्स और पैरा-पावरलिफ्टिंग जैसे विभिन्न खेलों में कुल 12 पदक (3 स्वर्ण, 6 रजत और 3 कांस्य) अपनी झोली में डाले हैं। इनमें सबसे ऐतिहासिक स्वर्णिम चमक भारोत्तोलन में मीराबाई चानू के लगातार तीसरे राष्ट्रमंडल खेल स्वर्ण (महिला 48 किग्रा में 190 किग्रा भार उठाकर), पैरा-एथलेटिक्स में दिलीप महादू गावित के पुरुषों की 100 मीटर T47 स्पर्धा में नया गेम्स रिकॉर्ड बनाकर जीते गए स्वर्ण और शर्मिला ढांकड़ के ऐतिहासिक प्रदर्शन से आई है। इसके साथ ही ऋषिकांत सिंह (60 किग्रा), राजा मुथुपंडी (65 किग्रा), ज्ञानेश्वरी यादव (53 किग्रा), वल्लूरी अजय बाबू (79 किग्रा), हरजिंदर कौर (69 किग्रा) ने वेटलिफ्टिंग में रजत पदक जीते, जबकि बिंद्यारानी देवी (58 किग्रा) ने कांस्य पदक हासिल किया। वहीं एथलेटिक्स में पुरुषों की हाई जंप में सर्वेश कुशारे ने ऐतिहासिक रजत, लंबी कूद में मुरली श्रीशंकर ने रजत और पुरुषों की 10,000 मीटर रेस में गुलवीर सिंह ने भारी बारिश के बीच अपनी रणनीति से भारत को इस स्पर्धा का पहला ऐतिहासिक रजत पदक दिलाया। पैरा-एथलेटिक्स में शिल्पा शायला ने कांस्य और मोहम्मद बासिल ने रजत पदक जीतकर राष्ट्रमंडल खेलों के मंच पर भारत का मस्तक ऊंचा किया है।

इसी राष्ट्रमंडल खेल 2026 के मंच से संघर्ष की सबसे दिल छू लेने वाली गाथा 40 वर्षीया पैरा-एथलीट शर्मिला ढांकड़ की निकलकर आई है, जिन्होंने महिलाओं की शॉटपुट F57 स्पर्धा में 9.81 मीटर का थ्रो करके भारत को राष्ट्रमंडल खेलों के इतिहास का पैरा-एथलेटिक्स में पहला स्वर्ण पदक दिलाया। हरियाणा के चित्रावली गाँव में एक निर्धन किसान और दृष्टिबाधित माँ के घर जन्मी शर्मिला को दो साल की उम्र में पोलियो हो गया था। 18 साल की उम्र में शादी के बाद उन्हें दहेज प्रताड़ना और दो बेटियाँ पैदा होने पर भयानक घरेलू हिंसा का सामना करना पड़ा, यहाँ तक कि उन्हें जान से मारने की कोशिश भी की गई। 26 साल की उम्र में बेटियों को लेकर घर से निकली शर्मिला ने झाड़ू-पोछा किया, घरों में नौकरानी बनीं और हरियाणा बस स्ट्राइक के दौरान बस कंडक्टर तक की नौकरी की। बाद में जब उनकी शादी पुनः अजीत सिंह से हुई, तो उनके पति ने उनके भीतर छिपी प्रतिभा को पहचाना और यहाँ तक कि ट्रेनिंग और डाइट के लिए 2023

में अपना घर तक बेच डाला। 34 साल की उम्र में जहाँ लोग संन्यास सोचते हैं, शर्मिला ने शॉटपुट उठाना शुरू किया और 40 की उम्र में ग्लासगो में इतिहास रच दिया।

बिहार के नालंदा जिले के हरनौत गाँव की धूल भरी गलियों से निकलकर ग्लासगो राष्ट्रमंडल खेलों के पोडियम तक का सफर तय करने वाले पैरा-पावरलिफ्टर झंडू कुमार की दास्तान भी हर उस इंसान के लिए मिसाल है जो अभावों का रोना रोता है। जब झंडू केवल चार वर्ष के थे, तब पोलियो जैसी गंभीर बीमारी ने उनके पैरों की ताकत छीन ली। गरीबी इतनी गहरी थी कि पिता रामआनंद पासवान सब्जी बेचकर जैसे-जैसे परिवार का पेट पालते थे। सामाजिक तानों और अपने ही नाम को लेकर उपहास सहने वाले झंडू ने हार मानने के बजाय जिम की राह चुनी। जब कोविड महामारी के दौरान उनकी सब्जी की दुकान बंद हो गई, तो उन्होंने हार मानने के बजाय कर्ज लेकर ई-रिक्शा (टोटो) चलाना शुरू कर दिया। दिन भर 20 किलोमीटर दूर जाकर सब्जी खरीदना या ई-रिक्शा चलाकर 400-500 रुपये कमाना और फिर रात को थकान से चूर शरीर के साथ अभ्यास करना—यह उनकी दिनचर्या थी। खेल के प्रति जुनून ऐसा था कि नेशनल चैंपियनशिप के लिए उन्होंने अपना ई-रिक्शा तक बेच डाला। उसी जिद और कोच राजिंदर सिंह रहेलू के मार्गदर्शन ने रंग दिखाया जब राष्ट्रमंडल खेलों में 72 किलोग्राम वर्ग में भारी वजन उठाकर झंडू कुमार ने कांस्य पदक अपने नाम किया और दुनिया भर में भारत का नाम रोशन कर दिया।

सुदूर पूर्वोत्तर के खूबसूरत राज्य अरुणाचल प्रदेश के क्रा दाडी जिले के एक छोटे से गाँव चंबांग से निकलकर वैश्विक वेटलिफ्टिंग में तहलका मचाने वाले चारू पेसी का संघर्ष भी उतना ही प्रेरणादायक है। सुविधाओं से कोसों दूर पहाड़ियों के बीच अपनी कला को तराशने वाले चारू पेसी ने अपने सपनों को साकार करने के लिए दिन-रात एक कर दिया। अपिया (समोआ) में आयोजित अंतरराष्ट्रीय वेटलिफ्टिंग कप में पुरुषों के 65 किग्रा वर्ग में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्होंने न केवल प्रतिद्वंद्वियों को पछाड़ा, बल्कि स्नैच में 127 किग्रा और क्लीन एंड जर्क में 162 किग्रा उठाकर कुल 289 किग्रा भार के साथ एक साथ तीन-तीन स्वर्ण पदक भारत की झोली में डाल दिए। चारू की यह कामयाबी उस लंबे संघर्ष का प्रतिफल है जो उन्होंने सीमित संसाधनों में सालों तक अभ्यास करते हुए झेला था।

जहाँ एक ओर ताकत और शारीरिक क्षमताओं के मैदान में भारत का परचम लहरा रहा है, वहीं शतरंज की 64 खानों वाली बिसात पर केवल 11 साल की नन्हीं प्रतिभाएँ ऐसा जादू बिखेर रही हैं जिसे देखकर पूरी दुनिया हैरान है। 11 वर्ष की नन्हीं शतरंज खिलाड़ी बोधना शिवनंदन ने फ्रांस के एक्स-एन-प्रोवेंस में आयोजित प्रतियोगिता में 2628 रेटिंग वाले 19 वर्षीय फ्रेंच ग्रैंडमास्टर मार्क एंड्रिया मौरिज़ी को मात देकर शतरंज इतिहास का 38 साल पुराना विश्व रिकॉर्ड तोड़ दिया। महान खिलाड़ी जूडिट पोलगर के रिकॉर्ड को ध्वस्त करने वाली बोधना ने साबित किया कि एकाग्रता और रणनीतिक सोच की कोई उम्र नहीं होती। ठीक इसी तरह, भारत की दिव्या देशमुख ने भी महज 11 साल की उम्र में अंडर-12 वर्ल्ड कैडेट शतरंज चैंपियनशिप में नाबाद रहते हुए भारत के लिए स्वर्ण पदक जीता था, जो आज भी लाखों युवा दिमागों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

बैडमिंटन कोर्ट पर भारत की पहचान बन चुकीं दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पी.वी. सिंधु का हालिया सफर यह सिखाता है कि जब पूरी दुनिया आपको खत्म मान ले, तब वापसी कैसे की जाती है। दो साल के लंबे खिताबी सूखे, चोटों के दर्द और लगातार मिल रही आलोचनाओं को सहते हुए सिंधु ने हार नहीं मानी। जापान ओपन के फाइनल मुकाबले में उन्होंने पूर्व विश्व चैंपियन जापान की अकाने यामागुची को सीधे सेटों में 21-17, 21-17 से हराकर न केवल खिताब जीता, बल्कि जापान ओपन जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनने का गौरव हासिल किया। सिंधु की यह जीत साबित करती है कि असली चैंपियन वह नहीं जो कभी गिरता नहीं, बल्कि वह है जो हर गिरावट के बाद और अधिक मजबूती के साथ वापस खड़ा होता है।

मैदान के दूसरे छोर पर हमारे पैरा-एथलीटों की दास्तानें भी उतनी ही आँखें नम कर देने वाली और सीना गर्व से चौड़ा कर देने वाली हैं। टोक्यो पैरालंपिक के स्वर्ण पदक विजेता भाला फेंक एथलीट सुमित अंतिल और शूटिंग स्टार अवनी लेखरा ने अपने जीवन में आई दुर्घटनाओं और शारीरिक अक्षमताओं को कभी अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया। व्हीलचेयर पर बैठकर या कृत्रिम अंगों के सहारे अभ्यास करते हुए जब वे मैदान में उतरते हैं, तो उनका लक्ष्य केवल पदक जीतना नहीं होता, बल्कि उन लाखों लोगों को यह संदेश देना होता है कि जीवन की सबसे बड़ी जंग खुद से होती है। सुमित अंतिल का बार-बार अपना ही विश्व रिकॉर्ड तोड़ना और अवनी लेखरा का सटीक निशानों से स्वर्ण पदक हासिल करना इस बात की गवाही देता है कि यदि मन में अटूट विश्वास हो तो शारीरिक अक्षमताएँ भी घुटने टेक देती हैं।

इन सभी खिलाड़ियों की कहानियाँ केवल खेल समाचारों का हिस्सा नहीं हैं, बल्कि ये हर उम्र के पाठक, विशेषकर आज की युवा पीढ़ी (Gen Z) के लिए एक जीवन-दर्शन हैं। यह गाथा हमें सिखाती है कि असफलताएँ जीवन का अंत नहीं, बल्कि सफलता की ओर बढ़ने वाला पहला कदम होती हैं। जब आप अपनी ऊर्जा को केवल अपने लक्ष्य पर केंद्रित कर देते हैं, तो परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों, रास्ते खुद-ब-बढ़ बनते चले जाते हैं। इनकी यह स्वर्णिम दास्तान आने वाली कई पीढ़ियों को अपने सपनों के लिए लड़ने और जीत दर्ज करने का हौसला देती रहेगी।

बदला बदला सा बचपन घड़ी की सुइयों में बंधा

सुषमा त्रिपाठी

आजकल तो पेरेंट्स मे बच्चों को लेकर महत्वाकांक्षाएं और असुरक्षा दोनो ही बहुत बढ़ गई है। दूसरे से तुलना करना और अपने बच्चों के पीछे छूट जाने का डर हमेशा बना रहता है। कई छोटी-छोटी चीज़ें जो की बच्चे बड़ों के साथ आसानी से सीख जाते थे अब तो उनकी भी क्लासेज चलती है। कई बार माँ बच्चों का ऐसा व्यस्त शेड्यूल उन्हें अपने अभिभावकों से दूर ही कर देता है। इसीलिए जरूरी है कि बच्चों को अपने समय के साथ चीज़ों को स्वयं एक्सप्लेन करने दें। उनकी रूचि का ज्यादा बढ़ावा देना चाहिए पर उसे प्रतियोगिता नहीं बनने देना चाहिए। क्योंकि हर बच्चा हर क्षेत्र में अव्वल नहीं हो सकता यह बात हर माता-पिता तथा पेरेन्ट्स को समझना बहुत ही ज्यादा जरूरी है।

बचपन एक ऐसी उम्र होती है जब किसी तनाव और समय के बंधन के बिना मस्ती से ज़िन्दगी का आनंद लिया जाता था, मगर अब इस बदलते हुए समाज में तो सबकुछ उलट-पुलट कर रख दिया है। मासूम चेहरों पर खिलती हँसी और शरारतों से भरा रूठना मनाना ये तो आज के बचपन की पहचान ही नहीं है।

आज के बच्चे तो बड़ों से भी ज्यादा बोझ तले दबे हुए हैं। आज के युग में हमारे बच्चों का वो बेखौफ बचपन ही गायब हो गया है। आज के युग के बच्चों में तो अव्वल आने की वजह से मुस्कराना ही भूल गए हैं। मुस्कुराहट की जगह अव्वल आने की चिंता ने ले ली है। इसीलिए बच्चे पर किसी भी किस्म का दबाव डालने से पहले उसकी क्षमता का आंकलन करना बेहद ज़रूरी है। उनकी मासूमियत पर कहीं हमारी महत्वाकांक्षाएं भारी न पड़ जाए इस बात का ध्यान रखना भी ज़रूरी है। बच्चे के खुद की रचनात्मकता को बढ़ावा देने के लिए यह ज़रूरी है कि बिना हमारे और आपके और इन्टरनेट के बिना स्वयं उन्हें सोचने समझने का मौका देना चाहिए। बच्चों की क्रिएटिवीटि को निखारने के लिए जरूरी हे कि खेल के समय वे प्रकृति, दोस्तों और स्वयं अपने साथ बिना किसी बधन के वक्त बिताने देना चाहिए।

पल-पल का हिसाब

हर माता-पिता की बस एक ही इच्छा होती है कि उसका बच्चा हर जगह हर हाल में अव्वल आना चाहिए। इसलिए घड़ी की सुइयों में पल-पल का हिसाब लगा दिया जाता है। इतने बजे खाना, इतने बजे सोना, इतने बजे उठना, इतने बजे खेलना। हर पला का हिसाब बच्चों को दे दिया जाता है। मौज-मस्ती भरे खेलों की जगह सब कुछ सीखने के दबाव ने इन मासूम चेहरों को उदासी व तनाव की सौगात दे दी है। जिन्दगी के मैदान में अब प्रतिस्पर्धा ही है। अब इसे दबाव कहें या साथियों से पीछे छूट जाने का भय बच्चों का बचपन जरूर बंध कर रह गया है। बीते कुछ वर्षों से एकल परिवारों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। घर मे एक या दो बच्चे होते हैं। जिसके चलते माता-पिता उन पर दिल खोलकर खर्चा करके उन्हे हर गतिविधियों में भागीदार बनाने की इच्छा रखते हैं। बच्चा आलराउण्डर बने

और दूसरे बच्चों से ज्याद सुपीरियर दिखे। यही ख्वाहिश तो मासूमियत पर भारी है। बच्चों के भविष्य के प्रति आई जागरूकता अच्छी बात है पर अव्यवहारिक अपेक्षाओं का वनज हम मासूमों से उनका बचपन छीन लेता है। इसीलिए उनका व्यवहार और विचार भी बदल रहा है। कम उम्र में ही हर बार पर तर्क-कुतर्क भी करने लगे हैं। हर हाल में बच्चे का भविष्य चमके यह देखने के लिए माता-पिता की सोच ने इन मासूमों को ही मशीन बनाकर रख दिया है।

महत्वकांक्षाओं का यह बोझ उन्हें अवसाद की ओर ले जा रहा है। 8 से 10 वर्ष तक के उम्र के बच्चे 30 फीसद तक तनाव और अवसाद के शिकार हो रहे हैं। क्योंकि इस उम्र मे भी उनको खुलकर जीने का मौका नहीं मिल पा रहा है। वे न तो परिवोशसे कुछ सीख पा रहे हैं और न ही परिवार से। कुल मिलाकर अगर देखा जाए तो सीखने-सिखाने के इस फेर बदल में बच्चों की खुशी पर उनकी कामयाबी भारी पड़ रही है। बच्चों को लेकर महत्वाकांक्षी होना गलत तो नहीं है परन्तु उनकी क्षमता और सोच को भी समझना बहुत ही जरूरी और आवश्यक है। अब तो सब कुछ बस ट्यूशन, होमवर्क, असाइनमेंट, प्रोजेक्ट और परीक्षा तक ही सीमित है। सोने, जागने से लेकर पढ़ने-लिखने और खेलने खाने तक का समय सारिणी में उनका पल-पल कैद है। बस कुछ गुम गया है तो बेवजह का बतियाना, हुडदंग मचाना और बचपन की मासूम भरी आलस और ज़िद। बच्चों की ऐसी शेड्यूल देखकर लगता है कि कभी अल्हड़ सा, बेतरतीब सा, बिखरा सा रहने वाला बचपन अब नियम कायदों और घडी. की सुइयों से बंधकर रह गया है। हर उस बच्चे का टाइम-टेबल है जिनकी पीठ पर भारी बस्ता और मन पर ज़बरदस्ती की व्यत्ताओं का बोझ लदा है।

हर बच्चा नहीं हो सकता अव्वल

यह बच्चां और माता पिता के लिए दुविधा

बच्चों पर पढ़ाई के अलावा भी हर क्षेत्र में आगे बढ़ेन का इतना दबाव है कि जिसके कारण उनका बचपन खोता चला जा रहा है। बच्चों के पास स्कूल से आने के बाद इतना होमवर्क होता है फिर क्लोसज, ट्यूशन वगैरह। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि बच्चों को कहीं न कहीं हमारे अधूरे सपनों का बोझ भी उठाना पड़ता है। समय तो है, लेकिन कई हिस्सों मे बंटा हुआ है जिसे चाहकर भी बच्चे अपने लिए नहीं निकाल पाते।

भरा समय है। अधिकतर परिवार एकल है और दोनों ही अभिभावक कामकाजी हैं। ऐसे में उन्हें लगता है कि बच्चे जितने व्यस्त रहें उतना ही अच्छा है। कई सारे क्लासेज तो इसीलिए करवाए जाते हैं। आजकल तो पेरेंट्स मे बच्चों को लेकर महत्वाकांक्षाएं और असुरक्षा दोनो ही बहुम बढ़ गई है। दूसरे से तुलना करना और अपने बच्चों के पीछे छूट जाने का डर हमेशा बना रहता है। कई छोटी-छोटी चीज़ें जो की बच्चे बड़ों के साथ आसानी से सीख जाते थे अब तो उनकी भी क्लासेज चलती है। कई बार मो बच्चों का ऐसा व्यस्त शेड्यूल उन्हें अपने अभिभावकों से दूर ही कर देता है। इसीलिए जरूरी है कि बच्चों को अपने समय के साथ चीज़ों को स्वयं एक्सप्लेन करने दें। उनकी रूचि का ज्यादा बढ़ावा देना चाहिए पर उसे प्रतियोगिता नहीं बनने देना चाहिए। क्योंकि हर बच्चा हर क्षेत्र में अव्वल नहीं हो सकता यह बात हर माता-पिता तथा पेरेन्ट्स को समझना बहुत ही ज्यादा जरूरी है। इसीलिए सहज और सरल भाव से वे जो भी सीखेंगे अच्छा ज्ञान उसमें बेहतर तथा अच्छा प्रदर्शन करके दिखा सकते हैं।

दिमाग की विसात पर ज़िन्दगी

पढ़ाई ही नहीं अब तो खेलों में भी दिमाग की धार तेज करना सिखाया जा रहा है। बच्चे अपनी मर्जी से गेम और खेल भी अपनी पसंद का नहीं खेल पा रहे हैं। जबकि हर बच्चा अपने आप मे खास होता है। उसमें से कुछ खास प्रतिभा तो जरूर ही होता है। बच्चों पर ज्यादा दबाव नहीं डालना चाहिए नही तो बच्चों में उदासी, तनाव और नकरात्मक विचार उनके दिमाग में घर बना लेती है। आज का हर बच्चा अपनी क्षमता से अधिक मानसिक बोझ उठा रहा है। यह असहनीय बोझ बच्चों की सेहत को लेकर कई खतरें पैदा कर रहा है। घर व स्कूल में खेलने का समय न मिलने के कारण बच्चों में सहनशीलता की कमी आ रही है। पूरे देश के स्कूली बच्चों को सर्वे किया गया है जिसमें आया है कि प्रति पांच में से एक बच्चे में सहनशीलता और धैर्य की कमी होती जा रही है। सहनशीलता की कमी के कारण बच्चों में चिड़चिड़ापन भी बढ़ता चला जा रहा है जो की उनकी सेहत पर गलत असर डाल रहा है। कुल मिलाकर कहा जाय तो घड़ी की टिक-टिक पर भागते बच्चे सब कुछ तो कर ले रहे हैं पर अपना बचपन सही से नहीं जी पा रहे हैं।

हिस्सों में बटा है समय

बच्चों पर पढ़ाई के अलावा भी हर क्षेत्र में आगे बढ़ेन का इतना दबाव है कि जिसके कारण उनका बचपन खोता चला जा रहा है। बच्चों के पास स्कूल से आने के बाद इतना होमवर्क होता है फिर क्लोसज, ट्यूशन वगैरह। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि बच्चों को कहीं न कहीं हमारे अधूरे सपनों का बोझ भी उठाना पड़ता है। समय तो है, लेकिन कई हिस्सों मे बंटा हुआ है जिसे चाहकर भी बच्चे अपने लिए नहीं निकाल पाते। हर पल बंधन में भी नहीं रखना चाहिए कुछ समय उन्हें अपने लिए भी देना चाहिए जिससे उनकी शरारती प्रतिभा भी निखर कर सामने आए और उन्हें भी अच्छा लगे।

ये तो बदला-बदला सा बचपन था जो कि घड़ी की सुइयो पर जाकर टिक जाता है। इसलिए हर बच्चा स्वयं में स्वतंत्र होना चाहिए और अपने अच्छे गुणों के कारण अपने, अपने माता-पिता तथा अभिभावकों का नाम रोशन करना चाहिए।

प्लास्टिक मुक्त भारत-सपना या हकीकत

आइये भारत को।
प्लास्टिक मुक्त बनाये।
इस सपनें को हकीकत
की ओर ले जाये।
******
प्लास्टिक स्वास्थ्य के
लिए हानिकारक है।
इसके उपयोग के परिणाम
हृदय विदारक है।
******
खाने पीने की चीजों में
प्लास्टिक का उपयोग न करें।
और स्वयं की ज़िन्दगी
में खुशियाँ भरें।
******
जब भी बाजार जाय
कपडे का थैला लेकर जाय।
और प्लास्टिक की
थैली को करे बाय बाय।
******
सड़क पर बिखरी प्लास्टिक
को जानवर खा जाते है।
और वे फिर रोगों को
न्योता देकर आते है।
******
प्लास्टिक हमारे चारों तरफ
के बातावरण को ख़राब करती है।
कैंसर की बीमारी
इसी से पनपती है।
******
प्लास्टिक का कचरा
नालियों में चला जाता है।
और धीरे - धीरे समुंद में पहुंचकर
समुंदी जानवरों को नुकसान पहुँचता है।
******
जब प्लास्टिक मिट्टी में
मिल जाता है।
तो वो मिटटी की उर्वरक क्षमता
को खा जाता है।
******
आज लीजिये संकल्प
कि भारत को प्लास्टिक
से मुक्त बनायेंगे।
इस हेतु जागृति सारे
देश मे फैलायेंगे।
******

– डॉ. प्रताप मोहन "भारतीय"

मित्रता दिवस

हृदय रखे सब यार पुराने ......

समय सरित में डूब गए
धन वैभव के संसार सुहाने।
एक कोष अक्षुण्ण रखा बस
हृदय रखे सब यार पुराने।।

संबंधों की परिभाषा में
नहीं आकलन हुआ मित्र का।
कृष्ण - सुदामा और कर्ण के,
अनुपमेय से उस चरित्र का।
लेकिन सखा धरोहर ऐसी
मूल्य नहीं है जिसका कोई।
जब - जब विमुख हुए संबंधी
मित्रों ने ही विपदा ढोई।
सुख के उत्सव में भी आए, और दुखद
-सी हार भुलाने।।

सतयुग , त्रेता , द्वापर सब में
मिले अनूठे मित्र कथानक।
प्रारब्धों के सुफल मित्र हैं
यों ही मिलते नहीं अचानक।
राम मित्रता के पथ पर ही
केवट का अधिमान बढ़ाते ।
उधर सुदामा के चरणों पर
माधव दृग का नीर चढ़ाते।
अपने मुँह फेरे तो आएँ, वे कृष्णा का चीर
बढ़ाने ।।

मुख सम्मुख जो दोष बताते
पार्श्व प्रसंशा गुण कहते हैं।
विपदा में जो हाथ न छोड़ें
ऐसे सखा हृदय रहते हैं ।
अहो ! भाग्य ही तो है अपना
सन्मित्रों ने धीर धरा है ।
मित्रों से जीवन सुख झरता
जैसे निर्झर नीर झरा है।
सूने पतझड़ में सुमीत ही, आएं कभी बहार
लुटाने।।

- देवेन्द्र सिंह

पर्यावरण की यही पुकार...!

विकास की दौड़ में जब जंगल कट जाते हैं,
नदियों के निर्मल दर्पण धुंधले पड़ जाते हैं।
कुछ पल का लाभ भले ही सबको भाता हैं,
प्रकृति का हर आँसू भविष्य रुला जाता हैं।

धरा सिर्फ मिट्टी नहीं, जीवन की पहचान है,
हर पेड़ व नदी, हर पर्वत भारत की शान है।
प्रगति की कीमत हरियाली से चुकानी होगी,
तो आने वाली पीढ़ी की कैसी कहानी होगी?

निर्णय ऐसे हों जिनमें प्रकृति का सम्मान रहे,
विकास के हर पथ पे हरियाली का ध्यान रहे।
पहले सोचें, फिर निर्माण की राह बनाई जाए,
धरती माँ की गोद सदा हँसती-मुस्काती जाए।

सच्चा विकास वो है जो संतुलन का मान करे,
मानव के साथ-साथ 'प्रकृति' का सम्मान करे।
आओ ऐसा कल रचें, जहाँ संदेश यही हो सार,
विकास व पर्यावरण बने, एक-दूजे के आधार।

– संजय एम तराणेकर

ग़ज़लें

-1-

वो बहुत इत्मीनान रखता है।
साथ जो दिल जवान रखता है।

पूछ कर हाल आप-अपनों के,
साथ औरों का ध्यान रखता है।

चैन की नींद उसको आती है,
आँख भर जो थकान रखता है।

मानते हैं सभी कही उसकी,
पास जो सच जुबान रखता है।

शख़्स वो जोश , हौंसले वाला,
दूर, ऊँची उड़ान रखता है।

नाम से, मान से,आन से अपनी,
वो सभी पर कमान रखता है।

- 2 -

कभी जब किसी से न हारी मुहब्बत।
मज़े में रही ये हमारी मुहब्बत।

कभी मिल गए हमसफ़र रास्ते में,
कभी बस अकेले गुज़ारी मुहब्बत ।

निगाहें छुपाकर , निगाहें लगाकर,
यूँही बच-बचा कर निहारी मुहब्बत।

जहाँ पास देखा इक मौका सुनहरा,
वहाँ ठीक हमने उतारी मुहब्बत ।

बुलाकर, बताकर , मनाकर, हँसाकर,
हमेशा यूँ हमने सँवारी मुहब्बत।

जहाँ भी मिले जान पहचान वाले,
वहाँ हमने अपनी बघारी मुहब्बत।

- 3 -

रात दिन थरथराती रही सरहदें।
नींद सबकी उड़ाती रही सरहदें।

आदमी-आदमी को लड़ा सामने,
ख़ूब हँसती- हँसाती रही सरहदें।

धर्म, जाति, ज़ुबाँ ,रंग के नाम पर,
रोज़ बंटती - बंटाती रही सरहदें।

तार, काँटे,सलाखों से बनकर कहीं,
रास्ते सब मिटाती रही सरहदें।

पूछकर हाल दोनों तरफ के जुदा,
दर्द दिल में दबाती रही सरहदें।

रोज़ ऊँची हुई और गहरी हुई,
ख़ून जितना बहाती रही सरहदें।

गन गरजती रही,बम उगलती रही,
इस तरह ज़ुल्म ढाती रही सरहदें

- नवीन माथुर पंचोली

आदमी

राह में चलते हुए
भीड़ से बचते हुए आदमी
एक-दूसरे से टकराते हुए
कुछ तो जानकर भी बन जाते हैं
एक-दूसरे से अनजान

किसी पर आ जाये कोई मुसीबत
तो झट से बदल जाते हैं
लेकिन जब आती है अपने पर मुसीबत
और करना पड़ता है जब खुद को
कठिनाइयों का सामना
कोई उनका अपना जब
देता नहीं है साथ
तब अक्सर देखते हैं वो
दूसरों की राह
कोई तो कर दे मदद उनकी भी
हाथ थाम ले एक पल के लिए
जो बचा ले जिंदगी
दे जाये सुकून कुछ पल का

तब कुछ बढाते हैं आगे अपना हाथ
उनकी मदद के लिए
तो कुछ सिर्फ देखते हैं
तमाशबीन बनकर

सोचते हैं कि चलो अच्छा हुआ
उन्हें तो कुछ नहीं हुआ
वे तो सुरक्षित और सही हैं
तो क्यों अपनी जान को
डालें जोखिम में
जब आयेगी मुसीबत खुद पर
तब देखेंगे, अभी क्या करना है
इन सब में पड़कर
यही सोचते-सोचते
अचानक उसी भीड़ में
गुम हो जाते हैं।

- नमिता वैश्य

प्रकृति उपहार : खरपतवार या वरदान

प्रकृतिमेल डेस्क

मानसून के मौसम में जब ग्रामीण अंचलों, खेतों की मेढ़ों और बगीचों में हरियाली छा जाती है, तो हमारे आसपास कई ऐसे पौधे पनप उठते हैं जिन्हें हम अनजाने में केवल 'खरपतवार' मानकर उपेक्षित कर देते हैं। इन्हीं में से एक बेहद साधारण दिखने वाली किंतु औषधीय गुणों की दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान वनस्पति है—कंकावा (कंचट, कंचरा, काने झार या केना के नाम से भी जाना जाता है)

ऊपरी तौर पर देखने पर यह 60 से 90 सेंटीमीटर लंबी, नरम तथा गूदेदार तने वाली एक साधारण घास प्रतीत होती है, जिस पर खिलने वाले नीले-बैंगनी रंग के छोटे पुष्प प्रातः काल की ओस में अद्भुत सौंदर्य बिखेरते हैं। परंतु किसी दिव्य औषधि से कम नहीं।

इसकी तासीर शीतल और शामक मानी गई है, जिसके कारण यह शरीर में मुख्य रूप से पित्त और वात दोषों को संतुलित करने में सक्षम है।

आयुर्वेदीय चिकित्सा शास्त्र के अनुसार कंकावा में निम्नलिखित मूलभूत गुण निहित हैं:

रक्तपित्तशामक : शरीर की आंतरिक या बाहरी सूजन को कम करने तथा रक्त से संबंधित विकारों को नियंत्रित करने में यह अत्यंत प्रभावकारी है।

मूत्रल : यह मूत्र मार्ग की रुकावटों को दूर कर शरीर से विषैले तत्वों को बाहर निकालने में मदद करता है।

पूयरोधी : घावों को सुखाने और संक्रमण को फैलने से रोकने में इसके पत्तों का ताजा रस संजीवनी की तरह कार्य करता है। वैज्ञानिक विश्लेषणों से पता चलता है कि कंकावा के पंचांग (पत्ते, तना, फूल, जड़ व बीज) में प्रचुर मात्रा में पॉलीफेनॉल्स, फ्लेवोनोइड्स, अल्कलोइड्स, सैपोनिन और रेजिन जैसे मूल्यवान फाइटोकेमिकल्स पाए जाते हैं।

इसमें उपस्थित प्रोतोकाटेचुइक एसिड और क्वेरसेटिन जैसे यौगिक शरीर में मुक्त कणों (Free Radicals) को निष्क्रिय करते हैं, जिससे कोशिकाओं का क्षरण रुकता है और असमय बुढ़ापे के लक्षणों पर रोक लगती है।

एंटीमाइक्रोबियल एवं जीवाणुरोधी क्षमता: कंकावा के पत्तों का एथेनॉलिक अर्क कई हानिकारक जीवाणुओं (Gram-positive और Gram-negative bacteria) की वृद्धि को रोकने में सक्षम पाया गया है।

एंटी-डायबिटिक एवं साइटोटॉक्सिक प्रभाव: आधुनिक शोधों में इसके मेथेनॉलिक अर्क द्वारा रक्त शर्करा के स्तर को नियंत्रित करने तथा कैंसर कोशिकाओं की अनियंत्रित वृद्धि को सीमित करने के प्रारंभिक वैज्ञानिक प्रमाण भी सामने आए हैं।

कंकावा के विभिन्न भागों का उपयोग स्वास्थ्य की कई जटिल समस्याओं में अत्यंत लाभदायक सिद्ध होता है असंतुलित खान-पान के कारण कब्ज और अपच एक आम समस्या बन चुके हैं। कंकावा की ताजी पत्तियों की सब्जी बनाकर सेवन करने से आंतों की कार्यप्रणाली सुचारू होती है। इसमें मौजूद प्राकृतिक फाइबर पेट को साफ करते हैं।

त्वचा रोगों में कंकावा का बाह्य प्रयोग अत्यंत लाभकारी है। दाद, खाज, खुजली, एक्जिमा या (कीड़े के काटने की स्थिति में इसकी ताजी पत्तियों को पीसकर प्रभावित स्थान पर लेप लगाने से तुरंत ठंडक मिलती है, सूजन घटती है और संक्रमण तेजी से ठीक होता है।

अत्यधिक गर्मी के कारण नाक से खून बहने की समस्या होने पर कंकावा के पत्तों के ताजा रस नाक में डालने से रक्तस्त्राव तुरंत बंद हो जाता है।

आंखों में जलन, लाली या दर्द की शिकायत होने पर कंकावा लुगदी बनाकर बंद आंखों की पलकों के ऊपर रखने से आंखों की थकान और जलन शांत होती है।

यद्यपि कंकावा एक प्राकृतिक और सुरक्षित वनस्पति है, फिर भी किसी भी जड़ी-बूटी का औषधीय रूप में उपयोग करते समय कुछ बुनियादी बातों का ध्यान रखना आवश्यक है: सड़क किनारे या प्रदूषित नालियों के पास उगे पौधों का उपयोग न करें, क्योंकि वे भारी धातुओं और रसायनों को अवशोषित कर सकते हैं। हमेशा स्वच्छ स्थान से ही पौधा एकत्र करें।

गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं तथा गंभीर पुरानी बीमारियों से ग्रस्त व्यक्तियों को इसका औषधीय सेवन करने से पूर्व किसी पंजीकृत आयुर्वेदिक चिकित्सक से परामर्श अवश्य लेना चाहिए।

प्रकृति के रंग

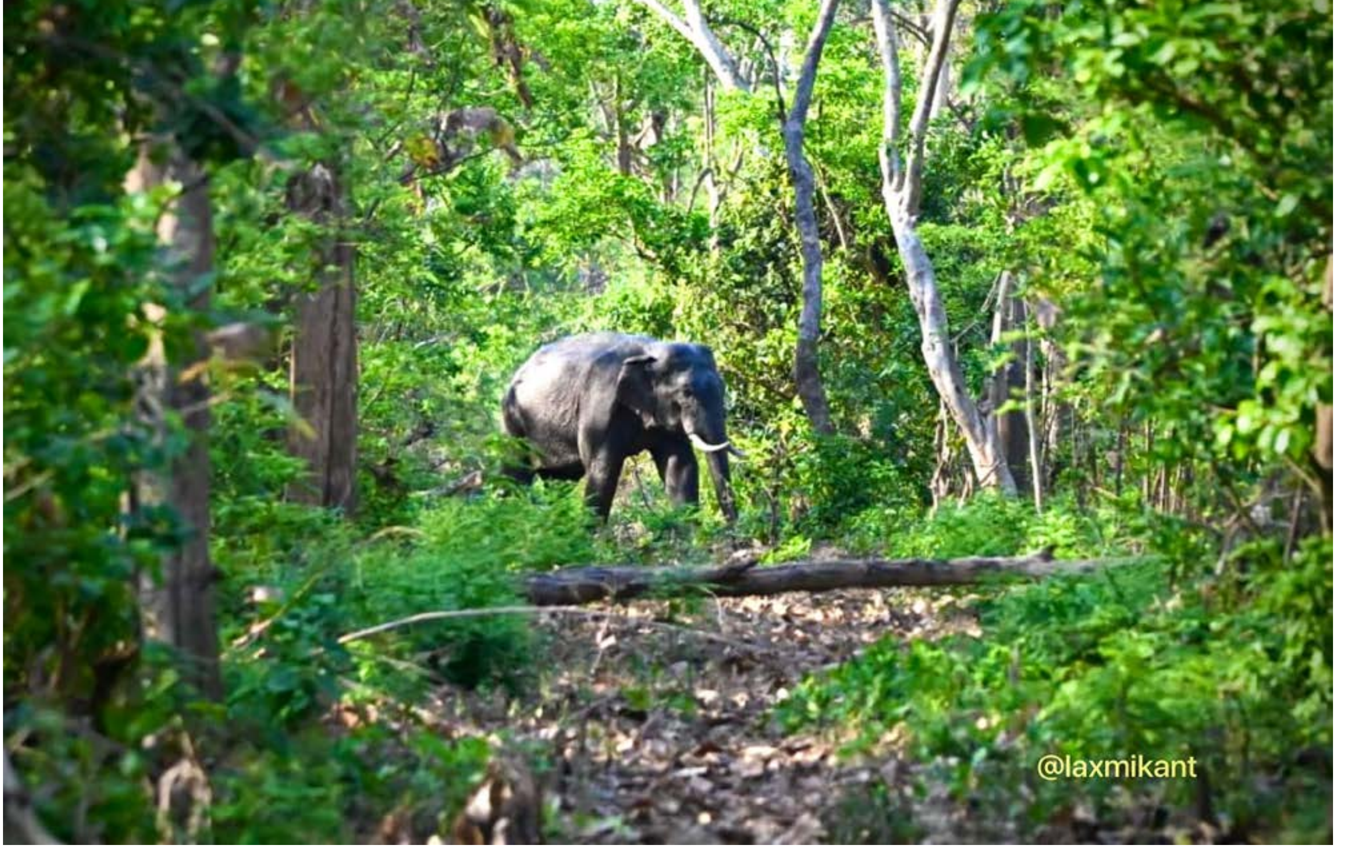

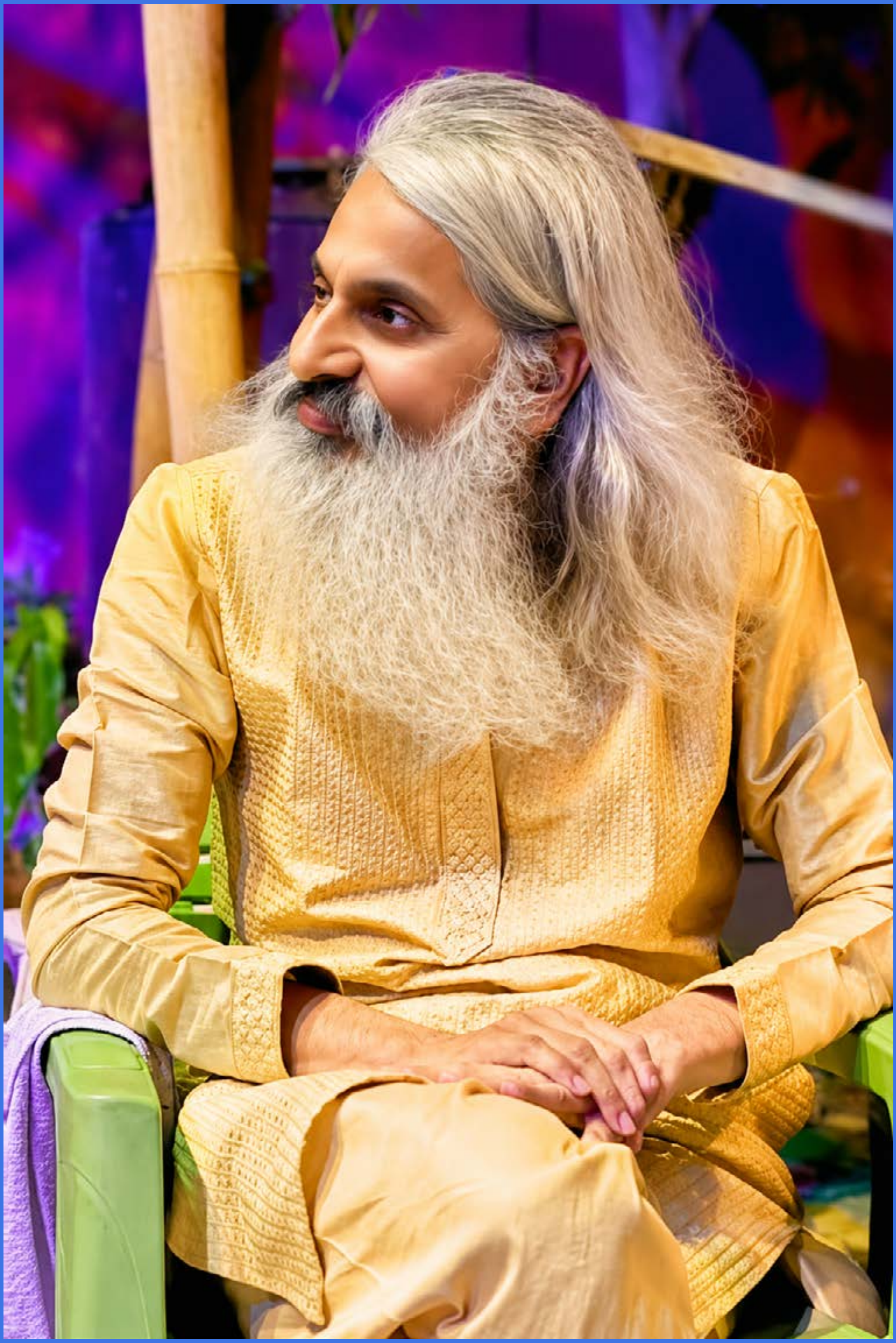

"मार्ग है, मंज़िल नहीं, मंज़िल रुक जाने की कहानी है,
प्रकृति का अस्तित्व हमेशा गतिमान रहता है जो रुकता नहीं।"
- अशोक मानव

स्थापित 1948
77 वर्षों का विश्वास
लाला जुगल किशोर
गोटे वाले
55, अमीनाबाद पार्क, लखनऊ | संपर्क : 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दे

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equipments & Spare Parts

durgaautosale2000@gmail.com 9919528830 0545-4242216

इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मछली शहर, जौनपुर, उ. प्र.।